प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी साहित्य में यौन भावना (1935-60)

(THE CONCEPT OF SEX IN HINDI SHORT STORIES OF THE POST-PREMCHAND PERIOD 1935-60)

Thesis Submitted to the
UNIVERSITY OF COCHIN

For the degree of
DOCTOR OF PHILOSOPHY

By
T. V. SUBRAMANIAN
टी. वी. सुब्रह्मण्यन

Prof. and Head of the Department
Dr. N. RAMAN NAIR

Supervising Teacher
Dr. N. RAMAN NAIR

DEPARTMENT OF HINDI
UNIVERSITY OF COCHIN,
COCHIN - 22

1985

CERTIFICATE

This is to certify that this THESIS is a bonafide record of work carried out by SRI. SUBRAMANIAN, T.V. under my supervision for Ph.D. and no part of this has hitherto been submitted for a degree in any University.

Department of Hindi,
University of Cochin,
COCHIN PIN 682022

Date : 20th August, 1985

DR.N. [illegible] NAIR
(Supervising teacher)

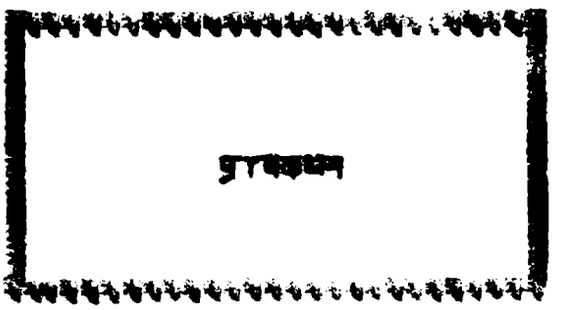

प्राक्कथन

समाज का चित्र ही साहित्य का धर्म है । साहित्य के विविध अंगों में कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक, यात्रा-विवरण, आलोचना आदि में मनोविज्ञान का विशेष योगदान रहा है । यौन-भावना तो आजकल मनोविज्ञान के सजीव अंग के रूप में वृद्धि प्राप्त कर रही है । "पिता रक्षति कौमारे भर्ता रक्षति यौवने" से यह व्यक्त है कि युवावस्था यौन जीवन का काल है और युवा-युवती को परम्परा से आबद्ध होकर सुखपूर्ण जीवन व्यतीत करने की आवश्यकता है । बीसवीं शताब्दी के इन दशकों में लोगों की जीवनदृष्टि में वेद और उपनिषत्काल से अकल्पनीय परिवर्तन आया है । लोगों के बीच अब ईश्वर में विश्वास क्षीणप्राय हो रहा है । दोनों महायुद्ध की घटनाएं लोगों के विचार और व्यवहार में बड़े परिवर्तन ला रही है । युक्ति ने विश्वास पर गहरी चोट लगायी है । दूसरे महायुद्ध पर गिरे बमों और उससे उत्पन्न लोगों की कष्टता ने उनके विश्वास की जड़ों को हिला दिया है ।

विश्वमहायुद्ध के साथ साथ विज्ञान का विविध विकास भी देखने को आया । विज्ञान की विभूतियों ने लोगों को आत्मीयता से हटाकर भौतिकता पर ला रखा । उनके बीच बढ़ती लालसता और आर्थिक वृद्धि भी

इसका कारण बना । शिक्षित स्त्री-पुरुषों के बीच आत्मविश्वास और आशा की किरणें प्रकाशित होने लगीं । मध्य-वर्ग के पढ़े-लिखे परिवार के लोग निजी वातावरण से दूर शहरों में काम के लिए जाने लगे । उनके जीवन में धीरे धीरे परिवर्तन आने लगा । यह परिवर्तन उनके परंपरागत जीवन शैली पर आघात पहुँचाया करता था । लोग धीरे-धीरे परंपरा की पकड़ से स्वतंत्र हो गए । शिक्षित मध्यवर्ग युक्ति पर जोर देने लगा । साक्षरता और विज्ञान की विभूतियों ने सदियों से जमे हुए आचारों का नाश कर दिया और एक नयी सभ्यता का बीजवपन किया । इस युग के त्रिमूर्ति मार्क्स, डार्विन और फ्रायड राजनीति, विज्ञान और मनोविज्ञान के क्षेत्र में चमत्कारपूर्ण परिवर्तन लाये । इनका प्रभाव साहित्य में अन्य क्षेत्रों के समान फैलता रहा । इस प्रकार पाश्चात्य साहित्य में विकसित प्रवृत्तियों से भारतीय साहित्य अलग न रह सका ।

समाज से निकट सम्बन्ध रखने के कारण हिन्दी साहित्य में उपर्युक्त प्रभाव दृष्टिगत हुआ और कहानी साहित्य में यह सबसे अधिक रहा । मनोविज्ञान के अन्तर्गत मानव मन का सूक्ष्म विश्लेषण होने लगा और इसकेलिए कहानी का माध्यम अनेक कहानीकारों ने स्वीकार किया । कारण यह है कि कहानी लोगों को आसानी से आकर्षित करती है । मनो-विश्लेषण के अन्तर्गत यौन-भावना को खूब प्रचार मिला, कहानी के माध्यम से यह भलीभांति पनपती रहती है ।

इस शोध-प्रबन्ध के प्रथम अध्याय में हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास, कहानी के मुख्य तत्व, आजकल की कहानियों में इन तत्वों का प्रयोग, प्रेमचन्दपूर्व कहानी का स्वरूप, दोनों महायुद्ध और विज्ञान के प्रभाव का कहानी में प्रतिफलन और प्रेमचन्दोत्तर कहानीकारों का दृष्टिकोण आदि बातों पर प्रकाश डाला गया है ।

दूसरे अध्याय में प्रेमचन्द के बाद आनेवाले प्रमुख कहानीकारों में जैनेन्द्र, भगवतीचरण वर्मा, भगवती प्रसाद वाजपेयी, चन्द्रगुप्तविद्यालंकार, इलाचन्द्र जोशी और उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानियों का यौन-भावना के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया है । इसमें कुल मिलाकर पच्चीस कहानियों का अध्ययन हुआ है ।

तीसरे अध्याय में प्रगतिवादी कहानीकार यशपाल की कहानियों को यौन-भावना के आधार पर अध्ययन केलिए चुन लिया गया है । यह सुविदित है कि यशपाल जी ने मध्यवर्ग के कथापात्रों को अधिक रुचि के साथ प्रस्तुत किया है । साथ ही साथ निम्न वर्ग के कथापात्रों का अध्ययन भी उन्होंने किया है । इस अध्याय में यशपालजी की पन्द्रह कहानियों का यौन-भावना के धरातल पर अध्ययन प्रस्तुत है । यशपाल जी ने इन कहानियों के द्वारा यह दिखाया है कि यौन-भावना अदम्य है और ब्रह्मचारी या सन्यासी भी इसके आगे निर्बल है ।

चौथे अध्याय में "अज्ञेय" की आठ कहानियाँ ली गयी हैं । अज्ञेय के पात्रों से यह विदित है कि वे कहीं कहीं परिस्थिति के अनुकूल दबे रहते हैं । अज्ञेय मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति के कहानीकार हैं । उनकी कहानियों का मूल धरातल व्यक्ति चरित्र है । उन्होंने केवल व्यक्तिगत पहलु को मुख्य केन्द्र बनाकर अपनी कहानियाँ लिखी हैं । उनकी कहानियों में राजनीति, प्रेम, घृणा, विद्रोह आदि भाव प्रकट हुए हैं । यहाँ यौन-भावना के आधार पर उनकी कहानियों के अध्ययन का प्रयास किया गया है ।

पाँचवें अध्याय में मोहन राकेश, राजेन्द्रयादव और कमलेश्वर की कहानियों का यौन-भावना के आधार पर अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास है

इसमें इन तीनों कहानीकारों की बारह कहानियाँ चुन ली गई है । मोहन राकेश की कहानियों में नारियों के साथ सहानुभूति दर्शनीय है । उनके पात्र संयमशील और आदर्शवान होते हैं । राजेन्द्रयादव की कहानियों में यौन-भावना का नैतिक रूप मिलता है, पात्र संस्कृति और परंपरा के विरोधी है और परिस्थिति का उपज है । कमलेश्वर की कहानियों में सामाजिक समस्याओं और यौन समस्याओं का सूक्ष्म अंकन हुआ है । उनके स्त्री और पुरुष पात्र स्वतंत्र व्यक्तित्व लेकर आते हैं ।

व्यक्ति अपनी कामतृप्ति प्राय: पाँच प्रकार से करते हैं । हस्तमैथुन, स्वप्नदोष, विषमलैंगिक संपर्क, समलैंगिक संपर्क, पशुसंपर्क आदि से विषमलैंगिक संपर्क के तीन उपवर्ग-विवाहपूर्व काम सम्बन्ध, वैवाहिक काम संबंध और विवाहेतर काम सम्बन्ध - इन तीनों उपभेदों के अन्तर ही हमारी ६० से ८० की सारी कहानियाँ आयी हुई है ।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का कार्यान्वयन कोचीन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष गुरुवर डॉ॰ एन॰ रामन् नायर जी के निर्देश में सम्पन्न हुआ है । उनकी प्रेरणा एवं समयानुकूल निर्देश मुझे विशेष रूप से सहायक रहा है आधुनिक हिन्दी साहित्य के विशेषज्ञ डॉ॰ रामन नायर जी की आलोचना दृष्टि कहानी के प्रति मेरी अभिरुचि बढाने में प्रेरणाप्रद रही है । मैं इस अवसर पर उनके चरणों पर अपनी कृतज्ञता के फूल चढ़ा रहा हूँ ।

विभाग के गुरुवर प्रोफसर डॉ॰ वी॰डी॰ कृष्णन के प्रति भी मैं आभारी हूँ । वे मुझे समय समय पर आवश्यक निर्देश देते रहे हैं । विभाग के अन्य गुरुजनों और हितैषियों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ जिनसे मुझे प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सहायता मिली है । विभागीय वाचनालय की अध्यक्षा के प्रति भी मैं विशेष कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस कार्य में मेरी मदद की है ।

कोचीन विश्वविद्यालय के अधिकारियों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ । टंकन यंत्र की त्रुटियों के लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ ।

कोचीन,
31 जुलाई 1985

टी॰डी॰ सुब्रह्मण्यन

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

अध्याय - एक ... ... 1 - 33

प्रस्तावना

यौन - योनि से सम्बन्धित - यौन-भावना का मूल काम की प्रवृत्ति - काम एक जीवन दायिनी शक्ति - साहित्य में काम का प्रभाव- वेदों में काम का महत्त्वगान - काम के उपभोग का धर्मसम्मतमार्ग विवाह - अनुचित कामाचार का उदाहरण - ऋग्वेद में यम-यमी संवाद - बाइबिल के ओल्ड टेस्टमेंट में मोआबाइट और अम्मोनाइट नामक जाति की व्युत्पत्ति - आधुनिक युग में फ्रायड - काम की व्याख्या - कामतुष्टि के पाँच प्रकार - विपरीतलिंगी संपर्क के तीन उपवर्ग - कहानी का आविर्भाव - कहानी एक छोटी सी घटना का वर्णन - कहानी गद्य साहित्य का सुगम रूप - प्रेमचन्द काल की कहानी - प्रेमचन्दोत्तर कहानी - यथार्थजीवन का नग्न वर्णन एवं मन मस्तिष्क का विश्लेषण - कहानी के मुख्य तत्त्व - प्रेम को उपन्यास की मूल प्रेरणा के रूप में स्वीकृति- कहानी में यौन-विकृति का वर्णन -

पृष्ठ संख्या

वैज्ञानिक युग के कथाकारों में मार्क्स - डार्विन, फ्रायड की विचारधारा का प्रभाव - नगरीकरण, वैज्ञानिकता बौद्धिकता प्रजातांत्रिक व्यवस्था, शिक्षा की सुविधा - अन्धविश्वास का नाश - नैतिक मूल्यों की चुनौती - यौन-भावना का प्रभाव प्रेमचन्दोत्तर कहानी पर ।

अध्याय - दो 34 - 101

यौन-भावना के आधार पर जैनेन्द्रकुमार, भगवतीचरण वर्मा, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, चन्द्रगुप्तविद्यालंकार, इलाचन्द्र जोशी उपेन्द्रनाथ अश्क आदि कहानीकारों की कहानियों का अध्ययन ।

1. जैनेन्द्र की कहानियाँ - दृष्टिदोष, बीएट्रिस, एक रात, अविज्ञान, ग्रामफोन का रिकार्ड - कहानियों का कथ्य और समीक्षा -
2. भगवतीचरणवर्मा की कहानियाँ - सिलाबन का नाक, एक विचित्र चक्कर, दो रातें, एक अनुभव, राख और चिनगारी - कहानियों का कथ्य और समीक्षा -

पृष्ठ-संख्या

3· भगवतीप्रसाद वाजपेयी की कहानियाँ – मालकिन की मुर्गी, जहाँ सभ्यता साँस लेती है, दुःखभाग, उतारचढ़ाव, बधाई – कहानियों का कथ्य और समीक्षा –

4· चन्द्रगुप्तविद्यालंकार की कहानियाँ – वोट, भय का राज्य – कहानियों का कथ्य और समीक्षा –

5· इलाचन्द्र जोशी की कहानियाँ – क्रय-विक्रय, पतिव्रता या पिशाची, चरणों की दासी–कहानियों का कथ्य और समीक्षा –

6· उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानियाँ – चट्टान, वह मेरी मंगेतर थी, नन्हिया, पाप का आरंभ, बेबसी, जुदाई की शाम का गीत – कहानियों का कथ्य और समीक्षा– इस अध्याय की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन ।

अध्याय – तीन ... 102 – 136

यौन-भावना के आधार पर यशपाल की कहानियों का अध्ययन

यशपाल भौतिकवादी कहानीकार –

कहानियों में भौतिकता का प्रभाव –

पृष्ठ-संख्या

उनकी कहानियाँ - तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ, प्रतिष्ठा का बोझ - धर्मरक्षा, परदा, दर्पण, मोटरवाली कोयलेवाली, ज्ञान, पराया सुख, जहाँ हसद नहीं, पाँव तले की डाल, जादू का चाबुक, माया, निर्वासिता, अपनी चीज़, दूसरी नाक - कहानियों का कथ्य और समीक्षा - कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन ।

अध्याय - चार 137 - 197

यौन-भावना के आधार पर अज्ञेय की कहानियों का अध्ययन

अज्ञेय मनोवैज्ञानिक कहानीकार - मनुष्य के आन्तरिक भावों का अध्ययन - क्रान्ति का विश्लेषण - उनकी आठ कहानियाँ - मनसो, सिगनेलर, अछूते फूल, नीली हँसी, हारिति, पठार का धीरज, वे दूसरे, मेजर चौधरी की वापसी - कहानियों का कथ्य और समीक्षा - कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन ।

पृष्ठ-संख्या

अध्याय - पाँच ... 158 - 186

यौन-भावना के आधार पर मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव और कमलेश्वर की कहानियों का अध्ययन

1. मोहन राकेश की कहानियाँ - उर्मिल जीवन, वासना की छाया में, एक और जिन्दगी, गुनाहे बेलज्जत - कहानियों का कथ्य और समीक्षा ।
2. राजेन्द्रयादव की कहानियाँ - प्रतीक्षा, मीराजना, अन्धा शिल्पी और आँखोंवाली राजकुमारी - कहानियों का कथ्य और समीक्षा ।
3. कमलेश्वर की कहानियाँ - तलाश, राजानिरबंसिया, माँस का दरिया, बयान, रातें, कहानियों का कथ्य और समीक्षा - इस अध्याय की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन ।

उपसंहार 187 - 199

संदर्भ ग्रन्थों की सूची 200 - 212

पहला अध्याय

प्रस्तावना

पहला अध्याय

प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी साहित्य में यौन भावना (1935-1960)

काम एक जीवनदायिनी शक्ति है जिससे समस्त प्राणीजगत अनुप्राणित है। मनुष्य की एकताएं काम के द्वारा ही संचालित होती हैं। काम के सन्तुलित सेवन में ही जीवन की सफलता निहित है। काम ही आदुत्पत्ति का मूल कारण है। यह स्त्री पुरुष को एकत्व में आबद्ध कर परिवार की नींव डालता है। यह साहित्य का मूलाधार है। भारतीय मनीषियों ने इसकी प्रभुसत्ता देखी थी। इसका शास्त्रीय विवेचन करके काम-शास्त्रीय ग्रन्थों का निर्माण किया जिनमें वात्स्यायन का कामसूत्र बहुत प्रसिद्ध है।

साहित्य में काम या प्रेम के विभिन्न रूपों की सृष्टि स्वाभाविक है। हिन्दी साहित्य भी इसका अपवाद नहीं। मनुष्य के भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति के लिए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का सन्तुलित सेवन भारतीय विचारधारा का प्रमुख सिद्धान्त रहा है। काम को हेय और अवांछनीय घोषित करना भारतीय विचारकों को सम्मत नहीं था।

कामशास्त्र की परंपराब्रह्मा के संविधान से ही चल पड़ी और नन्दिकेश्वर, श्वेतकेतु, गोनर्दीय, गोणिकापुत्र, दत्तक, वात्स्यायन कल्याणमल्ल ज्योतिरीश्वर, पद्मश्री, जयदेव आदि आचार्यों ने इसे अलंकृत बनाया । नाट्यशास्त्र के आद्यप्रणेता भरतमुनि ने वात्स्यायन का ऋण स्वीकार किया है । भरत तथा अन्य रसाचार्यों ने शृंगार रस के उपादानों को कामसूत्र से ग्रहण किया है ।

काम एक अपराजेय शक्ति है जिसका सम्बन्ध एक ओर जैवकीय तत्व से और दूसरी ओर मनोवैज्ञानिक तत्व से । वेदों, पुराणों, उपनिषदों और धर्मग्रन्थों में काम एक महत्वपूर्ण अंग रहा है ।

वेदों में कामतत्व

ऋग्वेद के नासदीयसूक्त में काम के आविर्भाव का वर्णन मिलता है । जगदुत्पत्ति के पूर्व सत्-असत् रज-व्योम आकाश-आकाश, मृत्यु-अमृत, रात-दिन आदि द्वन्द्वों का अभाव था[1] । उस समय एक अद्वितीय निर्द्वन्द्व तत्व विद्यमान था । उस अज तथा अव्यय पुरुष में सृष्टि के सर्जन की कामना हुई और जगत का मूल द्वन्द्वतम और तेज उत्पन्न हुआ[2] । यह कामना मन के रेत में हुई । मन एवं रेत का यह द्वन्द्व नित्य सम्बन्ध है । जिस रेत में भावी प्रजा का बीज होता है, वह आदि पुरुष के मन में स्थित था ।

---

1. नासदासीन्नोसदासीत्तदानी नासीद्रजोनोव्योमा परो यत् ।
किमावरीवः कुह कस्य शर्मन् अम्भः किमासीद्गहनंगभीरम् ।।
ऋग्वेद - 10·129·1·

2. तम आसीत्तममागूह नग्रे प्रकेतं सलिलं सर्व मा इदम ।।
ऋग्वेद - 10·129·3·

जब वह जागृत हुआ उसमें सर्वप्रथम काम का आविर्भाव हुआ[1]। यही काम प्रजनन के उद्देश्य से पुरुष को स्त्री समागम के लिए प्रेरित करता है।

काम के सन्तुलित उपभोग का धर्मसम्मत मार्ग विवाह है। विवाह की सफलता पुत्र प्राप्ति में निहित है, अतः प्रजानिर्माण की शक्ति से युक्त वीर्य प्राप्त करा देने की, गर्भरक्षा और सुख प्रसव की प्रार्थना ऋग्वेद में की गई है।

अथर्ववेद

काम ही देवों तथा मर्त्यों का अग्रज है, वही ज्येष्ठ है, वह आकाश, पृथ्वी, जल, तथा अग्नि से भी व्यापक है। अतः हम ज्येष्ठ काम की वन्दना करते हैं[2]। मनुष्य के तन-मन को जलानेवाली कामाग्नि बलवती और अदम्य है[3]।

ों में कामतत्त्व

जगदुत्पत्ति तथा प्रजोत्पत्ति का मूल कारण है काम। ों में कहा गया है कि उस एकमेवाद्वितीय आदि पुरुष की अनेक रूपों में होने की कामना के रूप में यह प्रकट होता है। आत्मन् के विभाजित पति एवं पत्नी का उद्भव हुआ अतः पति और पत्नी एक ही "स्व" हैं[4]।

तद्ग्रे समवर्तताधि मनसो रेतः प्रथमं यदासीत्।
सतो बन्धुमसति निरविन्दन् हृदि प्रतीष्या कवयो मनीषा ।। ऋग्वेद 10·129·4·
शिवास्ते स्तन्वः काम भद्रायाभिः सत्यं भवति यद्वृणीषे । अथर्व·9·2·25
र:क्रः:परिभूरदाभ्यस्तेभ्यो हुतमस्त्वेतद् । अथर्व· 3·21·4·
ावान यथा स्त्रीपुमांसौ सम्परिष्वक्तौ स इममेवात्मानं
द्वेधापातयत्ततः पतिश्च
पत्नी चाभवतां तस्मादिदमर्धबृगलमिव स्व इति ह स्माह याज्ञवल्क्यः ।
बृहदारण्यकोपनिषद· अध्याय – 1·ब्राह्मण 4,3·

विवाह एक धार्मिक संस्कार है, मैथुन की सुविधा केलिए की गई समझौता मात्र नहीं । यह एक यज्ञ है, जिसका अर्थ है दो शरीरों हृदयों और आत्माओं का मिलन ।

मनुस्मृति में काम तत्व

मनु काम को सर्वथा हेय नहीं मानते, मनुष्य जाति की परंपरा को अटूट बनाये रखने केलिए इसका महत्व वे स्वीकार करते हैं । पर विवाह के द्वारा ही धर्मानुकूल कामोपभोग सम्भव है ।

रामायण, महाभारत, बाइबिल आदि धर्मग्रन्थों में भी काम का विशद विवरण मिलता है । रामायण नीति-ग्रन्थ कहा जाता है । इसमें ऐसा विवरण बहुत कम है । हमारे ऋषि सर्वव्यापी काम की अकथ गरिमा जानते थे और उसका सन्तुलित उपभोग करने के पक्ष में थे । उन्होंने अनुचित कामाचार को निषिद्ध माना है । ऋग्वेद का "यम-यमी संवाद" इसका प्रमाण है । काम विह्वल यमी अपने भाई यम को संभोग केलिए प्रेरित करती है पर यमी भाई बहिन के समागम को अनुचित मानकर उसका प्रस्ताव अस्वीकार करता है और उसे किसी अन्य पुरुष की ओर प्रवृत्त होने की सलाह देता है[1]।

बाइबिल के ओल्ड टेस्टमेंट में इस प्रकार अनुचित कामाचार का अनेक उदाहरण देखा जाता है । लोट ( ) नामक कथापात्र की दो पुत्रियाँ अपने पिता के संपर्क में माता बनती हैं । मोआबाइट और अम्मोनाइट नामक जाति लोट और दो पुत्रियों से उत्पन्न मोब ( ) और अम्मोन)

---

1. अन्यमू षु त्वं यम्यन्य उ त्वां परिष्वजाते लिबुजेव वृक्षम् ।

ऋग्वेद 10·10·14

के वंशज है[1]। लाबन की दो पुत्रियों में छोटी बेटी रेचल बहुत सुन्दरी थी। जेकब नामक युवक उससे प्यार करता था। लेकिन रेचल के पिता ने बड़ी बेटी लिया से उसकी शादी करा दी। अगले दिन सत्य बाहर आने पर, एक सप्ताह के बाद रेचल को भी शादी कराके उसे देने का वचन दिया[2]।

---

1. But Lot left Segor, and went upto live in the hills, taking his two daughters with him, he was afraid to live at Segor, and took of his abode in a cave. There his two daughters dwelt with him, and the elder of these said to the younger, out father grows old, and as for as, there is no one in the land to mate withus, after the wont of human kind. Why then, let us give him wine and make him drunk and so sleep with him to preserve our fathers osterity. So that night they gave the father wine to drink and the elder went in and slept with her father, lying down beside him and rising up with out his knowledge. And next day, the elder said to the younger, last night it was I that slept with our father, le us give him wine again to night, and then shalt sleep with him, to preserv our fathers posterity. So that night too they gave their father wine to drink and the ounger went in and slept with him, and still he knew nothing of it when she laydown or when she rose up. Thus the two daughters of Lot were got with child bytheir father, and the elder bore a son whom she called Moat the ancestor of the Moabite race that still survives, the younger too had a son, whom she called Ammon as if she would say Benammi, the son of my people, his descendants still survive as the Ammonites.
   The Holy Bible - Knox version Flight of Lot, Origin of Moab and Ammon - p.15, Sentences 30-38

2. Labon had two daughters, Rachel was the younger and her elder sister was called Lia. But Lia was dull eye, where as Rachel had beauty both of form and face and on her Jacob's love had fallen.

   So Labon invited a great company of his friends to the wedding feast, but that night he matched Jacob with his daught Lia instead, giving her a maidcalled Lelpha to wait on her. So with all due ceremony Jacob took her to his bed, and it was not till morning he found out that it was Lia. Where upon he said to Labon, what meanst thou, Did not I work for thee towin Rachel, what is this trickthou hast played on me, And Laban answered, it is not the custom of our country to wed our younger daughters first. Celebrate this wedding of thine for a full week and I will give thee Rachel too, and thou shalt work for me another seven years to earn her. To this Jacob agreed and thanthe week was over he made Rachel his wife Lia waiting maid her father gave to Rachelwas calld Bala'.

   The Holy Bible-Knox version - The Book of Genesis, p.21 Sentences 22-29

इस प्रकार जुडा के पुत्र हेर की मृत्यु के बाद उसकी पत्नी तामर से दूसरा पुत्र ओनान ने पति का कार्य करने की आज्ञा स्वीकार की[1]। डेविड के पुत्र अबसालाम की बहिन टामर से डेविड के दूसरे पुत्र अमनन अपने मित्र जोनादाब की सहायता से शादी किए बिना पत्नी का सा व्यवहार करता है[2]।

---

1. 'Juda found for hiseldest son, Her, a wife whose name was Thamar, but this first born son of his was a sinner, and God saw it and cut him of in his prime. Where upon Juda bade his son, Onan mate with the widow, and doe husband's duty by her, so as to beget childern in his brothers name, but On who knew that they would not be reckoned as his, frustrated the act of marriage when he mated with her, sooner than see sons, in his brothers name. Him, too, for this abominable deed of his, the Lord punished with death'.

   The Holy Bible - Knox version - The book of genesis, p.35 sentences 5-10

2. 'A maid there was of rare beauty, called Tamar, sister to David's son Absalom, and it befell at this time that another of David's son, Amnon fell in love with er. Such was longin that he pined away wanting her, how should he approach a maid unwed, to compass her dishounour? But he had a freind Jonadab, son to semmaa, that was David's brother, a man of shrewd with that expostulated with him, should a royal prince pine away, day in, day out and not tell the reason?
   Then Amnon told him, I am in love with my brother Absalom's sister, Tamar.

   Lie down ontrybed, Jobadab told him and feign illnes then when thy father visits thee, ask him to let thy sister Tamar, came and tent thy wants; cook some dainty for thee, and give it thee with her own hand. So amnon lay down and feigned to fall sick and said to the king when he came to visit him, Pray send my sister Tamar to boil me two mouth feels of gruel, here in my presence and give them me with h own hand. So David sent word to Tamar's home bidding her go her brother Amnon's house, she went to find lying abed. S took the flour and stirred it and boiled it, and when her cooking was done, she poured it out and put it down beside but refused to eat. The Amnon would have all that were th leaves his presence and whenall had left him he bade her c into his room and give it to him with her own hand. So Ta the gruel and brought it into her brother Amnon's room, but she held it out he caught hold of hissister and would have with him. Nay, brother, said she, do not force me to thy in all Isreal that were deemed grat wrong. For bear thy r lessness; else can I never shew my face, and all Israel wi out on thy reckless folly. Ask me of the king for thy bri will not deny thee. But Amnon would not listen to her; he her to his will and so bedded her.'
   The Holy Bible - Knox Version - The second book of kings,

वात्स्यायन का कामसूत्र पूर्ववर्ती और परवर्ती कामशास्त्रीय ग्रन्थों के बीच एक ऐसी कड़ी है जिससे कामशास्त्र की परंपरा के विकास का पूरा आभास मिल जाता है । कामशास्त्र की परंपरा पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट होता है कि उसका उद्गम धर्म के साथ ही हुआ । काम शरीर स्थिति का भी हेतु है । शरीर स्थिति के लिए जैसे आहार की आवश्यकता होती है वैसे ही काम की भी[1] । कामानन्द मनुष्य के मन तथा आत्मा से सम्बद्ध है । कर्ण, त्वचा, चक्षु, जिह्वा और घ्राण इन्द्रियों से जब शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध संयुक्त हो जाते हैं तब मन में कामोत्पत्ति होती है । काम का पूरा विषय वास्तव में कितना गूढ़ एवं इसका क्षेत्र कितना विशाल है, यह इसी से प्रगट होता है कि प्राचीन मनीषियों ने इसकी तुलना समुद्र से की थी[2] ।

फ्रायड ने "काम" को व्यापक सन्दर्भ और अर्थ प्रदान किया[3] । ए.सी. किंज़े के शब्दों में काम सम्बन्धों के यथार्थ ज्ञान के शारीरिक सन्दर्भ में इसलिए यह जान लेना भी उपयोगी होगा कि व्यक्ति अपनी कामतुष्टि प्राय: निम्न पाँच प्रकार से करते हैं - हस्तमैथुन, स्वप्नदोष, विषमलैंगिक संपर्क, समलैंगिक संपर्क, पशुसंभोग आदि[4] ।

---

1. शरीरस्थिति हेतुत्वादाहारस्य धर्मणो हि कामा: कामसूत्र. 1.2.37.
2. समुद्र इव हि काम: नैवहि कामस्यान्तो स्ति न समुद्रस्य । तैत्तरीयब्राह्मण. २.२.
3. Freud uses the word 'sex' in a very [illegible] 5.6.
   He includes in it not only specifically sexual interests and activities, but the whole love life - it might almost be said, the whole pleasure life - of human beeing - Edna Heidbr Seven Psycholigists, p.309
4. The six chaif sources of orgasm for the human male (and femal are master bation, nocturnal emissions, hetrosexual petting, hetrosexual intercourse, homosexual relations and intercourse animals'

   A.C. Kinsey and others - Sexual behaviour in human male, p.193

विषमलैंगिक संपर्क को तीन उपवर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है-विवाहपूर्व काम सम्बन्ध, वैवाहिक काम सम्बन्ध, विवाहेतर काम सम्बन्ध ।

डॉ॰ प्रमीला कपूर के शब्दों में स्त्री-पुरुष के बीच काम सम्बन्धों के दो मुख्य प्रयोजन संतानोत्पत्ति एवं आनन्द प्राप्ति बताए जाते हैं[1]।

आधुनिक काल में आकर साहित्यकारों ने इस अकुण्ठ काम को अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है । कहानी, उपन्यास, कविता, नाटक आदि विभिन्न साहित्यांगों में यह भावना प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में मिलती है ।

प्रेमचन्दजी ग्रामीण जीवन के सबसे बड़े लेखक थे । उनके मरने के बाद बहुत से अच्छे साहित्यकार आये तो भी प्रेमचन्दजी के समान ग्रामीण जीवन को चित्रण करनेवाले विरले ही मिले । उनकी रचनाओं में विशेषकर कहानियों में समाज की उन तमाम समस्याओं का आधार प्राप्त है जो आज की परिस्थिति में केवल स्थूल और अर्थहीन है । यौन [सेक्स] प्रेम और जीवन की अन्य गहरी समस्याओं पर कहानीकारों का ध्यान गया नहीं था । प्रेमचन्द युगीन कहानियों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण है । पश्चिम की औद्योगिक क्रान्ति के साथ-साथ सामान्य जीवन की सुख-सुविधाओं के अनेक साधनों का अन्वेषण हुआ । विश्वयुद्ध से पीड़ित जनता के नए अनुभवों का चित्रण उस काल की कहानी में नहीं मिलता था ।

---

1. Sex for human beings has two major function - one is reproduc and the other is pleasure. Sex as a biological necessity for preserving the specie has always been upheld by all at all times and in all places as highly desirable. But its pursuit f the gratification of senses alone has beena subject of social and ethical controversy.

   - Dr. Promilla Kapur - Love, marriage and sex, p.162

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उद्योग-धन्धों और वाणिज्य के क्षेत्र में भारतीय पूँजीपतियों ने प्रवेश किया और पूँजीवाद के जन्म के साथ साथ सामन्तवाद का अन्त भी हुआ । अँग्रेज़ी साम्राज्यवाद की नींव को सुदृढ करने के लिए खोले गए स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों ने वकील, डाक्टर, अध्यापक, राजकीय शासक जैसे शिक्षित मध्यवर्ग को पैदा किया । भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस का आन्दोलन भी मध्यवर्गीय आन्दोलन ही माना जाता है । राष्ट्रीयता का संग्राम किसानों मज़दूरों से हटकर अधिकांशिक मध्यवर्ग के हाथों में आकर सिमट गया और मध्यवर्ग अपने स्वार्थों की रक्षा के लिए सतर्क हो गया ।

मध्यवर्गीय जीवन के सम्बन्ध में रचनाओं की मात्रा बढने लगी, इसका सामाजिक कारण था । मध्यवर्ग की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ । लोग सरकारी नौकरियों में जाने लगे, उनके घरों में निम्न मध्यवर्ग की अपेक्षा अधिक आर्थिक दृढता और सभ्यता आयी । दिन-पर-दिन शक्तिशाली होते जाते इस वर्ग की उपेक्षा कलाकार न कर सकते थे । प्रेमचन्द युग के और प्रेमचन्दोत्तर युग के अधिकांश कलाकार इस मध्यवर्ग से आनेवाले थे, वे अपने वर्ग की समस्याओं से परिचित थे और उन्हीं का चित्रण करने लगे ।

बीसवीं सदी के दूसरे और तीसरे दशक तक मध्य वर्ग विचारों में अधिकांशिक राजनीतिक था, धीरे-धीरे आर्थिक और सामाजिक स्थिति के दृढ होने से वह राजनीति से दूर होकर अपनी मानसिक तुष्टि मनोविज्ञान, अध्ययन और सांस्कृतिक विषयों में ढूँढने लगा । अपनी अतृप्त आकांक्षाओं का वह दूसरा समाधान खोजने लगा और कभी वह मूलप्रवृत्तियों की स्वतन्त्रता का प्रतिपादन करने लगा, कभी मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन द्वारा मन की ग्रन्थियों को सुलझाने में संलग्न दिखायी पड़ा । उसकी एक और स्थिति हुई

वह थी अत्यधिक वैयक्तिकता । प्रेमचन्द के उपन्यासों की स्वस्थ परंपरा यहाँ आकर लुप्त हो गयी और हिन्दी उपन्यास ने एक नया मोड लिया ।"[1]

सामाजिक स्थिति में परिवर्तन के कारण साहित्य में भी परिवर्तन हुआ । मध्यवर्ग यथार्थ संघर्ष को भूलकर यौन समस्याओं की अधिकता से चर्चा करने लगे । इस परिवर्तन पर शरद्चन्द्र का और योरोपीय साहित्य का प्रभाव भी पाया जाता है । शरद के अनुकरण पर ही नारी का आदर्श बदला और यौन वृत्ति की बारीकियों का उद्घाटन होने लगा । योरोपीय साहित्य में एक ओर फ्रायड का प्रभाव पड़ा । फ्रायड ने मनुष्य को व्यक्ति रूप में परिकल्पित करके उपचेतन और अचेतन मन की ग्रन्थियों को सुलझाने का प्रयास किया । दूसरी ओर मार्क्स की विचारधारा का प्रभाव भी हुआ । मार्क्स ने साहित्य को वर्ग-संघर्ष की दृष्टि से देखा था ।

प्रेमचन्द्र युग की शैली इतिवृत्तात्मक और बहिर्मुख थी, अन्तर्वृत्ति निरूपण की शैली उस समय नहीं पाती थी । पर आगे चलकर अन्तर्वृत्ति निरूपण की शैली प्रमुखता पा गयी । मन का विश्लेषण करके लिखने की प्रवृत्ति जैनेन्द्रकुमार, अज्ञेय और इलाचन्द्र जोशी में विकसित हुई । इसके साथ ही भगवती प्रसाद वाजपेयी, भगवतीचरण वर्मा और यशपाल का उदय हुआ ।

यशपाल की रचनाओं का अध्ययन करने पर यह देखा जा सकता है कि उन्होंने साहित्य की प्रेरणा किसानों मज़दूरों के जनजीवन से न लेकर मध्यवर्ग से ली; और मध्यवर्ग की स्थिति में परिवर्तन आने के अनुसार उनकी रचनाओं पर भी परिवर्तन होता गया । आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से युद्ध के बाद मध्यवर्ग की स्थिति गिरती रही, वस्तुओं का मूल्य आसमान छु रहा था

---

1. बच्चनसिंह - मध्यवर्गीय वस्तु तत्व का विकास - आलोचना - अक्तूबर 1954

और उनके अभाव में जीवन के हर क्षेत्र में घोरबाजारी और घूसखोरी को प्रश्रय दिया और अन्य देशों की तरह इस देश में भी युद्धोत्तर काल चारित्रिक पतन का काल था । इस सामाजिक ह्रास के कारण अश्लीलता की बाढ़ सबसे अधिक बढ़ी, जो इस मात्रा में और कभी न हुई थी और यह अश्लीलता उस समय की सभी रचनाओं में किसी न किसी रूप में आयी । यशपाल की रचनाओं में आधोपान्त दो समानान्तर प्रवृत्तियाँ प्रायडवादी और समाजवादी, अपनी वैयक्तिक रुचि के साथ वर्तमान है । दोनों को उन्होंने कहीं एक में गुम्फित किया है और कहीं अलग-अलग ।

वैज्ञानिक युग के कारण प्रखर बौद्धिकता की दृष्टि व्यक्ति को मिल गयी । पाप-पुण्य के सारे मूल्य निरर्थक साबित हो गए । आस-पास के परिवेश में अन्तर हो गया । बढ़ते हुए शहरों ने व्यक्ति को अजनबी बना दिया, इस अजनबी शहर में व्यक्ति कुछ भी करने को स्वतंत्र हो गया । नाते-रिश्ते के लोगों से औपचारिकता के स्तर तक ही सम्बन्ध आने लगा । स्त्रियों को आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त हो गयी और सबसे बढ़कर विशेष परिवर्तन यह हो गया कि ऐसे व्यक्तियों-स्त्रियों-पुरुषों को सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होने लगी । सामाजिक भय का पूर्णत: लोप हो गया । इस सामाजिक भय के कारण ही कई जीवन-मूल्य टिके हुए थे । शहरों में यह समाप्त प्राय हो गया । नये वैज्ञानिक साधनों ने संभोग को केवल आनन्द के स्तर पर ला रखा । संभोग और सन्तति का सम्बन्ध कटते जाना इस युग की सबसे बड़ी क्रान्तिकारी घटना है । इस सम्बन्ध के कट जाने के कारण सभी नैतिक मूल्यों की होली हो गयी । यौन सम्बन्धों का मार्ग जो अब पति-पत्नी तक ही सीमित था, विस्तृत और व्यापक हो गया । विज्ञान ने इसे शरीर की एक आवश्यक भूख साबित कर दी और फ्रायड ने इसकी अतृप्ति अथवा दमन को अनेक मानसिक रोगों के कारण के रूप में साबित किया ।

कहानी के बदलते स्वरूप

आज से करीब छः सात दशक पहले हिन्दी कहानी शैशव की अवस्था में थी । चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, जयशंकर प्रसाद और प्रेमचन्द ने कहानी को समृद्ध करने का श्री गणेश किया ।

कथा का अर्थ है "जो कहा जाय" । कहानी के लिए कथा, आख्यायिका, गाथा, आख्या आदि का प्रयोग होता है । अमरकोश में इसकेलिए कल्पना तत्व को आवश्यक कहा गया है । भामह, पाणिनी और आनन्दवर्धन ने कथा के बारे में अपना मत प्रकट किया है । भामह के अनुसार काव्य के पाँच भेदों में आख्यायिका और कथा को लेकर आख्यायिका की व्याख्या में लिखा है कि "आख्यायिका में प्रकरण की आकुलता नहीं होती, उसमें श्रव्य शब्द, अर्थ तथा पद होते हैं, गद्य का प्रयोग होता है, उसका अर्थ उदात्त होता है तथा उसमें उच्छ्वास होता है ।" पाणिनी के अनुसार व्याख्या का अर्थ कहना, सूचना देना, वर्णन करना आदि है । आनन्दवर्धन ने आख्यायिका तथा कथा के विषय में लिखा है कि इसमें गद्य की प्रधानता होती है ।

कहानी उतनी पुरानी है जितना मानव । कहानी का प्रभाव किसी न किसी रूप में मानव पर होता रहा है । हिन्दी पूर्व कहानी तो ऋग्वेद के संवादसूक्त उपनिषदों की रूपक कथाएं, आख्यानक काव्य तथा पौराणिक कथाएं, जातक कथाएं, संस्कृत परवर्ती कथा साहित्य, प्राकृत और अपभ्रंश में कथा, चारण साहित्य में कथा लोक गाथाएं, मध्यकालीन हिन्दी आख्यान काव्य, वार्ता साहित्य की धार्मिक कथाएं आदि में मिलती है ।

कहानी गद्य साहित्य का प्रमुख रूप है । इसका आकार बहुत छोटा होता है और कम से कम समय में यह पढ़ी जा सकती है । इसमें मानव जीवन के किसी एक ही पक्ष या घटना का अत्यन्त सूक्ष्मता के साथ चित्रण किया जाता है ।

विभिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न ढंग से कहानी की परिभाषाएं दी हैं । एक विद्वान का कहना है कि कहानी में एक छोटी सी घटना का वर्णन होना चाहिए । उसे एक ही बैठक में पूर्णतः पढ़ा जा सके और उसका प्रभाव पूर्ण और अन्तिम होना चाहिए[1] । एच॰जी॰ वेल्स नामक विद्वान ने काल का निर्धारण करते हुए लिखा है कि वह बीस मिनट में समाप्त हो जावे[2] । विलियम हेनरी हड्सन नामक विद्वान कहते हैं कि कहानी में केवल एक ही सूचना होनी चाहिए । उसे तर्क पूर्ण ढंग से और एक ही उद्देश्य की पूर्ति के लिए आगे बढ़ाना चाहिए[3] ।

---

1. A short story is a narrative short enough to read in a singl sitting writer to make an impression complete and final in itself'. Edgar Ellen Poe.

2. H.G. Wells has suggested that a story should be of no greate length than enables it to be read in some twenty minutes.
A.C. Ward - Foundations of English prose, p.122

3. A short story must contain one and only one informative idea and that the idea must be worked out to its ligical connecti with absolute singleness of aim and directness of method.
W.H. Hudson - An introduction to studies of Literature, p.336

प्रेमचन्द के शब्दों में कहानीकार का उद्देश्य संपूर्ण मनुष्य को चित्रित करना नहीं वरन् उसके चरित्र का एक अंक दिखाना है । रचना की दृष्टि से कहानी के निम्नलिखित तत्व होते हैं - कथावस्तु, पात्र और चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, वातावरण, शैली, उद्देश्य । कहानी का मूल्यांकन इन्हीं तत्वों के आधार पर किया जाता है । श्रेष्ठ कहानी में ये सभी तत्व पूरी तरह विकसित रहते हैं ।

कथावस्तु

कथावस्तु कहानी की आत्मा है । इसलिए लेखक को कथावस्तु के चुनाव में अच्छीतरह ध्यान रखना चाहिए । कथावस्तु यथार्थ एवं कल्पित दोनों तरह की हो सकती है। इसका स्वाभाविक और तर्कसंगत होना आवश्यक लगता है । आजकल की कहानी में मनोविज्ञान और मनो-विश्लेषण के प्रयोग से कथावस्तु का स्वरूप सूक्ष्म होता जा रहा है ।

डॉ॰ लक्ष्मीनारायणलाल के अनुसार कथावस्तु के तीन भेद हैं -

(अ) घटनाप्रधान कथावस्तु में घटना ही मुख्य है । इस प्रकार की कहानियों की कथावस्तु में दैवी संयोग और अतिमानवीय शक्तियाँ भी भाग लेती दिखाई पड़ती हैं । जासूसी कहानियों की कथावस्तु इसका सुन्दर उदाहरण है ।

(आ) चरित्र प्रधान कहानी में चरित्रचित्रण और विश्लेषण ही मुख्य है चारित्रिक अन्तर्द्वन्द्व पात्रों की मानसिक उथापोह और विविध परिस्थितियों में प्रकट होनेवाली उनकी समस्त चरित्रगत विशेषताएँ इसके अन्तर्गत आती हैं ।

(ख) भावप्रधान कहानी की कथावस्तु में पात्रों की अनुभूति और भाव ही प्रकट होते हैं । यहाँ कथावस्तु बहुत सूक्ष्म और अमूर्त हो जाती है । इसमें कथासूत्र की स्थापना केवल व्यंजना और संकेतों द्वारा की जाती है । मनुष्य के शाश्वत भावों जैसे प्रेम, घृणा, करुणा और निर्वेद आदि के धरातल से इस प्रकार की कहानियाँ निर्मित होती हैं । वस्तुविन्यास की दृष्टि से कथानक के तीन अंग है - आरंभ, मध्य और अन्त ।"[1]

पात्र और चरित्रचित्रण

कहानी में कथावस्तु का सम्बन्ध पात्रों से होता है । पात्र के द्वारा कथावस्तु आगे बढ़ती है । आज की कहानियों में पात्रों के चरित्रचित्रण पर पर्याप्त बल दिया जाता है । पात्र कोई भी काल या प्रदेश विशेष से हो सकता है । लेकिन इस वैज्ञानिक युग की कहानी के पात्र हमारे समाज के बीच से आनेवाले होते हैं ।

कथोपकथन

कथोपकथन या संवाद कहानी का महत्वपूर्ण अंग माना जाता है संवाद से कहानी में आकर्षण और सजीवता मिलती है । कथोपकथन छोटा और पात्रों के अनुकूल रहना चाहिए । कौतूहल और जिज्ञासा उत्पन्न करना कथोपकथन का बड़ा गुण माना जाता है । यह पात्र, देश-काल और परिस्थिति के अनुकूल होना चाहिए ।

---

1. हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास - डॉ.लक्ष्मीनारायणलाल पृ.286

वातावरण

कहानी वास्तविक जीवन का अनुकरण है । वास्तविक जीवन में काल देश और वातावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है । परिस्थिति के चित्रणद्वारा कहानी में वातावरण की अवतारणा करना आजकल की मनोवैज्ञानिक कहानी की विशेषता है । देश काल और वातावरण के समुचित प्रयोग से कहानी का सौन्दर्य बढ़ा दिया जा सकता है ।

शैली

शैली कहानीकार एवं पाठक के बीच का माध्यम है । प्रत्येक कहानीकार की अपनी निजी शैली होती है । कहानी की सफलता शैली की सरलता और सुगमता पर आधारित है । शैली के द्वारा कहानीकार की प्रतिभा और व्यक्तित्व प्रकट होताहै । शैली की दृष्टि से कहानियों का विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है - आत्म-कथात्मक शैली, कथात्मक शैली ऐतिहासिक यावर्णनात्मक शैली, संवादात्मक शैली, पत्रात्मक शैली और डायरी शैली ।

उद्देश्य

प्रत्येक साहित्यिक रचना के पीछे एक उद्देश्य रहता है । कहानी मनोरंजन के साथ ही साथ किसी आदर्श की स्थापना, किसी पात्र के विशिष्ट गुण का उद्घाटन या किसी सत्य को प्रकाश में लाती है । प्रेमचन्द के शब्दों में "तत्वहीन कहानी से मनोरंजन भले ही हो जाये, मानसिक तृप्ति नहीं होती ।"

आजकी कहानी-कला में उपर्युक्त तत्वों का प्रयोग कम है । आजका मन और मस्तिष्क का अध्ययन और विश्लेषण ही मिलता है । आज की कहानी जीते हुए जीवन की कहानी है[1] । कहानी अब पूर्वनिर्मित परिभाषा का अनुकरण करती ही नहीं है[2] । आज की कहानी स्थूल रूप को छोड़कर सूक्ष्म की ओर अग्रसर हो रही है । परंपरागत मूल्यों के जाल को तोड़कर जीवन के नये-नये क्षेत्रों की ओर वह बढ रही है ।

आधुनिक कहानियों में यौन-भावना

आधुनिकता के प्रकाश पड़ने से नर-नारी के कोमल सम्बन्धों में बड़ा परिवर्तन आया है । दाम्पत्य जीवन सम्बन्धी परंपरागत नैतिक मान्यताएं शिथिल हो गयी हैं । आज पति और प्रेमी अलग-अलग व्यक्ति है, प्रेमी से विवाह करना और विवाहित से प्रेम करना भी जरूरी नहीं । प्रेम और यौन-सम्बन्धों को नया दृष्टिकोण प्राप्त हुआ है । अब प्रेम और यौन सम्बन्ध में स्वेच्छाचार का आविर्भाव देखा जाता है । सेक्स अब सेक्स के लिए है इसलिए प्रेम के अर्थ और सन्दर्भ में परिवर्तन आया है ।

यौन कर्म एक भूख है, लेकिन समाज ने इसे भूख से अलग दर्जे का महत्व देकर अनेक प्रकार के नियन्त्रण से संकुचित कर दिया है । स्त्री-पुरुष में आकर्षण मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है, लेकिन यौन-स्वतंत्रता से यौन अराजकता या यौन शोषण नहीं होना चाहिए । डॉ॰ प्रमीला कपूर अपनी

---

1. "नयी कहानी में विषय वस्तु को नहीं, लेखक के उस प्रस्तावित वक्तव्य को प्रधानता दी, जो उसे जीवन के संपर्क में प्राप्त हुआ ।"
   कमलेश्वर - नयी कहानी की भूमिका - पृ॰16।
2. "वह निर्मित विचारों को अब वहन नहीं करती थी । कहानी अब अपने विचारों को ही अनिवार्य मानती थी और उन्हीं का प्रस्फुटन उसकी निजी शैली बन गयी ।"
   कमलेश्वर - नयी कहानी की भूमिका - पृ॰16।

रचना "लव, मैरेज एण्ड सेक्स" नामक पुस्तक में पुराने समय के विवाह और यौन-सम्बन्ध की आज कल के विवाह और यौन सम्बन्ध से तुलना करती है । पुरानी शैली के अनुसार विवाह, यौन-सम्बन्ध और प्यार का क्रम यहाँ तक बदल गयी है कि अब प्यार, विवाह और यौन-सम्बन्ध प्यार यौन-सम्बन्ध और विवाह या यौन-सम्बन्ध, प्यार और विवाह में बदल गया है[1] । परिवर्तित सामाजिक वातावरण में नारी और पुरुष का विवाह और प्रेम सम्बन्धी दृष्टिकोण आज पूरी तरह बदला हुआ है । विवाह का उद्देश्य प्रेम का भावात्मक ऐक्य नहीं, युग-युग के सम्बन्ध की आशा या विश्वास भी नहीं; बल्कि उसे एक सामाजिक समझौता या साथ रहने की आवश्यकता पर सीमित कर दिया है । विवाह के सम्बन्ध में आने के दो प्रमुख कारण थे - नारी की आर्थिक सुरक्षा और शरीर की प्राकृतिक भूख या काम की तृप्ति । आज नारी आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र है और शरीर सुख या काम तृप्ति केलिए भी स्त्री और पुरुष दोनों को अनेक सुविधाएं हैं । सदकों पहले विवाहित बनने केलिए और गुणी पुरुषों केलिए नारी पूजापाठ करती थी, आज यह सब समाप्त हो गया है ।

हिन्दी कथा-साहित्य में प्रेम-चित्रण समस्त कथाकारों के उपन्यासों में प्राप्त होता है । प्रेम को उपन्यास की मूल प्रेरणा के रूप में आधुनिक कथाकारों ने ही स्वीकार किया है । उन्होंने अधिकांश में यौन के यथार्थपरक विकास को - यौन-विकृतियों को ही अपने उपन्यासों का उपजीव्य बनाया है । इस सम्बन्ध में जैनेन्द्र का दृष्टिकोण अपने पूर्वकालीन उपन्यासकारों से बिल्कुल भिन्न है । जैनेन्द्र के दृष्टिकोण के बारे में डॉ॰देवराज उपाध्याय कहते हैं कि उनके सभी पात्र यौनिक दृष्टि से असंगत [sexually maladjusted]

---

1. In many case histories the old sequence of marriage, sex en love has taken the shape of love marriage and sex or that of love, sex and marria e and even sometimes that of sex love and marriage.

Love, mar.iage and sex - Dr. Promilla Kapur, p.265

और सब में यौनिक दृष्टि से असाधारणता दिखाई पड़ता है[1]।

जैनेन्द्र ने मनोवैज्ञानिक धरातल पर विशिष्ट चरित्रों को लेकर सफल कहानियाँ लिखी हैं । उन्होंने चरित्रों का आविष्कार और उनका विकास मनोविश्लेषण पद्धति पर किया । उनकी कहानियों में, लक्ष्मीनारायण लाल के शब्दों में, घटनाओं और कार्यों की अपेक्षा मानसिक ऊहापोह और विश्लेषण को प्रमुखता मिली । जैनेन्द्र के चरित्रों में सामाजिकता अधिक है ।

प्रेमचन्द के बाद जैनेन्द्रजी हिन्दी के प्रमुख कथाकार के रूप में रहे । उनके साथ ही भगवतीप्रसाद वाजपेयी भी लिखते रहे । इसी समय भगवतीचरण वर्मा, अज्ञेय और यशपाल का भी आविर्भाव हुआ । अपनी प्रारंभिक रचनाओं में वर्मा जी सबसे अधिक विद्रोही रहे । अज्ञेय भी प्रारंभ में क्रान्तिकारी थे, पर धीरे-धीरे वे फ्रायड के मनोविश्लेषण से प्रभावित हुए । इलाचन्द्र जोशी भी इन्हीं लोगों के साथ लिख रहे थे, उन्होंने ही मनोविश्लेषण और अन्तर्वृत्ति निरूपण के द्वारा फ्रायड, युंग, एडलर का प्रवर्तन साहित्य में किया ।

---

1. उनके सभी पात्र यौनिक दृष्टि से असंतुलित है (sexually maladjusted) सबमें किसी न किसी प्रकार की यौनिक असाधारणता या अपसाधारणता है, वे सब नोर्मल या असनोर्मल है । इनमें भिन्न लिंगीय व्यक्तियों के प्रति आकर्षण नहीं है, सो बात नहीं है । .... यह सब कुछ है पर जब नारियाँ उनके प्रति समर्पण पर आ जाती है, सेक्स की चरम तृप्ति का अवसर आता है तो ठीक पेन मौके पर वह दुम दबाकर भाग खड़े होते है
जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन - देवराज उपाध्याय
पृ.97

यशपाल की मान्यता है कि समाजवादी समाज में नारी की आत्मनिर्भरता अत्यन्त आवश्यक है । समाज के पूर्ण विकास केलिए समाज के अर्धभाग स्त्री का सहयोग अनिवार्य है । स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता समाजवादी व्यवस्था का अनिवार्य अंग है क्योंकि यह समाजवाद की प्राप्ति और स्थापना में सहायक होगी । समाजवादी संस्कृति में नारी का अपना अस्तित्व है । वह अमुक की ही कुछ न होकर स्वयं की भी कुछ होती है ।

वे कहते हैं - नारी में स्वयं इतना साहस या सुबुद्धि होनी चाहिए कि वह उचित अनुचित का निर्णय कर सकें । उसे प्रेम करने का भी अधिकार और स्वतंत्रता होनी चाहिए । वे उसे भोग और उपभोग की वस्तु नहीं बनाना चाहते । उसे समानाधिकार और समता दिलाकर समाज का एक महत्त्वपूर्ण अंग बनाना चाहते हैं ।

यशपाल ने अपनी साहित्य की प्रेरणा किसानों मजदूरों के जीवन से न लेकर मध्यवर्ग से ली; और मध्यवर्ग की स्थिति में प्रकट परिवर्तन की छाया उनकी रचनाओं में भी प्रकटने लगी । आर्थिक और सामाजिक दोनों दृष्टियों से युद्ध के बाद मध्यवर्ग की स्थिति कष्टतर की थी, वस्तुओं का मूल्य बढ़ता रहा और उनके अभाव ने जीवन के हर क्षेत्र में चोरबाजारी और मुनाफखोरी को प्रश्रय दिया और अन्य देशों की तरह युद्धोत्तर काल चारित्रिक पतन का काल था । इस सामाजिक व्युति के कारण अश्लीलता सबसे अधिक बढ़ने लगी और यह अश्लीलता उस समय की सभी रचनाओं में किसी न किसी रूप में आयी । चोर बाजारी और मुनाफखोरी के साथ ही साथ देश में कुछ ही समय बाद शरणार्थियों की बाढ आयी और उनकी आर्थिक और सामाजिक विपन्नता के कारण देश में यौन सम्बन्धी बुराइयां आयीं और उभर कलाकारों ने लिखा|इस सामाजिक परिवर्तन का प्रतिबिम्ब यशपाल की

कहानियों और उपन्यासों पर पड़ा जिसका उपयोग उन्होंने कहीं तो व्यंग्य और हास्यमात्र केलिए किया, जो उनकी रचनाओं में सुन्दर और स्वस्थ रूप में आया और जहाँ वे उसी में उलझकर मन रमाकर उसका चित्रण करने लगे वहाँ वह कृत्रिम रूप में आया ।

मार्क्सवाद के अनुसार सेक्स की समस्या बहुत कुछ रोटी की समस्या से प्रभावित है, आज की अर्थप्रधान सभ्यता के मूल में अर्थ है और आर्थिक समस्याएँ ही विभिन्न रूपों में प्रकट होती है । यहाँ की सारी हलचल अर्थ की धुरी पर चल रही है और समाज में एक ओर सर्वहारा है, शोषित है, दूसरी ओर शोषक पूँजीपति है । बीच में मध्यवर्ग है । यशपाल ने मुख्यतया मध्यवर्ग के विभिन्न स्तरों की समस्याओं से विषय स्वीकार किया है । निम्न वर्ग के बारे में भी उन्होंने लिखा है, लेकिन उनका मन अधिक रमता है मध्यवर्ग पर ।

यशपाल के शब्दों में आज का युग नारी को वासनापूर्ति का साधन मात्र समझता है । "दिव्या" में उन्होंने कहा है कि कुल-माता, कुल-वधू या कुल-देवी आदि जो भी पद पुरुष नारी को दे पर है वह नारी की गुलामी ही ।

यशपाल ने फ्रायड और एडलर के मनोविश्लेषण सम्बन्धी सिद्धान्तों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है । उनके कथा साहित्य में कल्पना, उदात्तीकरण, हीनताग्रन्थि, ओडिपस ग्रन्थि, विपर्यस्तता, रति, प्रीति, विकार, तर्काभास, विस्मरण, प्रतीकीकरण, संक्षिप्तीकरण आदि अनेक मानसिक प्रक्रियाएँ दृष्टिगत होती हैं । यशपाल मनुष्य को एक भौतिक तत्व मानते हैं जिसे पर्यावरण के आधार पर परिवर्तित किया जा सकता है । मन उनके लिए बाहरी प्रभावों का समुच्चय है । यशपाल जी काम-तृप्ति को

मानवजीवन को संचालित करनेवाली मूलभूत प्रवृत्तियों में से एक मानते हैं । फ्रायड के शब्दों में यही वृत्ति मनुष्य के समस्त व्यवहारों की मूल प्रेरणा है । यदि मनुष्य को किसी कारण से इस प्रवृत्ति का दमन करना पड़ता है तो उसके व्यवहार में विकृतियाँ आने लगती है । यशपाल का विचार है कि वर्तमान जीवन में यदि मानसिक घुटन और निराशा को दूर करना है तो सेक्स पर लगाये गये नियन्त्रण को ढीला करना होगा । यह भी भूख प्यास के समान एक स्वाभाविक मानवीय मांग है । क्षुधा के समान यह प्रवृत्ति भी बचपन से ही मनुष्य में रहती है लेकिन इसका नैतिक विकास किशोरावस्था में ही होता है । फ्रायड मन के तीन भेद करते हैं चेतन, अचेतन तथा अर्द्धचेतन और जन्म से ही इनकी अवस्थिति मानते हैं जबकि यशपाल इसे वातावरण की देन मानते हैं लेकिन इड, ईगो और सुपर ईगो को उन्होंने भी स्थान दिया है । फ्रायड मन को मानव के समस्त क्रियाकलापों का मूल प्रेरक मानकर उसके समस्त व्यवहारों का कारण मन में खोजते हैं वहाँ यशपाल वातावरण को ही मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माता मानते हैं । वे मनुष्य के प्रत्येक कार्य का कारण उसकी चतुर्दिक परिस्थितियों में खोजते हैं । मन अपने आप में कोई स्वतंत्र सत्ता रखता है, वह इस बात का मानने लेलिए तैयार नहीं है । ऐसा लगता है यशपाल मनोविज्ञान की प्रमुख आधुनिक विचारधारा से परिचित है । इसलिए उनके कथा साहित्य में मनोविज्ञान की सभी विचारधाराएं आकर घुलमिल गयी हैं ।

यशपाल के अनुसार "मानवजीवन के विकास में वंशानुक्रम और वातावरण दोनों का योग होता है ।" मैं वंशानुक्रम नहीं तो परिस्थितियों को मानता हूँ ।" उनके विचार से वंशानुक्रम का तात्पर्य है जिस वंश में व्यक्ति उत्पन्न हुआ अर्थात् जिन परिस्थितियों में वह पला ।"

काम मानव की प्रबलतम मूल प्रवृत्ति है । जब किसी व्यक्ति में इस वृत्ति का स्वाभाविक विकास नहीं हो पाता तो वह अपना नैसर्गिक मार्ग छोड़कर अनेक विकृत मार्गों से प्रवाहित होने लगता है । इसीको फ्रायड ने यौन विकृतियों की संज्ञा दी है । यशपाल की रचनाओं में इस प्रकार की अनेक यौन विकृतियाँ दृष्टिगत होती हैं ।

यशपाल ने अपनी कहानियों में सेक्स की समस्याओं के अनेक रूप चित्रित किए हैं । सेक्स की कुछ कहानियाँ अर्थप्रधान भी हैं । लेकिन अधिकांश कहानियाँ काम प्रधान हैं । ऐसी कहानियाँ सामाजिक जीवन की नग्न वास्तविकताओं, दुर्दमनीय प्रवृत्तियों, नारी की विवश परिस्थितियों, विभिन्न आचार व्यवहारों, रहन-सहनों का प्रतिनिधित्व करती है । समाज में उच्च, मध्य और निम्न परिवार में चलनेवाले व्यभिचार, अनैतिकता, छल, कपट, ईर्ष्या, द्वेष सब में यौन समस्या ही प्रधान हो गयी है । विवाहित और अविवाहित जीवन में स्त्री पुरुष के सम्बन्धों को लेकर जो उच्छृंखल और अत्याचार हो सकते हैं, उन सबका उद्घाटन इनकी कहानियों में किया गया है

दूसरे महायुद्ध से लेकर अब तक की साहित्यिक रचनाओं में एक असीम निराशा दिखाई पड़ती है । युद्ध द्वारा उत्पन्न सामाजिक और नैतिक समस्याओं के बीच लेखक अपने को निरीह और असहाय समझने लगा । उसके सारे नैतिक मानदण्ड नष्ट हो गए । जीवन की साधारण आवश्यकताओं केलिए उसे कदम-कदम पर झुकना पड़ा । धीरे-धीरे वह कुंठा और निराशा का शिकार हो गया । मानवता उसके मन से धीरे-धीरे लुप्त होने लगी । इतनी बड़ी विडम्बना के समक्ष उसका रास्ता भूल बैठना आश्चर्य जनक नहीं । इसी विडम्बना से लड़कर ही तो जीवन के मूल्यों की स्थापना करनी है । भयंकर निराशा ने उसे कुंठित बना दिया । उसने अपने दु:खों को यथार्थ मान लिया और इस तरह बिल्कुल व्यक्तिवादी कला का हमारे साहित्य में प्रादुर्भाव हुआ

आज़ादी के बाद भारतीय समाज धीरे-धीरे अपनी पुरानी रीतियों से विचलित होता रहा । नवीन औद्योगिक आर्थिक प्रणाली के कारण नये-नये पेशों का निर्माण हुआ । आधुनिक यातायात की सुविधा के कारण व्यक्ति जीविकोपार्जन केलिए दूरस्थ स्थानों पर जाने लगा । जाति-पाँति खान-पान आदि बातों पर ढीलापन आने लगा । आज व्यक्ति का सामाजिक तथा आर्थिक अस्तित्व जाति विशेष में जन्म पाने के आधार पर निश्चित न

होकर उसकी शैक्षणिक योग्यता पर अधिक निर्भर है । अन्तर्जातीय विवाह अब असाधारण बात नहीं । आज की अर्थव्यवस्था के कारण संयुक्त परिवार अप्रचलित सा हो रहा है । अर्थप्राप्ति के लिए नारी को काम में जाना पड़ा और वह अधिक स्वतंत्र हो गयी । अपनी इच्छा के अनुसार जीवन साथी को चुनने में वह समर्थ निकली । अब माता-पिता लड़की को पढ़ा-लिखाकर उससे नौकरी करवाकर अपना उदार-निर्वाह करने के पीछे लगे हैं । किसी-न-किसी कारण से निराशा और कुंठा से पीड़ित नारी की कथाएं भी मिलती हैं ।

हिन्दी साहित्य में नारी के चित्रण मुख्यतया चार रूपों में - [1] भोगवादी, आदर्शवादी, घुटघुटकर जीनेवालों और प्रत्येक परिस्थिति के सम्मुख नतमस्तक होनेवाली या परिस्थिति के विरुद्ध जाकर आत्महत्या करनेवाली विविध रूप प्रचलित थे[1] । अज्ञेय ने नारी के तरल और करुण रूप का चित्रण किया है । अधिकांश नये कहानिकारों ने नारी को एक स्वतंत्र चेता व्यक्ति के रूप में चित्रित किया है । आधुनिकता की पृष्ठभूमि में नारी मानसिकता को व्यक्त करने का प्रयास हुआ है । शहरीकरण, वैज्ञानिकता, बौद्धिकता और प्रजातन्त्रीय व्यवस्था के कारण शिक्षा की सुविधाएं प्रबुद्ध हुई हैं । धीरे-धीरे पढ़ी लिखी और आधुनिक और बुद्धिवादी स्त्रियों की संख्या बढ़ने लगी । शहरीकरण और बौद्धिकता ने नैतिक मूल्यों को भी चुनौती दे दी है । वह अपनी परिस्थिति के प्रति अधिक सजग हो गयी । पुरुष के प्रति जो भय, संकोच और मालिक की भावना थी, वह समाप्त होने लगी । शिक्षा तथा व्यवसाय के कारण दोनों निकट आने लगे और इस निकटता के कारण कई परिवर्तन उनमें प्रकट होने लगे । इनकी अभिव्यक्ति कहानी में होने लगी । स्त्री-पुरुषों के बीच की अन्य धारणाएं कम होने लगीं । दोनों के बीच की निकटता के कारण एक दूसरे के प्रति एक दूसरे के मन में तरलता, यौनगत तथा बौद्धिक आकर्षण, कुंठा आदि परस्परविरोधी बातें उत्पन्न होनेलगीं

---

1. कहानीकार कमलेश्वर - सन्दर्भ और प्रकृति - सूर्यनारायण मा रणसुभे - पृ. 11

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया कि स्त्री-पुरुषों में मात्र यौन भेद ही है । बाकी प्रत्येक स्तर पर उनमें समानता है । परंपराबद्ध भारतीयों को यह नयी बात थी । अपनी भीतरी "नारी" का उसे नया साक्षात्कार हुआ । अब तक वह बेटी, बहन, पत्नी तथा माँ रूप में ही जी रही थी । परन्तु अब उसे अपने नारीत्व की सुरक्षा अथवा विकास केलिए वह प्रत्येक स्तर पर प्रयत्न करने लगी । इस स्वतंत्र चेता नारी का चित्रण साहित्य में अनिवार्य रहा । अन्य विधाओं की अपेक्षा कहानी में ही उसका यह रूप अधिक निखर आया । कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, भीष्म साहनी, शानी, निर्मल वर्मा आदि कहानीकार उसके इस स्वतंत्र चेता रूप को प्रस्तुत करते हैं । कुछ कहानीकारों ने इस स्त्री को मानसिक रति का माध्यम मात्र बनाया है । उनके नारी-पुरुष पात्र घटे-घिसे और आधुनिक है । पुरुषों की दृष्टि नारी के प्रति भोग की रही है ।

जीवन में पाई गई घोर निराशा और यथार्थवादी दृष्टिकोण ने प्रेमचन्दोत्तर काल में एक नए समाज को जन्म दिया । इस नये समाज का मानव अशान्त, पीड़ित, कुंठाओं से ग्रस्त था । नीति और धर्म की परंपरागत धारणाओं से वे मुक्त थे और अधिक स्वतंत्रशील । फ्रायड द्वारा उद्घाटित अचेतन जगत के प्रकाश से वे अधिक प्रभावित हुए । मनोविज्ञान की विचार प्रणाली के अनुसार उसने बाह्य जगत को जानने की अपेक्षा केवल अपने मन को जानना सीखा । मानव मन की गहराई को जानने का अवसर उसे मिला । दोनों महायुद्धों से गुज़रने से पाश्चात्य देश खून से रंगा हुआ था । सभी राष्ट्रों के जनमानस का चिंतन युद्ध पर केन्द्रित था । युद्ध भूमि में गिरे गए बमों के कारण युरोप भर में युद्ध का एक भयानक आतंक छाया हुआ था । बम के विनाश से मानव के अस्तित्व की रक्षा ईश्वर द्वारा न हुई । इससे ईश्वर विश्वास में ह्रास होना साधारण कार्य था । युद्ध के कारण सभी युरोपीय राष्ट्रों का नैतिक पतन हुआ । धर्म तथा प्राचीनतम रूढ़ियों का लोप होना भी स्वाभाविक था । युद्ध के पहले और युद्ध के बाद में युरोप में

डार्विन फ्रायड, मार्क्स, सार्त्र, युंग जैसे क्रान्तिकारी विचारकों का आविर्भाव हुआ । ईश्वर, धर्म, समाज शासन संस्था आदि विषयों के बारे में उनकी सुधारवादी विचारधारा को युद्धोत्तर परिस्थितियों ने साथ दिया । फलस्वरूप यूरोप भर में नये नये आन्दोलन उठ खड़े हुए । युद्ध से लौटे क्षतग्रस्त सैनिक तथा युद्ध के समय मैत्तिक दृष्टि से पतित हुई नारियों में असाधारणता के बीज बोए गए थे । उच्च आकांक्षी तथा अत्यधिक संवेदनशील व्यक्तियों में विक्षिप्तता, विभ्रम, स्नायुदौर्बल्य आदि मानसिक रोग उस समय सामान्य रूप से पाए गए थे । इन्हें चिकित्सित करना उस समय के लेखकों का कर्तव्य था । कुछ आलोचकों का कथन है कि इस प्रकार मनोवैज्ञानिक कथाओं का मूल स्रोत पाश्चात्य भूमि मानना उचित लगता है ।

फ्रायड के अनुसार हमारी समस्त मनःस्थितियों, मनोवेगों और मनोविकारों का मूलाधार यौन भावना है । फ्रायड ने मानव जीवन की पूर्ण व्याख्या यौन के केन्द्र में की है । उनके अनुसार मनुष्य का अचेतन जगत चेतन जगत की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होता है । समस्त इन्द्रियजन्य इच्छाओं में उन्होंने यौन इच्छा को ही सबसे महत्वपूर्ण माना है । इसी को जीवन का मूल केन्द्र सिद्ध किया है । चेतन अवचेतन के जागरण और सुषुप्ति का भेद इन्होंने व्यक्त किया है । फ्रायड कहते हैं कि यौन इच्छाएं तृप्ति न पाकर अवचेतन जगत में इकट्ठा होकर स्वप्न के रूप में बाहर आती है । फ्रायड ने इसका विस्तृत अध्ययन किया है[1] । इस अध्ययन का रूप स्वप्न सिद्धान्त (dream theories) और स्वप्न विश्लेषण (dream analysis) है[2] । फ्रायड के अनुसार प्रेमवासना और उसके आधार पर नीति, अनीति, सच्चरित्र और दुश्चरित्र आदि ऐसी मान्यताएं सत्य नहीं है, सब भ्रम है, मनुष्य जन्य है । प्रेम-वासना और समस्त विकृतियों का विश्लेषण उन्होंने किया है । मनुष्य में स्वप्नों और चेतन उद्गार भाव-भंगिमाओं तथा नित्य प्रति के जीवन के पहलुओं की सहायता से उसने यौन सम्बन्धी अध्ययन किया है ।

---

1. The Dreams as wishfulfilment - The Interp retation,p.33 S.Freud

2. The Psychology of Dreams - Process - The Interpretation Dreams, p.368, S. Freud

भारत में कामसूत्रकार वात्स्यायन ने भी यौन सम्बन्धी विषयों पर विस्तृत अध्ययन किया है ।

हिन्दी में मनोवैज्ञानिक कथा का आरंभ जयशंकर प्रसाद से माना जाता है[1] । प्रसाद की कहानियाँ सामान्य मनोविज्ञान की कहानियाँ हैं । प्रेमचन्द की कहानियों में भी आन्तरिक संघर्ष की झलक मिलती है । जैनेन्द्र की कहानियों से मनोवैज्ञानिक कहानियों की प्रथम विकास होता है[2] । इलाचन्द्र जोशी ने केस हिस्ट्रीज़ का सहारा लिया है । उनके पात्र किसी न किसी रोग से ग्रस्त है । व्यावहारिक मनोविज्ञान की कहानियों को रोमांटिक और सामाजिक दाय का पुट देकर यशपाल ने एक अलग समानांतर धारा चलाई । उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों पर आघात किए तथा आर्थिक विषमता के प्रति आक्रोश भी व्यक्त किया । शिल्प और संवेदना के धरातल पर, शुद्ध मनोवैज्ञानिक कहानियाँ अज्ञेय जी की कहानियों में मिलती हैं । मानव की समस्याओं का गंभीरतापूर्वक चित्रण इनकी कहानियों में मिलता है । अज्ञेय से मनुष्य के अकेलेपन की समस्या और क्रियात्मक जीवन के प्रति एक अक्रियात्मक भाव, नैराश्य और उत्पीड़न कहानी की केन्द्रीय संयोजना के तत्व बने ।

मनोविज्ञान ने स्त्री-पुरुष सम्बन्धी मूल्यों और समस्याओं का अपना धरातल बनाया है क्योंकि फ्रायड ने अपने मनोविश्लेषण के समस्त सिद्धान्तों और पद्धतियों को स्त्री-पुरुष के यौन सम्बन्धी आधारों पर प्रतिष्ठित किया है । फ्रायड के योनवाद के सिद्धान्तों, विश्लेषण पद्धतियों को इस युग के कहानीकारों ने स्वीकार किया है ।

---

1. हिन्दी साहित्य कोश - पृ॰220
2. हिन्दी कथाकोश - पृ॰220

मनोविज्ञान के समावेश से उपन्यासों में चरित्र-विकास का आरंभ हुआ और कला सौन्दर्य में भी वृद्धि हुई । अब रचयिता मानव हृदय और मस्तिष्क की वास्तविकता खोलकर व्यक्त करने लगा । मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और चित्रण पर प्रधानता देने की प्रवृत्ति हिन्दी में लगभग 1930 से आई ।

प्रेमचन्दोत्तर कथा साहित्य में दर्शन, मनोविज्ञान एवं साम्यवादी विचारधारा ने चरित्र-विकास को प्रभावित किया । मौलिक मान्यताओं और आदर्शों में व्यापकता आई । प्रत्येक व्यक्ति अपने व्यक्तित्व और दृष्टिकोण के अनुसार हर प्रश्न पर अपना मत स्थिर करने लगा । जैनेन्द्र, अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा आदि ने इस युग के व्यक्ति के जीवन दर्शन के आधार पर अपनी रचनाओं में मानव संवेदना और चरित्र निष्ठा पर बल दिया । उन्होंने मानव अन्तर्जगत के चेतन और अवचेतन मन के चित्र उपस्थित किए । इस युग के संपूर्ण मानवीय विचारों में फ्रायड और मार्क्स का सर्वाधिक प्रभाव स्पष्ट है ।

आज़ादी के पूर्व राष्ट्र को लेकर अनेक सुखद स्वप्न देखे गए थे । इन्हीं स्वप्नों को यथार्थ करने लिए अनेक लोग जेल की यातनाओं को सह चुके थे, लाठियों खा चुके थे, गोलियों का सामना कर चुके थे । सभी यही सोच रहे थे कि श्रेष्ठ मूल्यों की प्रतिष्ठा होगी, ईमानदारी आदत बनेगी और देश स्वतंत्र होगा । परन्तु प्रजातन्त्रीय व्यवस्था के आगमन के बाद भी यह देश भीतर ही भीतर से टूटने लगा । औद्योगिकरण और शहरीकरण के कारण यह प्रवृत्ति बढने लगी । जीवन के प्रत्येक धरातल पर, अनास्था, अविश्वास, मूल्यहीनता और दिशाहीनता का दर्शन होने लगा । व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र की मानसिकता के सूक्ष्म परिवर्तन विराट रूप धारण करने लगे । समाज क्रूर और अधिक अर्थ केन्द्रित होने लगा । ईमानदार और सहृदय व्यक्ति इस क्रूर परिस्थिति में असहाय देखने लगा । इस कारण इस समय की कहानियों में सत्य की अपेक्षा परिवेश और व्यक्ति के आन्तरिक

संघर्ष को ही स्वर दिया गया है । इस समाज में एक ओर मूल्यों पर ध्यान रखकर जीनेवाले व्यक्ति तथा क्रूर परिस्थिति दूसरी ओर । यह क्रूर परिस्थिति तो शक्तिशाली है । ऐसे समय इस व्यक्ति को दो ही रास्ते हैं - या तो वह सीधे इस परिस्थिति के प्रवाह को स्वीकार कर उसी के अनुरूप जीने की कोशिश करे अथवा आत्महत्या कर ले । आज ईमानदार लोग इस देश में सबसे अधिक परेशान है । मूल्यहीन, संकुचित, भ्रष्ट और स्वार्थी प्रवृत्तियों को अगर वे स्वीकार करके जीना नहीं चाहते हैं, तो सीधे आत्महत्या कर सकते हैं । इस प्रकार पिछले कुछ दशकों में देश की मानसिकता में जो भयावह परिवर्तन हुआ है, उसका प्रतिपादन इस काल की कहानियों में हुआ है । परिस्थिति और व्यक्ति का संघर्ष इन कहानियों का मूल स्रोत है । पात्रों की मानसिकता और परिस्थिति का चित्रण ही इस काल की कहानियों की विशेषता है ।

"आधुनिकता की अभिव्यक्ति कमलेश्वर की कहानी की विशेषता है । नयी कहानी का आन्दोलन इसी आधुनिकता की अभिव्यक्ति का आन्दोलन है । बौद्धिकता, यान्त्रिकता, कृत्रिमता, औद्योगिकरण अवहा, अनास्था, भौतिकता, अकेलापन, अर्थ केन्द्रित समाजव्यवस्था आदि आधुनिकता के विविध आयाम हैं । दो महायुद्धों और विज्ञान की आश्चर्यजन्य प्रगति के कारण पश्चिम में ये मूल्य उभर आए । स्वतन्त्रता, विज्ञान और तंत्रज्ञान की प्रगति, पूंजिवाद व्यवस्था, स्वार्थ केन्द्रित संस्थाएं और आकाशवाणी के माध्यम से भारत में इस आधुनिकता का प्रवेश हुआ । उपर्युक्त विशेषताओं के अलावा ध्येयशून्यता, पूंजिवाद, यूरोप के अन्धानुकरण की प्रवृत्ति, विदेशी भाषा विदेशी रहन-सहन और विदेशी वस्तुओं के प्रति आसक्ति ये भारतीय आधुनिकता के कुछ अन्य पहलु है ।"[1]

---

1. कमलेश्वर की कहानियाँ - वस्तुगत अध्ययन - पृ.117

विज्ञान की विभूति से अनुगृहीत मनुष्य आस्तिक विश्वास के स्थान पर तर्कशीलता और विवेचन-विश्लेषण को महत्व देता है। आज मनुष्य का अस्तित्व मात्र भोजन, वस्त्र, सुरक्षा और सुख-सुविधा का प्रश्न न रहकर विश्वव्यापी समस्याओं से सम्बन्धित रहा है। उत्पादन और वितरण की नवीन व्यवस्था ने समाज में नये तनावों, नये वर्गों और नये जीवन आन्दोलनों को जन्म दिया है।

नये जीवन-विकास की इन सारी संकीर्ण समस्याओं की वृद्धि के कारण मनुष्य की व्यक्तिगत और सामूहिक चेतना आतंकित हो रही है। उसके भावबोध की सारी की सारी परंपरागत सम्पत्ति अस्तव्यस्त हो रही है और अपने समाज के विषय में सोचने में भी असमर्थ है। भ्रम, शंका, उलझन, अनीति और अविश्वास की मानसिकता ने आज के साधारण मनुष्य को सब चारों ओर से घेर लिया है। इस मानसिकता को अभिव्यक्त करने की जैसी प्रकृत सामर्थ्य कहानी के समान अन्य साहित्यिक शैली में अप्राप्य है। इस कारण से आज कहानी-रचना संपूर्ण विश्व में ख्याति प्राप्त हुई है।

जीवन की जटिल कठिनाइयों के आगे परंपरागत आदर्श और मर्यादायें कमज़ोर और अविश्वसनीय प्रतीत होने लगी है और मानवीय चेतना के इतिहास में जब मानवीय साहस की संघर्ष गाथा का आरंभ हुआ है तब साहित्य के क्षेत्र में एक विशिष्ट क्षमता और लगन के साथ उसको अभिव्यक्त करने का दायित्व कहानी ने ले लिया।

औद्योगिक क्रांति से आम जनता की चेतना का विकास हुआ। आम जनता ने अपने सम्बन्ध में पर्याप्त गहराई में सोचा। पहले मज़दूर और किसान अत्याचारों को सहता था तो यह मानकर कि उसके साथ जुड़ी हुई एक

अनिवार्य शर्त है । निम्नवर्गीय व्यक्ति की इसी भावना ने सामाजिक घटनाओं और चिंतन के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन ला उपस्थित किया और धीरे धीरे यही सर्वहारा चेतना अस्तित्वगत चेतना के रूप में प्रकाश में आई, जिसने व्यक्ति के निजी अस्तित्व को पर्याप्त व्यापकता से विश्लेषित किया । समाज सामूहिक चेतना से प्रभावित होता है और उसके सामने अपनी अस्तित्वगत स्थितियाँ भी आती हैं तो उससे अकेलापन और त्रास की स्थितियाँ भी आती हैं। इससे अकेलापन और समाज, परिवार, धर्म और अन्य अनेक परंपरागत धारणाओं का एकाएक परिवर्तन हुआ ।

आधुनिक कहानी आम जनता की सूक्ष्म एवं सहज स्थितियों से जुड़ी हुई है । इसलिए पुरानी कथा-कहानियों की तरह उसके किसी प्रकार का आग्रह नहीं है । वह किसी प्रकार के निश्चित आदर्शों या मूल्यों को पहले से ध्यान में रखकर रचना का प्रस्तुतीकरण नहीं करती वरन् जीवन का सहज स्वाभाविक चित्रण प्रस्तुत करके एक निश्चित रचनात्मक दृष्टि की ओर संकेत कर देती है । नयी और आधुनिक रचना की दृष्टि स्वतंत्र है, इसके पास ऐसा आग्रह नहीं है कि उसका निष्कर्ष अंतिम है और उसे माना जाना चाहिए । आज की कहानी ईमानदार अभिव्यक्ति है । वह मात्र अपनी अनुभव संपन्नता के आधार पर एक रचनात्मक दृष्टि, कलात्मक व्यंजना भर देता है । आज कहानी चुनने का क्षेत्र पहले से कहीं विशाल है । जीवन और समाज के बहुत दूर से उपेक्षित और छिपे हुए कोनों से अपने कथानक की तलाश करती है ।

आज कहानी ने पुरानी पृष्ठभूमि को त्यागकर नवीन वेश धारण कर लिया है । उसमें शिल्प और अभिव्यक्ति के तत्वों पर परिवर्तन हुआ है । जहाँ घटनाएं काल्पनिक और अमानवीय तत्वों पर आधारित होती थी, वहाँ अब वे अनुभूत हैं । उनमें जीवनबोध की नवीन दिशा है । वे आधुनिकता की सीमा के अधिक निकट हैं । आज के कहानीकार ने पूर्व के कहानीकार की त्रुटियों एवं अभावों का परीक्षण कर उनको रचनाओं में प्रवेश नहीं देने का प्रयास किया है । आज कल के कहानी लेखकों के दायित्व पर राजेन्द्र यादव की

यह उक्ति प्रकाश डालती है "इस आधुनिकता का सम्बन्ध आज की वैज्ञानिक उपलब्धियों एवं औद्योगिकरण की सभ्यता से है ।

उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध भारतीय इतिहास की दृष्टि से नवोत्थान का युग है । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का आविर्भाव इसी नवोत्थान काल से सम्बन्धित है । अपनी जड़ता एवं विशृंखलित जीवन पद्धति छोड़ हिन्दी भाषा-भाषी नवीन उत्साह भावना से आगत की संभावनाओं को समेटे हुए दिशोन्मुख हुए । पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति के प्रकाश से होनेवाली परिवर्तनशीलता का इसमें बड़ा हाथ था । प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ॰ लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय ने लिखा है कि भारत वर्ष में ब्रिटीश साम्राज्य की स्थापना और विशेष रूप से लगभग सन् 1857 के बाद के हिन्दी साहित्य का इतिहास अनेक अंशों में अपने प्राचीन इतिहास से भिन्न है । हिन्दी में आधुनिकता का सूत्रपात लगभग इसी समय से होता है ।

भारतीय सभ्यता शताब्दियों के बोझ से स्थिर और शिथिल हो चुकी थी । ऐसी दशा में भारतीय सभ्यता का पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित होना स्वाभाविक था । लेकिन शासकीय नीति के कुछ कारणों से यह प्रभाव जितना उत्कृष्ट होना चाहिए था उतना नहीं हुआ । धीरे-धीरे हिन्दी साहित्य रूढ़िग्रस्त मार्ग छोड़कर गतिशील हुआ, उसमें नवीनता और आधुनिकता का जन्म हुआ । साहित्य में और समाज में नवीनता और आधुनिकता के विकास में पश्चिमी भावों और विचारों का बहुत बड़ा हाथ रहा है ।

1॰ अर्थात् समाजवादी यथार्थवाद में मनुष्य के खोए व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करना और व्यक्तिवादी दोषों को सामाजिक सन्दर्भों में देखना भी उसे लेखकीय दायित्व के अंग लगते हैं ।

– राजेन्द्रयादव – एक दुनियां – समान्तर – प्रथम संस्करण 1966, पृ॰35

नवीन वैज्ञानिक आविष्कारों का प्रवेश धीरे-धीरे भारत में हो रहा था, जिससे नवीन चेतना के उत्पन्न होने में सहायता मिल रही थी । पश्चिमी विचारों के प्रभाव से समाज में सांस्कृतिक पतन की शंका भी हो रही थी

इसी काल में सामाजिक स्थिति शोभनीय नहीं थी । पारिवारिक सम्बन्ध टूटा जा रहा था । परिवार में बड़ा व्यक्ति धन कमाकर परिवार चलाता था, यह भावना धीरे-धीरे समाप्त होने लगी । नारियों की आर्थिक परतन्त्रता भीषण रूप धारण कर चुकी थी । नारियों को सामाजिक स्वतंत्रता भी न प्राप्त थी । ~~राजनीतिक दृष्टि से भी स्वतंत्रता भी न प्राप्त थी~~ । राजनीतिक दृष्टि से भी परतंत्रता थी । प्रेम और विवाह की स्वतंत्रता न होने के कारण सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ना प्राय: असंभव हो गया था । बालविवाह और वेश्यावृत्ति बढ़ती जा रही थी । समाज में नैतिकता का ह्रास हो गया था । समाज धार्मिक रूढ़ियों एवं जर्जरित मान्यताओं से ग्रस्त था । विधवा विवाह को मान्यता न मिलती थी । समाज प्रगतिशीलता से लगभग अपरिचित थी । इन परिस्थितियों से हिन्दी कहानी साहित्य का जन्म हुआ । इन समस्याओं के समाधान एवं प्रगतिशीलता लाने का महत्ती दायित्व कथाकारों ने अपने ऊपर लिया और सुधारवादी रचनाओं के माध्यम से पाठकों तक ऐसी भावनाएं पहुँचाने का प्रयत्न किया ।

सामाजिक जीवन में परिवर्तन आने के कारण यथार्थवादी कहानिकारों ने अपनी कहानियों में यौन-भावना का प्रभाव स्वीकार किया । इस प्रकार हिन्दी साहित्य में खासकर कहानी साहित्य में यौन-भावना से प्रभावित कहानियों का आविर्भाव हुआ । यह प्रवृत्ति प्रेमचन्दोत्तर कहानिकारों में अधिक देखा जाता है । इनमें यशपाल, अश्क, जैनेन्द्र, अज्ञेय, जोशी, मोहन राकेश, यादव, कमलेश्वर आदि प्रमुख हैं ।

दूसरा अध्याय

यौन-भावना के आधार पर
जैनेन्द्र, भगवतीचरण वर्मा, भगवती
प्रसाद वाजपेयी, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार
इलाचन्द्र जोशी और अज्ञेय - इन प्रमुख
कहानीकारों की कहानियों का अध्ययन

दूसरा अध्याय

योन-भावना के आधार पर जैनेन्द्र, भगवती चरण वर्मा, पाण्डेयप्रसाद वाजपेयी, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, इलाचन्द्र जोशी और अज्ञेय - इन प्रमुख कहानीकारों की कहानियों का अध्ययन ।

साहित्य का क्षेत्र आकाश सा विस्तृत है । सूक्ष्मता के साथ देखने पर उसे कविता, कहानी, नाटक, निबन्ध, उपन्यास, आलोचना आदि में सीमाबद्ध करके अध्ययन की सुविधा केलिए बाँटा गया है । "सहितस्यभाव: साहित्यम्" के अनुसार साहित्य तो समाज का हित करता है । समाज में देखने में आनेवाले विविध विचारों को साहित्य प्रतिफलित करता है । समसामयिक साहित्य में दर्शनीय विविध समस्याओं और विचार लेखियों में योन-भावना का मुख्य स्थान है । मानव जितना पुराना है लैंगिकता या सेक्स भी उतनी पुरानी है । श्वास और रक्त के साथ यह भी जुड़ा हुआ मिलता है । योन भावना मानव की सृजन प्रक्रिया में सहायक भावना है । यह तो मुख्य रूप में अनेक युद्धों और लड़ाइयों के मूलाधार बन रही है । भारत में तो त्रेतायुग में सीता के लिए राम-रावण के बीच की लड़ाई और द्वापर युग में आकर पाण्डव और कौरवों के बीच के धर्मयुद्ध में भी मूलप्रेरणा यही रही है ।

साहित्य की विविध शाखाओं में यौन-भावना प्रस्फुटित रूप में मिली है । हिन्दी साहित्य भी इससे अछूता न रहा । हिन्दी में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त से कहानी साहित्य का आरंभ हुआ । पाश्चात्य साहित्य में कहानी का उद्भव और विकास इससे पहले ही हुआ था । जयशंकर "प्रसाद" और प्रेमचन्द के हाथों में आने पर कहानी की शैली और कथ्य में बड़ा परिवर्तन हुआ । प्रसाद जी की रचनाओं में ऐतिहासिकता की मात्रा अधिक थी । प्रेमचन्द के द्वारा कहानी जीए हुए जीवन की गाथा बन गयी । प्रेमचन्द जी का जीवन भारत के दरिद्र किसानों और साधारण मज़दूरों की कथा ही रहा । प्रेमचन्दोत्तर कथाकारों ने भी इस धारा को प्रोज्ज्वल बनाने का कार्य किया है । साथ ही साथ अन्य समस्याओं को भी उन्होंने ग्रहण किया है । उनमें यौन-भावना या सेक्स को मुख्य रूप में लिया गया है । दूसरे महायुद्ध और उसके फलस्वरूप हुए नाश और कष्टताओं को सह सह कर लोगों का मन ऊब गया था । उनकी मानसिक मृदुलता जीर्णता को प्राप्त होने लगी । आर्थिकता से उनकी तकलीफों का परिहार न हुआ । इसलिए उनपर यौनशिक्षा और वैज्ञानिकता का प्रभाव पड़ने लगा । लोगों के दृष्टि-कोण में परिवर्तन आने केलिए मार्क्स, डार्विन, फ्रायड, सार्त्र, नीत्शे आदि चिंतकों ने भी महत्त्वपूर्ण कार्य किया है ।

उपर्युक्त चिन्तकों और विचारकों से प्रेरित होकर रचना करने वाले कहानीकारों में जैनेन्द्र, भगवतीचरण वर्मा, भगवतीप्रसाद वाजपेयी, विश्वम्भर, इलाचन्द्र जोशी, यशपाल, अज्ञेय, कमलेश्वर, मोहन राकेश, राजेन्द्रयादव, रवीन्द्रनाथ कालिया आदि आते हैं । लैंगिकता के विविध अंगों जैसे विवाह पूर्व, वैवाहिक, विवाहेतर, रतिविकृतियों, समलैंगिकता और अन्य विधाओं पर उन्होंने कलम चलायी है । सृजन और आनन्द केलिए लैंगिकता का उपयोग होता आया है । वेदों, पुराणों, स्मृतियों, उपनिषदों और कामसूत्र से लेकर बाइबिल आदि धर्मग्रन्थों में भी इसका शृंगारोपांग वर्णन मिलता है ।

यौन-भावना तो प्रत्येक प्राणी के रक्त में लीन है । इसकी गहराई तो व्यक्ति की चिन्तन शैली और प्रायोगिक दृष्टिकोण पर अधिष्ठित है । कामसूत्र की यह उक्ति "कामे च यौवने-अर्थात् युवावस्था में काम का सेवन और "स्थाविरे धर्म मोक्षं च" - वृद्धावस्था में धर्म और मोक्ष का अनुष्ठान - बहुत मूल्यवान लगता है ।

इस अध्याय में प्रमुखता की दृष्टि से उपरोक्त ७: कहानिकारों की रचनाओं में प्राप्त यौन-भावना का मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया जा रहा है ।

१. जैनेन्द्र कुमार

दृष्टिदोष

कहानी का कथ्य

केदार ग्वालियर निवासी है । वह कानपुर के एक रिश्तेदार के यहाँ रहकर पढ़ता है । एक सम्भ्रान्त पड़ोसी के घर में सुभद्रानामक एक लड़की रहती थी जो स्कूल में पढ़ती थी । वे परस्पर परिचित हो गए । लेकिन दूसरे एक पुरुष से उसकी शादी सम्पन्न हुई । केदार को बड़ी निराशा हुई । वह अब तो लखनऊ में जाकर पढ़ने लगा । बी॰एससी॰ एम॰बी॰बी॰एस॰ के बाद दो साल विलायत में स्पेशलिस्ट बनने गया । लौट आने पर धीरे-धीरे केदार डाक्टरी में मशहूर बन गया । बयालीस वर्ष की अवस्था में उसने शादी की । उसके अस्पताल में एक दिन सुभद्रा नामक एक महिला दृष्टिदोष के कारण उसे देखने आयी । डाक्टर ने देखा कि वही पुरानी पड़ोसिन उसके सामने खड़ी है । डाक्टर ने उसका निरीक्षण किया और कहा कि दृष्टि में तो दोष नहीं मालूम होता । डाक्टर की आँखों में सुभद्रा के प्रति प्यार झलक रहा था ।

सुभद्रा ने यह समझ लिया । सुभद्रा का पारिवारिक जीवन सुखपूर्ण था । सुभद्रा के मन में केदार के प्रति प्रेमभाव प्रकट रूप में नहीं है । यह इससे व्यक्त है कि वह कहती है दृष्टि में दोष नहीं होता तो वह केदार के पास कभी नहीं जाती । अन्त में यह कहकर सुभद्रा डाक्टर के घर से निकलती है कि "आपने आठ रोज की दवा दी है । उसके बाद खत भेज कर या आदमी भेजकर भी आपके यहाँ से दवा मँगायी जा सकती है न ? मेरा आना मुश्किल होगा ।" यह कहकर वह चली गयी ।

समीक्षा

सब जीव जन्तुओं में जन्म के साथ ही स्नेह, वात्सल्य और सुरक्षा की आदत वर्तमान है । मनुष्य में यौवन के आगमन के साथ यौन प्रवृत्ति भी जागृत होती है । कभी कभी अनुकूल परिस्थिति के अभाव से यह प्रवृत्ति दमित रहती है, लेकिन अन्त तक अपने में अक्षुण्ण रहती है । यहाँ, केदार के मन में परिस्थितिवश सुभद्रा के प्रति काम भावना पैदा हुई । दूसरे एक आदमी के साथ सुभद्रा की शादी हो चुकी थी । जब दृष्टिदोष से पीड़ित सुभद्रा डाक्टर को देखने आयी तो केदार के मन में सुषुप्त अवस्था में पड़ी हुई कामवासना की बेली फिर पल्लवित होने लगी । लेकिन वह पुष्पित नहीं हुई । केदार का प्रेम लौकिक पथ पर अपूर्ण निकला ।

कौमार अवस्था के प्रेम की दबी हुई स्थिति दृष्टिदोष के नायक में प्रकट है । नायिका विवाहिता होने के बाद अपने प्रेमी को भूली नहीं, वह दृष्टिदोष का बहाना करके केदार को देखने आती है । नायिका के मन में कोई शारीरिक सम्बन्ध की इच्छा नहीं है । लेकिन नायक की लौकिक इच्छा देखकर वह कतराती है । नायक विवाहित और पुत्ररहित

होने की मानसिक स्थिति का संकेत करके नायिका को वश में करने का प्रयास करता है । "आपने आठ रोज की दवा दी है । उसके बाद रक्त भेजकर या आदमी भेजकर भी आपके यहाँ से दवा मँगायी जा सकती है न ? मेरा आना मुश्किल होगा" से यह व्यक्त है कि वह केदार से ज्यादा सम्बन्ध नहीं चाहती "नहीं, तुम मेरे आनन्द को नहीं छू सकोगे । मैं बहुत प्रसन्न हूँ ।" में केदार के साथ उसकी इच्छा का गोपनीय भाव मात्र लगता है । जैनेन्द्र की नायिकाएं अन्तर्मुखी है । डॉ॰ देवराज उपाध्याय का कथन यहाँ विचारणीय है वे कहते हैं कि दृष्टिदोष नामक कहानी में एक ऐसी नारी की कथा है जिसकी आँख में किसी तरह का रोग तो नहीं है और यदि है तो हिस्टीरिक दृष्टि-दोष है क्योंकि इसके कारण सुभद्रा को उस नेत्रविशेषज्ञ के सान्निध्य का अवसर मिलता है जो कभी उसका प्रेमी रहा है और जिसकी प्रणय याचना के मन ही मन दबाकर जीवन में रम गई है । आज भी उसका नैतिक अहं—
इस बात पर विश्वास करने केलिए तैयार नहीं कि इस केदार नामक डाक्टर केलिए उसके हृदय में कोई कोमल स्थान है और बराबर वह कहती है "जी, मुझे दृष्टिदोष न होता और आप आँख के डाक्टर न होते तो मेरा आपका क्या वास्ता था ।"[1]

ख॰ <u>बीएट्रिस</u>

<u>कहानी का कथ्य</u>

मेजर रघुराज अंग्रेजों के लिए जर्मनी के विरुद्ध लड़ाई करके घायल होकर अस्पताल आया । वह तो एक हवलदार से क्यामील

1॰ आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान - डॉ॰देवराज उपाध्याय - पृ॰230

वर्ष की अवस्था में मेजर बन गया था । पहले तो केप के अस्पताल में था । लेकिन कुछ दिनों से वह लन्दन के अस्पताल में लाया गया । अस्पताल में पूरे पाँच महीने लेटना पड़ा । वह तो अपने साथ कोई खतरे का खेल खेलना चाहता था । इसलिए फौज में भरती पायी । पत्नी और बच्चे उसके अनुकूल नहीं थे । उस अस्पताल के नर्सों को दवा या मरीजों से वास्ता नहीं था । ड्यूटी से ही वास्ता था । लेकिन उस दिन एक नर्स आयी जिसका नाम बीएट्रिस है । मरीज यह महसूस करने लगा कि वह सिर्फ नर्स नहीं है, वह स्त्री है । उसी सिस्टर ने आकर रघु को दवा दी जिसकी आँखों में कुछ तैरती हुई वस्तु थी । मरीज कहता है - "तमाम चेहरे पर ही कुछ थी जिससे मैं स्तब्ध रह गया । मैं नहीं सुन सका कि मुझसे क्या पूछा जा रहा है ।" जब होश आया तो उसने देखा कि उसका हाथ सिस्टर के हाथों में है[1] । सिस्टर तो कभी कभी आकर उसके सिरहाने बैठती थी । वह तो अस्पताल आने के पहले एक मठ में थी । बाद में मठ छोड़कर नर्स का काम सीखा । तब से वह अकेली नहीं है । सब उसका है । रघु और बीएट्रिस के बीच का सम्बन्ध इतना बढ़ गया कि सिरहाने बैठी सिस्टर का हाथ लेकर उसने चूम लिया[2] । अब तो अस्पताल से छुट्टी मिलने में दो दिन रह गए थे । हिन्दुस्तान जाने का प्रबन्ध कर रहा था कि उस दिन उसके कमरे में बीएट्रिस आयी । रघु ने उसका हाथ अपने हाथों में लिया । बिना बोले बीएट्रिस को देखने लगा । उसकी आँखों में तिरस्कार नहीं, धिक्कार नहीं, एक स्निग्ध करुणा थी ।

---

1. "होश मुझे तब हुआ, जब मैं ने पाया कि मेरा हाथ उसके हाथों में है । और वह उसके नाखून देख रही है ।"
   जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ - पाँचवाँ भाग - पृ.130
2. "बातचीत के बीच में सिरहाने बैठी हुई बीएट्रिस का दूसरा हाथ मैं खींचकर मुँह तक लाया । और हल्के से चूम लिया ।"
   वही - पृ.143

उसी दिन बीएट्रिस ने उसको अपने क्वार्टर ले गयी । भोजन कराया और दोनों सिनेमा देखने चले गए । पिछले दिन अस्पताल से उसे डिस्चार्ज किया गया और उसने एक होटल में डेरा डाला । वहाँ बीएट्रिस आयी । वह दुखी थी । उसके मन में रघु के प्रति स्नेह था । रघु के मन में भी उसके प्रति गहरा प्यार है । रघु ने उसे खींचकर पास बिठा लिया और प्यार प्रकट किया । उसकी आँखों में उस समय परिपूर्ण प्रेम भाव देखा, पर उसमें शान्ति थी, व्यथा भी थी । वह बोली "रघु मैं चल सकती तो ज़रूर चलती ।" रघु तुम ही सोचो, अस्पताल में और मरीज नहीं हैं ? और वह मेरी राह देखते होंगे - अत्यन्त स्नेह पूर्ण दृष्टि से रघु को देखती हुई वह बोली । और "भगवान सदा तुम्हें सुखी रखें" कहकर उसका हाथ लेकर उसने चूमा और कहा "तू मुझे घृणा तो नहीं करते ? "नहीं तुम घृणा नहीं कर सकते, मैं जानती हूँ ।" वह अस्पताल चली गयी ।

समीक्षा

पत्नी और बच्चों से तिरस्कृत मेजर रघु घायल होकर मन्दन के अस्पताल में मरीजों के साथ पाँच महीना काटता है कि उस समय बीएट्रिस नामक एक नर्स वहाँ आयी । वह नर्स से बढ़कर एक कोमल हृदया स्त्री थी । ड्यूटी का बोध और हृदयात्मता उसमें थी । इस परिस्थिति में रघु और बीएट्रिस परिचित हो गए । धर्म और देश का अन्तर उनके बीच कोई बाधा नहीं डालती थी । बीएट्रिस पहले तो एक मठ में थी, फिर वह नर्स बनकर अस्पताल आयी थी । इस कहानी का मेजर रघु ममता रुग्ण है ।

।· "फिर क्या है, बीएट्रिस ? मेरा सब तुम्हारा है, धर्म से कहता हूँ, तुम्ही मेरे सब हो ।"

जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ - पाँचवाँ भाग - पृ·148

वह जठ हो चुका है । बीएट्रिस जैसे हृदयालु युवती के प्रति आकर्षण होना स्वाभाविक बात है । मठ के वातावरण से उब आकर बीएट्रिस नर्स का काम स्वीकार किया था । अस्पताल में आने पर अनेक मरीजों से संपर्क करने का अवसर भी मिला । इस सन्दर्भ में मेजर रघु नामक तन्दुरस्त नौजवान मरीज से वह आकर्षित हो गयी थी । इस वाक्य से यह व्यक्त है कि "होश मुझे तब हुआ, जब मैं ने पाया कि मेरा हाथ उनके हाथों में है । और वह उसको मालूम देख रही है ।" रघु से वह प्यार करती थी । रघु की कामना करती थी । रघु से संपर्क के लिए वह अधिक जोगीना है इसलिए अस्पताल में वह रघु के सिरहाने बैठती थी । एक दिन इस प्रकार सिरहाने बैठी सिस्टर का हाथ लेकर उसने चुम लिया । बीएट्रिस ने झिझकिचाया नहीं । ऐसा लगता है कि बिएट्रिस एक पुरुष का सामिप्य चाहती है इसलिए कि वह मठ छोड़कर यह काम स्वीकार करती है । अस्पताल से डिसचार्ज करने पर रघु के कमरे में जाना, सिनेमावाली मिसमेच्छा का प्रमाण मात्र है । लेकिन रघु की पत्नी बनना वह चाहती ही नहीं । बिएट्रिस में आधुनिक जीवन परिस्थिति से परिचित नारी का चित्र प्रकट होती है । वह किसी के पत्नी बनकर उसका गुलाम बनना चाहती नहीं । पुरुष से एक मित्र का कार्य चाहती है । मठ छोड़कर नर्स का काम सीखना, रघु नामक मरीज के होटल के कमरे में जाना, उसके साथ सिनेमा, भोजन और सेवा का कारण बताकर उसे छोड़ना आदि कार्य बीएट्रिस की यौन मनोवृत्ति का प्रत्यक्ष उदाहरण है । दूसरे नर्सों से बढ़कर हृदयालुता और सेवन तत्परता का पात्र बनना भी इस काम भावना का कारण बनता है ।

ग· एक रात

कहानी का कथ्य

जयराज कांग्रेस दल के सजीव संचालक और नेता है । वह पार्टी की बैठक में भाग लेने केलिए हरीपुर गया । वहाँ श्रीमती सुदर्शना देवी ने

स्वागतगान पढा और जयराज के गले में खद्दर के फूलों की माला डाली, सभापति के निर्देशानुसार । सुदर्शनादेवी ने धीरे-धीरे उसकी ओर आकर, नमन ठहरकर प्रेम में जड़े हुए और अपने हाथ से सुन्दर सुन्दर अक्षरों में लिखे हुए स्वागत गान को उसके चरणों में रख दिया और मस्तक को उन चरणों के पास झुकाकर प्रणाम किया । जयराज ने उस सभा में भाषण दिया । सुदर्शना ने ध्यान से भाषण सुना । वह तो विवाहिता और स्नेहशील पति के प्यार से सम्पन्न नारी है । इस सभा की बैठक से सुदर्शनादेवी के मन में एक प्रकार की अस्थिरता अनुभव हुई । रात को सुदर्शना रेलवेस्टेशन जाती और मार्ग में जयराज से मिलती । बीच में बडी बरसात हुई । एक छतरी के नीचे दोनों कुछ कहे बोले बिना चले । गीले वस्त्रों से गहरी ठंड लगी । रेलवे स्टेशन से एक कम्बल खरीदकर उसने सुदर्शना को दिया । गीले वस्त्रों को बदलकर एक वस्त्रा होकर, कम्बल ओढकर जयराज की गोद में वह सोती है । इस सन्दर्भ में जयराज की यह उक्ति सार्थक है[1] । सवेरा होने लगा । सुदर्शना जाग उठी । जयराज बेंच की पीठ पर सिर टेके ऊंघ रहा था । उसने धोती उठाकर पहन ली । कुर्ती पहन ली, फैले हुए कम्बलों को तहाकर बेंच पर रख दिया । उसने सोते हुए जयराज को देखा कि उस की गोद में अभी वह शावक की भांति पडी थी । उस निरीह के लिए उसके हृदय में एक मातृत्व का सा भाव हिलोरे ले आया । जयराज की आँखें खुली तो उसने देखा कि गोद खाली है और सुदर्शना दूर खडी है । उसे स्मरण हुआ चार बजे की गाडी । सुदर्शना ने निकट आकर कहा - मैं जानती हूँ तुममें मेरे लिए अनपेक्षा नहीं है । जयराज, यह अनपेक्षा सब कुछ है ..... मैं अब जाती हूँ । "मेरा प्रणाम लो जयराज, और मेरे आशीर्वाद लो । क्योंकि एक बात मैं तुम्हें बताती हूँ । मैं इसी वर्ष माता हो जाऊंगी, तुम्हें प्रभु सदा सुखी रखें ।" यह कहकर वह चली गयी ।

---

1. वह सुदर्शना से कहता है - "मैं अनन्त जीवन नहीं मानता । अनन्त प्राण मानता हूँ । लेकिन मेरे लिए तो प्रणय का क्षण भी अनन्त है ।
जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ - जैनेन्द्रकुमार - पृ॰118

समीक्षा

पति प्रेम से संपन्न सुदर्शना एक क्षण के आकर्षण से प्रभावित होकर अपना घर छोड़ रात के समय में भारी वर्षा की परवाह किए बिना जयराज के गले में कदंब के फूलों की माला डाली, स्वागत गान को उनके चरणों में रख दिया और मस्तक को उन चरणों के पास झुकाकर प्रणाम किया, आदर के कारण। धीरे धीरे यह आदर यौन भावना में बदलने लगा। जयराज का भाषण सुनने पर उसमें वृद्धि हुई। यह यौन-भावना तो मान मर्यादा और स्थान काल का उल्लंघन करने केलिए सुदर्शना को प्रेरित करती है। भारी वर्षा की परवाह किये बिना जयराज की खोज में वह निकलती है। मार्ग में जयराज से मिलती है। दोनों एक छत्तरी के नीचे कुछ बात किए बिना चलने से यह सत्य निकलता है कि वे अदम्य आकांक्षा से विवश हो चुके हैं। रेलवे स्टेशन पहुँचकर एक वस्तु होकर परपुरुष की गोद में वह सोती है। इससे यह व्यक्त है कि सुदर्शनादेवी के मन भर जयराज है। पति के जिन्दा रहते हुए और गर्भिणी का यह धैर्य तो निसंशय उसकी यौन आकांक्षा का उदाहरण लगता है। सुदर्शना देवी का यह व्यवहार वास्तव में जयराज को भी प्रभावित करता है। उसका यह कथन कि मैं अनन्त जीवन नहीं मानता। अनन्त प्राण मानता हूँ। लेकिन मेरे लिए तो प्रणय का क्षण भी अनन्त है" - से यह सिद्ध होता है कि जयराज भी उसका सान्निध्य चाहता था। प्रभात होते ही जयराज ने देखा कि गोद खाली है और सुदर्शना दूर खड़ी है। सुदर्शना ने निकट आकर कहा - "मैं जानती हूँ तुम में मेरे लिए अपेक्षा नहीं है" - यह तो सुदर्शना की प्रेमाभ्यर्थना ही लगती है। और "जयराज, यह अपेक्षा सब कुछ है ..... मैं अब जाती हूँ - में उसकी असहाय अवस्था, नारी की गोपनीय आदत का प्रमाण मिलता है। "मेरा प्रणाम लो जयराज, और मेरे आशीर्वाद लो" आदि शब्दों में प्रेमी के प्रति प्रेमिका का आदर और बच्चे के प्रति माता का आशीर्वाद और उसे सुखी देखने की आशा प्रकट होती है।

ख॰ <u>अविज्ञान</u>

<u>कहानी का कथ्य</u>

आदित्य विवाहित है । उसके पत्नी और दो बच्चे है । बच्चे तो स्कूल में पढ़ते है । आदित्य और मालती के बीच पन्द्रह साल का परिचय है । डेढ़ वर्ष दोनों एक साथ रहे है । आज दोनों अचानक मिलने को आये । आदित्य मालती को ध्यान से देखने लगा । आज मालती भी विवाहित होकर सपरिवार रहती है । जयपुर में उसे सबसे अच्छे होटल में किसी काम से ठहरना पड़ा । आदित्य उसके कमरे में गया तो पाया कि कमरा अन्दर से बन्द है । उसने बाहर से घंटी दी । मालती ने दरवाजा खोला । मालती को देखकर वह रोक न सका[1] । मालती ने दरवाजा बन्द कर दिया । आदित्य थोड़ी बातचीत करता रहा और नाटक का दृश्य सा देखता रहा । फिर आगे बढ़कर जोर से उसने मालती के हाथ की कलाई कसी और झटके से बाँह खींचकर उसे उठाया । उसके बाद तो मालती कुर्सी के बाह पर आ बैठी और हाथ आदित्य के कन्धे पर डाल दिया । आदित्य अपनी जगह से उठा । मेज पर पड़ी हुई चाबी उठाई और दरवाज़े अन्दर से बन्द कर दिया । उसने मालती को दोनों बाँहों में पकड़कर पलंग पर से उठाया और सामने दूसरी कुर्सी को खींचकर उस पर बिठा दिया और अपने दोनों हाथ मालती के घुटने पर रख दिये । आदित्य और मालती के बीच का सम्बन्ध अब भी सुखद है । मालती के साथ शरीर बाँटने की इच्छा आदित्य ने प्रकट

1· "आदित्य ठिठका । देखा, मालती है । शरीर पर सिर्फ गाउन है । सिर पर बालों का बेतरतीब जूड़ा पड़े से ज्यादे खड़े हैं और शरीर स्नान के जल की बूँदों से अब भी भीगा-भीगा ।

जैनेन्द्रकुमार - पृ॰33।

की।[1] कुछ समय के बाद दोनों दरवाज़ा खोल बाहर के खुले में नगर की ओर निकल गए।

समीक्षा

आदित्य और मालती मित्र हैं। उनके बीच पन्द्रह साल का परिचय है। डेढ़ वर्ष वे साथ रहे थे। फिर दोनों अलग हो गए। दोनों विवाहित हैं। आदित्य अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहते हैं। मालती भी विवाहिता है। जयपुर में एक उत्सव के अध्यक्ष पद को अलंकृत करने केलिए मालती आयी। वह बहुत व्यस्त नारी है। असुविधा के कारण आदित्य के घर में ठहरना छोड़ दिया और होटल के कमरे में डेरा डाला। आदित्य उससे मिलने को आते समय वह नहा रही थी। तब उनके बीच के पन्द्रह साल का परिचय और डेढ़ साल साथ रहने से विकसित स्नेह उमड़ पड़ा और दोनों ने परस्पर समर्पित किया। मालती के कमरे में दूसरा कोई नहीं था। शरीर स्नान के जल से अब भी भीगा भीगा है। आदित्य ने मालती के कमरे में प्रवेश करते ही दरवाजा बन्द किया। आदित्य अनियन्त्रित हो गया था। "मालती तुम उस चाहको नहीं जान सकती जो मुझे तुम्हारे लिए रही है। उसको मैं अणुभर भी कम करने के लिए तैयार नहीं हूँ।" इससे व्यक्त है कि अब भी आदित्य मालती से अपेक्षा बनाये रखता है। मालती और आदित्य ने मात्र परस्पर परिचय को शारीरिक सुख सुविधा की सीमा में बाँध रखा है। सपरिवार रहनेवाला आदित्य पिता है, अपने मित्र मालती से मिलते समय वह कहता है - "दरवाज़ा बन्द है। .... मैं अपने कपड़े उतारकर फेंक सकता हूँ। तुम्हारे भी, तुम्हारे शरीर से अभी अभी फाड़कर अलग कर सकता हूँ।

---

1. आदित्य बोला - "मालती तुम उस चाह को नहीं जान सकती जो मुझे तुम्हारे लिए रही है। उसको मैं अणुभर भी कम करने केलिए तैयार नहीं हूँ। पन्द्रह वर्ष बीच के और डेढ़ वर्ष मेरे तुम्हारे साथ के। .... दरवाज़ा बन्द है। ..... मैं अपने कपड़े उतारकर फेंक सकता हूँ। तुम्हारे भी, तुम्हारे शरीर से अभी अभी फाड़कर अलग कर सकता हूँ ..... फिर पाँच दस मिनट हम आपस में आधा चुके होंगे।" जैनेन्द्रकुमार - पृ.34। जैनेन्द्रकुमार की कहानियाँ.

फिर पाँच दस मिनट हम आपस में आरोप चुके होंगे ।" कामासक्ति से अन्धा युवक की अभ्यर्थना है । पत्नी और परिवार के साथ रहने पर भी उसकी कामेच्छा जीवित ही है । मालती का व्यवहार भी कामासक्ति के धरातल के अनुकूल है ही । आदित्य और मालती के बीच के पन्द्रह साल का परिचय और डेढ़ साल का सहवास वास्तव में यौन सम्बन्धी आवश्यकताओं के लिए ही है । इस प्रकार एक उत्सव के सिलसिले में जयपुर में होटल में उनका मिलन भी इसका ज्वलंत उदाहरण है ।

ड॰ • <u>ग्रामफोन का रिकार्ड</u>

<u>कहानी का कथ्य</u>

मिस्टर कपूर एक मिल के सेक्रेटरी है । उनकी सुशिक्षित सुन्दर पत्नी विजया शानदार महल में सब तरह की सुख सुविधा के साथ अकेली समय काटती है । कभी उपन्यास पढ़ती, तो कभी हारमोनियम खेलती और ग्रामफोन का रिकार्ड सुनती है । विजया एक प्रकार की अनिर्दिष्ट अभाव से पीड़ित है । एक दिन वह ग्रामफोन गवाती रही थी कि अपने पति को बाहर से आते हुए देखा । झट उसने ग्रामफोन चालू करके पलंग पर आ लेटी । पति का ध्यान आकर्षित करने के लिए एक विशेष शैली पर लेटकर नींद का अभिनय कर रही थी ।[1] वे आकर चाभी और चेकबुक लेकर उसे तंग किये बिना चले गए । विजया को दु:ख हुआ, पति के व्यवहार से । उसने अपने को अभागा समझा ।

1• "विजया को पता था, वह सिरहाने ठिठके खड़े हैं । उसने मानों गहरी नींद में करवट ली । इससे अंग के काफी भाग पर से चादर खिसक हट गयी ।"

जैनेन्द्रकुमार – जैनेन्द्र कुमार की कहानियाँ – पृ॰52

उस व्यथा से मोचन पाने केलिए उसने ग्रामफोन चालू किया । उस समय वहाँ बैरिस्टर मनमोहन आया । वह मित्र और पड़ोसी है । उसने विजया के खुले सौन्दर्य को देखा । वह बेलाग आकर आराम कुर्सी पर बैठ गया । मनमोहन ने अपनी कुर्सी को आगे बढ़ाकर धीरे से अपने एक हाथ में विजया का एक हाथ थाम लिया । विजया ने कृतज्ञ भाव से उसकी ओर देखा और मुग्ध कानों से सुना-सैयाँ तोरी गोद में ..... उसने भाभी विजया को आलिंगनबद्ध किया । उसी क्षण पास रखी मेज पर से टाइमपीस झनझन करती हुई नीचे गिर पड़ी । यह आवाज मोह पटल को चीरती हुई विजया के भीतर तक पहुँच गयी । वह चौंकी, उठी और भौंचक रह गयी । अपने हाथों से उसे अलग हटाते हुए विजया ने कहा, "हाथ जोड़ती हूँ, तुम जाओ, चले जाओ, अभी चले जाओ ।"

समीक्षा

"ग्रामफोन का रिकार्ड" नामक इस कहानी की नायिका विजया अपने घर में अकेली रहती है । पति तो सदा वकील का कार्य करता रहता है । इसलिए विजया की आवश्यकताओं पर ठीक तरह ध्यान नहीं देता विजया का घर में एक बच्चा भी नहीं है । ऐसी अवस्था में अकेलेपन की वेदना से पीड़ित पत्नी केलिए पति का उपस्थित होना आनन्द की बात है । धनी परिवार से आनेवाली विजया जीवन की बाह्य आवश्यकताओं से तृप्त है । विजया पति से स्नेहपूर्ण व्यवहार की प्रतीक्षा करती थी । लेकिन जब वह पति का सान्निध्य चाहती थी तब पति घर में नहीं मिलते । एक दिन जब पति घर आकर जल्दी बाहर गया तो वह अपने कमरे में कामोत्तेजक शैली में नींद का अभिनय करके लेटी उसकी प्रतीक्षा करती रही ।

लेकिन पति उस पर ध्यान दिये बिना जल्दी बाहर गया । कामान्ध शैली में लेटी विजया के पास-पड़ोस के मनमोहन आया और उसे आलिंगनबद्ध किया । विजया यह पसन्द करती थी । सो वह उसे रोकती नहीं । "सैयां तोरी गोदीमें" का गीत उसे उद्दीप्त करती थी । वमन करती हुई वह टाईपीस मेज़ से नीचे गिरी तो वह उसे पीछे हटती है । यहाँ भय और गलत का बोध उसे पीछे हटा देती है । आधुनिक सुख-सुविधा के वातावरण में पले-बढ़े विजया के लिए भोगेच्छा होना और उसकी पूर्ति का प्रयत्न करना स्वाभाविक है । विजया के घर का अकेलापन और पति का नौकरी में व्यस्त रहना उसे अधिक कष्ट देती है । पड़ोस के मनमोहन का उसके परिवार से सम्बन्ध रखना भी उसे प्रेरणा बनती है । यह कहानी अन्य कहानियों के समान यौनेच्छा का उत्कृष्ट उदाहरण है । घर का अकेलापन और पति का काम में व्यस्त रहना और पड़ोस के मनमोहन का सान्निध्य विजया को कामासक्त करके विवाहेतर सम्बन्ध के लिए प्रेरित करते हैं ।

जैनेन्द्रजी हिन्दी के प्रमुख कहानिकारों में एक है । उनकी कुछ कहानियों में यौन-भावना का प्रभाव है । उनकी कहानियों का मूलाधार जीवन दर्शन और मनोविज्ञान है । इन्हीं दोनों के व्यापक धरातल से इन्होंने अपनी कहानियों की सृष्टि की है । फिर भी उनकी कुछ कहानियों में यौन-भावना की विलक्षण प्रवृत्तियाँ प्रदर्शित है ।

"दृष्टिदोष" की नायिका सुभद्रा बचपन के प्रेम से मुक्त नहीं है । उस कसक को भूलना उसे असंभव लगता है । यह प्रेम उसके जीवन का सब से पहला अनुभव था इस हेतु उसे दृष्टि-दोष का बहाना करके डाक्टर के पास जाना पड़ा । डाक्टर से बातचीत करते समय उसके सान्निध्य और सम्बन्ध का सुख उसे मिलता है । डाक्टर के प्रेमाभ्यर्थना का पात्र होने के कारण बार-बार

उसके पास आना वह चाहती है । लेकिन स्त्रीसहज गोप्य भाव से और डाक्टर के समान बड़ा मिला न रहने से उसे कठिनाइयाँ अधिक हैं । जैनेन्द्र की निम्न लिखित पाँच नायिकाओं में सबसे अधिक कामेच्छा से उत्पन्न वेदना का पात्र सुखदा है ।

"बीएट्रिस" की नायिका बीएट्रिस आधुनिक जीवन रीतियों से खूब परिचित है । वह मठ के वातावरण से ऊब कर नर्स का काम सीखती है । अस्पताल का उसका व्यवहार खूब योनासक्ति का प्रकट रूप है । रघु नामक मरीज से वह खूब सम्पर्क स्थापित करती है । अस्पताल में उसके पलंग पर बैठना, तल्लीन होकर मालूम देखते रहना, उसके साथ सिनेमा जाना, भोजन लेना, उसके कमरे में जाकर बातचीत करना और अन्त में उसे भी छोड़कर शादी किये बिना सेवा का बहाना करना उसके भोगविलास का उदाहरण है ।

"एक रात" की सुदर्शनादेवी वास्तव में अदम्य यौनेच्छा से प्रभावित होकर जयराज के पीछे जाती है । एक सन्तुष्ट पत्नी और गर्भिणी युवती इस प्रकार दूसरे व्यक्ति के पीछे जाने में उसकी कामेच्छा की तीव्रता खुलकर प्रकट होता है । काम के आवेश में पूरी रात उसे जयराज की गोद में रेलवेस्टेशन में काटना पड़ा । "मैं जानती हूँ तुम में मेरेलिए अपेक्षा नहीं है" यह उसकी प्रेमाभ्यर्थना का प्रमाण है । "अविज्ञान" की मालती और आदित्य स्वतन्त्र वातावरण में पलते हैं । उनके बीच के पन्द्रह साल का परिचय और डेढ़ साल का सहवास भोगविलास का उदाहरण है । दोनों अपने-अपने परिवार के वातावरण से परिचित हैं । बाधाओं के बिना जीवन जीने में अनुरक्त आदित्य और मालती समसामयिक वातावरण से खूब परिचित हैं । जैनेन्द्र की नायिकाओं में गोपनीयता की आदत अधिक है लेकिन मालती इसका अपवाद है ।

"ग्रामफोन का रिकार्ड" की विजया की स्थूल आवश्यकताओं की कमी नहीं है। वह पति से स्नेह और संपर्क चाहती है। पति तो हमेशा आफीस के काम में व्यस्त रहने के कारण उसका मन ऊब जाता है। घर के अकेलेपन से मोचन पाने के लिए वह ग्रामफोन का रिकार्ड सुनती या हारमोनियम बजाती थी। पड़ोसी मनमोहन उसे अच्छीतरह जानता था। घर के सूनेपन से तंग आने पर मनमोहन की संगति उसे अच्छी लगती थी। मनमोहन उसकी इस शारीरिक आवश्यकता से लाभ उठाता है। पति से कुपित होकर मनमोहन से एक दुर्बल निमिष में वह आकर्षित हो जाती है। पति का काम में व्यस्त रहना, घर का अकेलापन, पढ़ी लिखी युवती विजया का आधुनिक दृष्टिकोण आदि इस कहानी के लिए पृष्ठभूमि तैयार करते हैं।

2• <u>भगवतीचरण वर्मा की कहानियाँ</u>

क• <u>शिवाधन का नरक</u>

<u>कहानी का कथ्य</u>

शिवाधन तीन साल से बम्बई के एक मिल में काम करता है। दो महीने की हड़ताल में जो कुछ बचाया हुआ था, वह स्वाहा हो गया। घर में उसकी माता, पिता, छोटा भाई और पत्नी सुखिया है। विवाह के बाद एक साल सुखिया के साथ रहा, फिर कमाने के लिए बम्बई गया। सुखिया की सोच आते ही शिवाधन के अधरों पर मुस्कराहट विकसित हुई। शिवाधन खाली हाथ घर लौटता है, इसलिए वह बहुत चिन्तित है। बहादुरपुर स्टेशन पर उसे उतरना था। चोर की तरह बिना टिकट का शिवाधन अपने छिपने की जगह से बाहर आया। उसके चारों ओर अँधेरा फैला हुआ था, आसमान पर गहरे बादल घिर आए थे और बिजली चमक रही थी।

स्टेशन सुनसान था। तार मारकर अब वह सड़क पर आ गया था। उसका गाँव वहाँ से डेढ़ कोस की दूरी पर है। एकाएक मूसलधार पानी गिरने लगा। बिजली चमक रही थी। बिजली के प्रकाश में एक टूटा हुआ मन्दिर दिखाई दिया जिसमें अपना लड़कपन वह खेला करता था। उसे लगा कि मन्दिर में और भी कोई है। उसने पहचान लिया कि वह एक पुरुष और स्त्री का स्वर है स्त्री उसकी पत्नी सुखिया है[1]। उस असमय में सुखिया का स्वर सुनकर शिवाधन चेतनाशून्य हो गया। शिवाधन के मुख पर पसीने की बूँदें आ रही थीं। आगे जो बातें हो रही थीं उसे सुनने में शिवाधन असमर्थ निकला[2]। निराशा और अपमान भार से झुका हुआ और भीगता हुआ शिवाधन स्टेशन की तरफ चल पड़ा। स्टेशन पर आकर उसने साँस ली। वह स्टेशन आकर एक नरक से दूसरे नरक ले जाने के लिए गाड़ी की प्रतीक्षा करने लगा।

समीक्षा

शिवाधन एक दरिद्र परिवार का बड़ा बेटा है। उसकी पत्नी, माँ-बाप और एक भाई का संरक्षण वह करता है। परिवार की देखरेख के लिए काम के सिलसिले में वह बम्बई जाता है। हड़ताल के कारण उसे खाली हाथ घर लौटना पड़ा। घर आने के मार्ग में एक ऐसी घटना घटी

---

1. तुम्हें क्या - मुसीबत तो हमारा है। अम्माजी पूछी है - कहाँ रही- तब का कहब? और अम्माजी दद्दाजी ने पकड़ी तो सौ जूते हैं।" .... मर्द ने कहा - अरी कुछ न होगा। तेरी सास बक झक कर चुप हो जायगी। हाँ उस दिन तेरे ससुर ने जो मुझे देख लिया था, तो क्या हुआ?"
   राख और चिनगारी - भगवतीचरण वर्मा - पृ.110
2. मर्द ने फिर कहा - "और वह तेरा वह - उसकी कुछ खबर मिली।
   "कहाँ, आज छै महीने से न एक रुपया भेजिस और न कोनो चिट्ठी पत्र लिखिस। मालूम होता है कोनो रांड के फेर माँ पड़िगा। नाम होय जाका। यहाँ घर माँ सब भूखन मरत है। तुम्हारे पाँच रुपया से आज खाना मिलता है।
   राख और चिनगारी संग्रह - पृ.111

जिससे उसकी सारी कल्पनाएं मिट गयीं । भगवतीचरण वर्मा की इस कहानी में एक दरिद्र नारी अपने पति के माँ-बाप की भूख मिटाने के लिए दूसरा कोई मार्ग न देखकर पाँच रुपये केलिए शरीर बेचती है । सुखिया युवती और सुन्दरी है । पति को काम केलिए बम्बई गए तीन साल हुए । पहले पैसा भेज देता था । लेकिन अब हड़ताल से वह भी बंद हो गया । सुखिया घर के पास के टूटे फूटे मन्दिर के तहखाने में दूसरे पुरुषों से मिलती है । वह बहुत विवश है, वेश्यावृत्ति से उसे प्यार नहीं है । लेकिन उत्तरदायित्व की पूर्ति के कारण, घर में कमानेवाले अभाव में घर की बड़ी बहू रहने के कारण घर के उत्तरदायित्व को संभालने केलिए घृणित कार्य करती है । माँ-बाप को वह डरती थी । "अये, कुछ न होगा । तेरी सास बक झक कर चुप हो जायगी । हाँ उस दिन तेरे ससुर ने जो मुझे देख लिया था, तो क्या हुआ" - दूसरे पुरुष के साथ बहू को देखकर बाप को बड़ा दुख और क्रोध हुआ । यह समझकर सुखिया को धमकी देकर उसे अपनी ओर आकर्षित करता है । और इस दृत्ति को ठीक साबित करने का प्रयत्न करता है । भूख से पीड़ित नारी की असहाय अवस्था की ओर यहाँ संकेत है । "मास होय उठा । यहाँ घर में सब भूखन मरत है । तुम्हारे पाँच रुपया से आज खाना मिलत है ।" घर में भूख से मरनेवाले माँ-बाप केलिए इतना कष्ट वह सहन करती है । पाँच रुपये केलिए वह शरीर बेचकर भी भूख मिटा देती है । भूख तो मनुष्य को सब कुछ करा देती है । यहाँ भूख के कारण दूसरे पुरुषों की कामेच्छा की पूर्ति का पात्र बननेवाली सुखिया वास्तव में एक दुःखद कहानी है ।

एक विचित्र चक्कर है

क· कहानी का कथ्य

देवेन्द्र और कमला दोनों पड़ोसी और सम्बन्धी हैं। दोनों के दस साल के। वासना का भाव उत्पन्न होने के पहले ही कमला विवाहिता हो गयी। दो वर्ष बाद देवेन्द्र पढ़ने के लिए प्रयाग गया। एम॰ए॰ करके घर लौट आया। देवेन्द्र की माता तो मर गयी थी। घर में पिताजी ही साथ थे। कुछ वर्ष बाद कमला भी विधवा होकर घर आयी। एक दिन देवेन्द्र कमला के घर गया। देर तक दोनों बातें करते रहे। घर से लौटते समय देवेन्द्र ने कमला को देखा। सफेद धोती में उस तरुणी को देखकर वह स्तब्ध रह गया। इसके बाद देवेन्द्र और कमला कभी कभी मिलते थे। वह उसे तरह तरह की पुस्तकें दे आया करता था, वह उन्हें पढ़ती थी और अधिक से अधिक पुस्तकें मांगती थी, कभी कभी देवेन्द्र उसे कविताएं सुनाता था और कमला उसकी प्रशंसा भी करती थी। धीरे-धीरे देवेन्द्र के मन में कमला के प्रति दिलचस्पी बढ़ने लगी। कमला भी यह जानती थी। देवेन्द्र के पूछने पर कमला की मुस्कराहट इसका प्रमाण है।[1] कमला यह समझती थी कि एक विधवा को प्रेम करने का कोई अधिकार नहीं है और भगवान के सामने एक व्यक्ति के साथ बंध चुकी है। धीरे-धीरे वह कमला को भूलने लगा। इसी बीच देवेन्द्र के पिता का देहान्त हो गया, घर गिर गया और वह दरिद्र हो गया। तीन साल किसी तरह बीत गए। कमला की तन्दुरुस्ती बिगड़ने लगी। वह प्रेम की अग्नि में जलकर मर रही थी। इतना संयम और तपस्या एक स्त्री में ही हो सकती है। मरते समय देवेन्द्र के नाम पर चार लाख रुपये

---

1. मैं जानती थी, तुम्हारी कविताएं पढ़कर कोई भी कह सकता है कि तुम प्रेम करते हो। किस से प्रेम करते हो, यह मुझे छोड़कर कोई नहीं जानता था और न कोई जान ही सकता था। देवेन्द्र एक बात और भी बतला दुं मैं भी तुमसे प्रेम करती हूँ। उतना ही अधिक जितना तुम मुझसे प्रेम करते ह
   - इन्स्टालमेंट संग्रह से - भगवतीचरण वर्मा - पृ॰7।

छोड़ गयी थी । कमला ने देवेन्द्र के नाम पर एक पत्र भी लिखा था । उसके अनुसार उसने एक धनी परिवार की बड़ी लड़की से शादी की । कभी कभी वह मधुपान भी करने लगा ।

समीक्षा

इस कहानी का नायक और नायिका बचपन से ही मित्र और सम्बन्धी है । यौवन के आगमन से पहले कमला विवाहित हो जाती है । मित्र देवेन्द्र पढ़ने को प्रयाग जाता है । इस प्रकार दोनों अलग हो जाते हैं । कुछ वर्ष बाद कमला विधवा होकर घर लौट आती है । इसी बीच देवेन्द्र भी एम॰ए॰ करके घर आता है । दोनों अधिक निकट आते हैं । उनके बीच बचपन का स्नेह प्रेम में विकास प्राप्त करता है । विधवा नारी पति की स्मृति में शेष जीवन बिताने केलिए बाध्य है । लेकिन कमला के मन में देवेन्द्र के प्रति प्रेम इतना तीव्र हो जाता है कि वह अकाल में उस प्रेमकी ज्वाला में राख बन जाता है देवेन्द्र और कमला दोनों एक दूसरे को चाहते हैं । "देवेन्द्र एक और भी बतला दूं मैं भी तुम से प्यार करती हूं । उतना ही अधिक जितना तुम मुझे प्रेम करते हो से यह व्यक्त है । एक विधवा के लिए दूसरा कोई पुरुष मिलता भारतीय वातावरण में आसान बात नहीं । बचपन में उसकी शादी का होना और विधवा बनना भी उसकी त्रुटि से नहीं होता । यौनगत बातों की वृद्धि के पहले ही उसकी शादी संपन्न हो चुकी थी । अब उसके मन में बचपन का स्नेह देवेन्द्र के साथ तीव्र प्रेम में विकास प्राप्त कर चुकी है । उस अदम्य प्रेम की अग्नि में वह तिल तिल मरती है । मरते वक्त भी उसकी चिन्ता देवेन्द्र की भलाई पर है । इसलिए अपनी संपत्ति में से चार लाख रुपये उसके नाम पर छोड़ देती है । और किसी सुशिक्षित एवं सुन्दर युवती से शादी करने की प्रार्थना पत्र भी छोड़ जाती है । स्वयं जलकर मिटते वक्त भी देवेन्द्र की उन्नति और सुख की कामना

करती है कमला । देवेन्द्र से अच्छी अच्छी पुस्तकें माँगना, कविताएं सुनना, उसकी प्रशंसा करना, उसके नाम पर रुपये छोड़कर जाना आदि कमला और महेन्द्र के बीच बढ़नेवाले यौनभावों का प्रमाण है ।

ग. दो रातें - भगवतीचरण वर्मा

कहानी का कथ्य

जीवन सुशिक्षित और सम्पन्न युवा कलाकार है । वह दिल्ली से कलकत्ता जा रहा था । एक स्त्री उसके कम्पार्टमेंट में आयी और कुली उसकी गाड़ी में असबाब रख रहा था । स्त्री ने बिना धन्यवाद दिये ही जीवन का थरमस फ्लास्क ले लिया और अपनी प्यास बुझायी । वह सिरहाने रखी हुई किताबों में से एक उठाकर पढ़ने लगा । बीच बीच में कनखियों से वह उस स्त्री को देख लेता था और जितना वह देखता था उतनी ही उसको देखने की अभिलाषा बढ़ती जाती थी । जीवन अपनी बर्थ पर लेटते ही सो गया और आँखें खुली तो उसने देखा कि वह युवती ध्यान से उस की ओर देख रही थी । युवती ने बैठे हुए किताब खोली, अन्दरवाले चित्र को दिखलाते हुए उसने कहा - "यह चित्र तो आपका मालूम होता है" -जीवन ने सिर झुका दिया । उसने जीवन की प्रशंसा की "और बड़ी सुन्दर किताब है, इतनी सुन्दर कि मैं पढ़ते-पढ़ते रोने लगी" । सन्ध्या के धुंधले प्रकाश में उसने अनुभव किया कि युवती की सुन्दरता एकाएक कई गुना बढ़ गयी है । उसके मुख पर एक तन्मयता थी, एक उल्लास था । जीवन ने देखा कि युवती के होंठ काँप रहे हैं, उसकी आँखें कुछ नरम है । एकाएक युवती उठ खड़ी हुई, वह अपने बर्थ पर बैठ गयी ।
कुछ समय के बाद उसके कानों में एक आवाज़ आई, "खाने का समय हो गया है और आप हर्ज न समझें तो मैं आपके पानी का कर्ज खाने से अदा कर दूं ।"

जीवन ने आँखें खोलीं" - युवती उसके सिरहाने बैठी उसकी ओर बड़ी तन्मयता के साथ देख रही थी । विदा होने का समय आया । जीवन ने उस युवती का नाम जानना चाहा । लेकिन उसने नाम या पता कहा नहीं । उसने देखा कि युवती की आँखों में आँसू है । जीवन कलकत्ते में मन बहलाने आया था । एक दिन उसके मित्रों ने उसका जी बहलाने का प्रयत्न किया । एक स्त्री ने उन लोगों का स्वागत किया । उसे देख जीवन चौंक उठा और उसी समय उस स्त्री की नज़र जीवन पर पड़ी । उस स्त्री के होंठों की सारी हँसी गायब हो गयी । वह बोली - "जीवनबाबू आपके पुस्तकवाले चित्र को मैं ने अपना देवता बनाया था, सुबह, शाम, हर समय मैं उसकी पूजा करती थी, और आज मेरा देवता नष्ट हो गया, मेरा सपना टूट गया ।" उसने वह फोटो निकालकर फाड डाला । युवती पागल की भाँति हँसने लगी । जीवन नीचे उतरा और भाग गया ।

समीक्षा

जीवन बाबू धनिक और शिक्षित कलाकार है । वह कुछ दिन कलकत्ते में घूमने जाता है । उसके कंपार्टमेंट में एक सुन्दर युवती आयी, यात्रा के बीच दोनों परस्पर परिचित हो गये । जीवन की पुस्तकें लेकर उसने पढ़ी और उसकी रचनाओं से तल्लीन हो गयीं कि उसके उसके चित्र को प्रेम में लगाकर पास रखने की अनुमति माँग ली । जीवन के मन में उस युवती के प्रति प्यार था । इसलिए गाडी से उतरने के पहले उसका नाम जानना चाहा और विदा लेते समय उस ने युवती की आँसू भरी आँखों को देखा । वास्तव में वह एक वेश्या थी । जीवन को देखते समय उसके वह आकर्षित हो गयी । उसे अपने जीवन में लाने की इच्छा वह करती है । "और बड़ी सुन्दर किताब है, इतनी सुन्दर कि मैं पढते पढते रोने लगी" यह अनुमोदन उस युवती की अन्तरात्मा से आती है । वह युवती पढी लिखी और सुन्दरी है । अनेक युवकों के संपर्क में

खाने का अवसर वेश्या रहने के कारण उसे मिला है । लेकिन जीवन के समान उसे प्रभावित करने की क्षमता उनमें किसी में नहीं थी । खाने का समय हो गया है और आप हर्ज न समझें तो मैं आपके पानी का कर्ज खाने से अदा कर दूँ । इसमें बिना अनुमति के जीवन काकूमारक लेकर पानी पीना और भोजन के लिए जीवन को निमन्त्रण देना उसके असीम काम भाव का प्रमाण बनता है । इस प्रकार गाड़ी से उतरते समय उसकी आँखें भर आती हैं और कुछ पूछने को शब्द भी नहीं निकलता । वास्तव में वेश्या रहते हुए भी उसकी रुचि के अनुकूल एक पुरुष को पाकर उसे चाहने में उसकी निःस्वार्थ प्रेम और काम का परिचय मिलता है । वह अनेक पुरुषों का सान्निध्य और संगति का पात्र बन गयी है । उनसे उसे वास्तविक यौनानुभूति नहीं मिली है । कामभाव का वास्तविक आनन्द जीवन से पाना चाहती है । इसमें बाधा पड़ने पर उसकी पागल सी हँसी इसका दृष्टान्त है ।

ब· <u>एक अनुभव</u>

<u>कहानी का कथ्य</u>

पृथ्वीनाथ धनिक, शिक्षित और घूमने की आदतवाला सज्जन है वह अंग्रेज़ी अखबारों में राजनीतिक लेख लिखा करता था । काश्मीर से लौटते समय दो दिन के लिए उसको लाहौर ठहरना पड़ा । भोजन करके साढ़े आठ बजे होटल के कमरे में आया । मैनेजर की पत्नी, पति के स्थान पर बैठती थी । "और कोई प्रबन्ध चाहिए तो बतलावें, यहाँ हर तरह की सुविधा प्राप्त है" आँखें मटकाते हुए और मुस्कराते हुए मैनेजर की पत्नी ने कहा । वह अपने कमरे में आकर कुछ पढ़ने लिखने लगा । उसके कमरे के बरामदे में स्त्रियों के कंठस्वर सुनाई पड़े । समीपस्थ कमरे से कुछ अस्पष्ट प्रेमालाप सुनाई पड़ा । पृथ्वीनाथ के कमरे को खाली समझकर मैनेजर की पत्नी उसके कमरे में आयी ।

उसने मुस्कराते हुए पृथ्वीनाथ से पूछा - रात का कोई इन्तजाम आपको चाहिए । बिना सोचे समझे उसने कह दिया - "भेज दो" । उसके बाहर जाने के आध मिनट बाद ही एक सुन्दर स्त्री ने उसके कमरे में प्रवेश किया । उसके निर्देशानुसार उसने कपड़ा उतार दिया[1] । दूसरे क्षण में उसने चिल्लाया - "अपने कपड़े पहन लो ।" पृथ्वीनाथ ने यह समझ लिया कि वह स्त्री हर महीने में इस प्रकार सत्तर अस्सी रुपये अर्जित करती है । उसने अपने पर्स से सौ रुपये का एक नोट निकालकर उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा - देखो मैं तुम्हारा नाम नहीं जानता और न जानना ही चाहता हूँ । और एक महीने के लिए तुम अपने यह काम छोड़ दो | एक महीने के बाद जो तुम्हारा जी चाहे करना ।" उस युवती की मुस्कुराहट लुप्त हो गयी, वह मुख जिस पर कामुकता हँस रही थी, एकायक पीला पड़ गया । रुपया स्वीकार करते समय उसका हाथ काँप रहा था । आँखों से गिरते हुए आँसू रोक न सकी और वह बाहर चली गयी ।

समीक्षा

पृथ्वीनाथ सम्पन्न और शिक्षित सज्जन है । क्षणभंगुर प्रकृति का आदमी होने के कारण कई अनुभवों से गुजरने का अवसर उसे प्राप्त हुआ है । उसे काश्मीर से लौटते समय लाहौर के होटल में ठहरना पड़ा । उस होटल के अनुभव पर वह कहता है कि मनुष्य धन का गुलाम है । धनोपार्जन के लिए उसे कुत्सित से कुत्सित कार्य करना पड़ता है । इस कहानी में होटल का मैनेजर धन कमाने के लिए स्त्रियों का उपयोग करता है । कम समय में अधिक रुपये कमाने

---

1. जिस समय वह वस्त्र उतार रही थी मेरी आँखें मेज़ पर गड़ी थीं और मैं यह सोच रहा था कि क्या किया जाय । उस स्त्री ने कहा - बाबूजी अब क्या करें ?
   - इन्स्टालमेंट प्लान - भगवतीचरण वर्मा, पृ॰52

प्रतीक्षा में स्त्रियाँ और होटल का मैनेजर व्यस्त है । स्त्रियाँ दूसरे उपाय के अभाव में ही इस काम में आती है । रोजगारी के अभाव में वे होटल मैनेजर के शोषण का पात्र बनती है । इस कहानी का नायक पृथ्वीनाथ चाहे तो स्त्रियों का उपभोग कर सकता था । उसके पास काफी धन है । होटल में सारी सुविधाएं है । लेकिन वह इस आदत का विरोधी रहा । "जिस समय वह वस्त्र उतार रही थी, मेरी आँखें मेज पर गढ़ी थीं और मैं यह सोच रहा था कि क्या किया जाय । उस स्त्री ने कहा - बाबूजी अब क्या करूँ ।" इससे यह व्यक्त है कि स्त्री पैसे के लिए उसके सामने सब कुछ करने को तैयार है । ऐसी स्त्रियों के वर्तमान रहने से ही होटल का काम साफ चलता है । यौनेच्छा से प्रभावित होकर शरीर बाँटनेवाली स्त्रियाँ कम ही मिलती है । सब पैसे के लिए और परिवार चलाने केलिए दूसरे पुरुषों की इच्छानुवर्ती बनकर आती है । इस कहानी में यौन भावना को पेट पालने का मार्ग मात्र माना गया है । काम के वास्तविक उपयोग सुख और आनन्द की परंपरागत शैली यहाँ दृष्टिगत नहीं होती ।

ङ. <u>सच और चिनगारी</u>

<u>कहानी का कथ्य</u>

गीता ग्राजुएट थी । वह एक आफीस में काम करती थी । रमेश नामक एक युवा से परिचित हो गयी और धीरे धीरे उन के बीच प्यार बढ़ने लगा । गीता एकान्त प्रिय और गरीब परिवार से आनेवाली थी । वह बनाव श्रृंगार नहीं करती थी सभा सोसाइटी में नहीं जाती थी और खेल तमाशा पसन्द नहीं करती थी । उसके बड़े भाई मुन्सिपल बोर्ड के क्लर्क थे जिसने उसकी पढ़ाई का प्रबंध किया था । अचानक में भाई की भी मृत्यु हुई ।

उसकी मृत्यु के बाद उसकी पत्नी, बच्चे, माता और छोटे भाई का भार उसके सिर पर आ पड़ा । वे सौ गांव में जाकर रहने लगे । गीता इस दुनिया को उमंग के साथ देखना चाहती थी लेकिन आर्थिक समस्या के कारण उसका सिर झुक जाता है । एक दिन साहित्य समाज की बैठक में वह इसलिए गयी कि रमेश का नाम उसमें था । रमेश की कविताएं उसने पढ़ी थी, अच्छी लगी थीं । वह एक बार उन कविताओं के लेखक को देखना चाहती थी । उस बैठक में गीता ने एक गीत गाया । उसकी बड़ी प्रशंसा हुई । विश्वविद्यालय की संगीत प्रतियोगिताओं में पुरस्कार भी मिले थे । उसने माँ भाभी और भाई को सूचना दिये बिना शादी करने का निश्चय किया । चोर की भांति वह उनसे मुंह छिपा रही थी, अपराधी की भांति उनसे भाग रही थी । वह सोच रही थी कि अब मैं तुम्हारी हो जाऊंगी - हमेशा केलिए दोनों एक दूसरे के बन जायेंगे । इतने में "गीता" पुकारकर माता, भाभी और दोनों बच्चे - किशोर और कमला आये । वे घी, शक्कर, मैदा, मसाला, मेवा आदि साथ लायी थीं । इन लोगों को निराश्रय बिलखता हुआ छोड़कर चले जाने के संबंध में सोचकर कांप उठी । अंतत: उन लोगों से अलग होना असंभव समझ कर वह रमेश से दूर चली जाती है ।

समीक्षा

गीता पढ़ी लिखी और साधारण परिवार की युवती है । अपने मृत भाई की पत्नी और बच्चे, उसकी माता और छोटे भाई की सहायता करने केलिए गीता ने आजीवन अविवाहित रहने का निश्चय किया ।

---

1. मेरे अन्दर जलन है, उमंग है, जीवन है । सब कुछ है लेकिन बेकार समाज के आर्थिक ढांचे ने राख बनकर हर तरफ से मुझे ढंक लिया है ।"
- राख और चिनगारी - भगवतीचरण वर्मा - पृ.7

युवतियों की सहज उमंग और उत्साह उसके मन में है पर गरीबी के कारण सब छोड़ देती है । वह शादी करके सुखपूर्ण पारिवारिक जीवन बनाने के संकल्प में थी । लेकिन मृत्यु शय्या पर पड़े भाई की इच्छा को मानकर जीवन भी भाभी और बच्चों के साथ छोटे भाई और माँ की रक्षा के लिए, उसने अपने संकल्पों को छोड़ दिया। गीता नामक सहज आवश्यकताओं और यौन सहज कल्पनाओं से मुक्त नहीं थी । रमेश नामक एक युवा कलाकार से उसका परिचय था । एक दिन साहित्य समाज की बैठक में वह इसलिए गयी कि रमेश का नाम उसमें था । रमेश की कविताएं उसने पढ़ी थीं, उसकी रचनाओं से वह हठात आकृष्ट हो गयी थी । उसका सान्निध्य और संपर्क वह चाहती थी । उस बैठक में गीता ने एक गीत गाया । उसकी बड़ी प्रशंसा हुई । अपनी माँ और भाई को सूचना दिये बिना सरल रीति में उसकी शादी तय की गई । गीता चोर की भांति परिवार से मुंह छिपा रही थी अपराधी की भांति उनसे भाग रही थी । वह अपनी कल होनेवाली शादी की कल्पना कर रही थी । उस दिन गीता का नाम लेते हुए माता, भाभी छोटा भाई और बच्चे-किशोर और कमला-आये । उनके स्नेहपूर्ण व्यवहार और परिवार के दरिद्रपूर्ण वातावरण से परिचित गीता ने अन्तिम क्षण में शादी की आशा छोड़ दी और रमेश से दूर जाने का निश्चय किया । "राख और चिनगारी" नामक यह कहानी कर्तव्य पालन के लिए यौन जीवन से हाथ धोनेवाली युवती की करुण गाथा है ।

"शिवानन्द का नरक" कहानी में हमारी दूषित आर्थिक व्यवस्था के कारण परिवार के पालन पोषण के लिए वेश्यावृत्ति करनेवाली सुखिया नामक विवाहित नारी की कहानी है । सुखिया के पति शिवानन्द बम्बई में काम करता हड़ताल के कारण कम्पनी बन्द होती और घर भेजने केलिए पैसा भी नहीं रहता ऐसी अवस्था में बूढ़े माँ बाप को भोजन देने केलिए दूसरा रास्ता न रहने के कारण विवश होकर सुखिया वेश्यावृत्ति करती है । यहाँ भूख मिटाने केलिए

दूसरों की यौनेच्छा शान्त करने शरीर बेचनेवाली नारी का चित्र सुखिया के द्वारा किया गया है ।

"एक विचित्र चक्कर है" की कमला का यही विचार है कि विधवा के लिए प्यार करने का अधिकार नहीं है । इस कारण से वह परंपरागत आदर्श और नैसर्गिक वासना की अग्नि में जलकर घुट घुट होकर मरती है । मरते वक्त भी कमला देवेन्द्र की भलाई की कामना करती रहती है । मरते समय वह देवेन्द्र के नाम बहुत सारा धन छोड़ जाती है और प्रार्थना भी करती है कि किसी सुन्दर युवती से शादी करके सुखी होकर रहे ।

"दो रातें" नामक कहानी एक सुन्दर और शिक्षित युवती वेश्या की है जो रेल यात्रा के बीच एक पुरुष से परिचित होती है और उसके गुणों को देखकर उसकी पूजा करती रहती है । एक दिन अपने मित्रों के साथ वह आदमी उसके कमरे में आया । यह देख उसके मन में सारी पूज्य भावना में नष्ट हो गयीं और दूसरे पुरुषों के समान उसका स्वागत किया ।

"एक अनुभव" नामक कहानी धनोपार्जन के लिए शरीर बेचनेवाली स्त्री की कथा है । इस कहानी की स्त्री आनन्द के लिए न होकर पेट पालने के लिए इस वृत्ति में आती है । होटल के मालिक इस प्रकार के दरिद्र स्त्रियों के शोषण से धनिक बनता है । वह पूँजीपतियों का प्रतिनिधि बनकर शोषण वृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है । इस कहानी के नायक पृथ्वीनाथ द्वारा यह दिखाया गया है कि सदाचारी पुरुष हमारे समाज में वर्तमान है जो दुष्कर्मों से बचके समाज का उद्धार करना चाहता है ।

"राख और चिनगारी" नामक कहानी परिवार के लिए व्यक्तिगत सुख सुविधाएं त्यागनेवाली एक पढ़ी लिखी कर्तव्य परायण युवती की कथा है। इसकी नायिका गीता, भाई की अन्तिम अभिलाषा की पूर्ति केलिए - भाभी, बच्चे, भाई और माँ के लिए-अपनी शादी से हाथ धोती है, आजीवन अविवाहित रहती है।

अपनी अनेक कहानियों में वर्मा जी ने सेक्स सम्बन्धी समस्याएं प्रस्तुत की है। इस प्रकार की कुछ कहानियों को उन्होंने कल्पित माना है और कुछ तो विशुद्ध कामजनित। "हाय! एक पेग और" में स्त्री के धन-लिप्सु रूप को दिखाया है। उनकी कुछ कहानियों में नारी की विवशता, नारीत्व के दमन और परवशता के पीछे एक सात्विकता से भरा नारीत्व भी है। "काश मैं कह सकता", "एक अनुभव" की नायिकायें अपना तन बेचने पर भी मानवता की रक्षा करती है। नितान्त कामजनित समस्याओं को लेकर लिखी गयी कहानियों में प्रेजन्टस, बाहर-भीतर, पराजय-अथवा मृत्यु, दो रातें आदि आती है।

वर्मा जी की कहानियाँ उद्देश्ययुक्त है। उनकी कहानियों का क्षेत्र बहुत कुछ बुद्धिजीवी वर्ग तक ही सीमित रह गया है।

3· <u>भगवतीप्रसाद वाजपेयी की कहानियाँ</u>

क· <u>साइकिल की सुर्खी</u>

<u>कहानी का कथ्य</u>

दिलीप पार्लिमेंट सेक्रटरी है। विश्वनाथ दर, उसकी पत्नी माया, इकलौती बेटी सरला, रामाधीन नौकर, रामिया रसोइया आदि से उसका परिचय है। दर साहब तो पेशाक से सम्बन्धित पर्यटन में हमेशा घर से दूर रहता है। दिलीप, दर साहब के घर जाता था और कभी कभी रात

नहीं काटता था । एक दिन माया अकेले घर में मिली । बच्ची तो स्कूल से लौट आयी नहीं थी । नौकर बाज़ार गया था । माया तो स्नानागार से लौटी थी और कब केलिए बातचीत करती रही । वह पढ़ी लिखी युवती थी । यह विचार रखती थी कि संसार में कुछ भी अनुचित नहीं और सब सकारण और प्रकृति निष्ठ है । वह हमेशा सुखी रहना चाहती थी । माया ने दिलीप को अपने यहाँ आकर रहने का न्योता दिया । दिलीप इनकार करता रहा ।[1]" लेकिन माया के कारण सशक्त हो जाता है । दिलीप का सारा आत्मबल ले जाने केलिए रामाधीन को भी वह अपने साथ कर देती है । रामाधीन को छोड़ और कोई नहीं जानता था कि दिलीप के बिना माया खाना भी नहीं खाती थी। इस तरह एक साल बीत गया । दर साहब ज्यों ही सोकर उठे त्यों ही रामाधीन ने आकर सलाम किया और खुशी की वार्ता सुनायी - "सरकार सपना के भाई हुआ है । पर उनको बड़ा आश्चर्य हुआ । सोचा, कब से दिल्ली आए है, फिर कुछ अन्य बातें भी याद आयीं ।" साढ़े नौ बजे दिलीप आया । दोनों ने साथ साथ भोजन किया । अनेक बातों के बीच दर साहब ने कह दिया - "अरे हाँ मैं तुमको बधाई देना तो भूल गया दिलीप ।" दिलीप की ओर देखकर - "तुम्हारे रचनात्मक कार्य की सफलता के लिए ।"

समीक्षा

विश्वनाथ दर और माया का परिवार संपन्न और संस्कृत है । दर अपने काम से सम्बन्धित पर्यटन में हमेशा घर से दूर बड़े बड़े शहरों में घूमता है उसकी पन्द्रह साल की बेटी स्कूल में पढ़ती है । दर की पत्नी माया शिक्षित और स्वच्छन्दशील है । वह तो घर में अकेली रहती है । उसका कथन है कि संसार में कुछ भी अनुचित नहीं है सब सकारण और प्रकृतिज है ।

---

1. लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, मैं जो कह रही हूँ, तुम जिस केलिए हिचकते हो, उसको मैं समझ रही हूँ । पर आगस्त से पहले तो वे आयेंगे नहीं ।"

कश्राठी का ताजमहल - भगवतीप्रसाद वाजपेयी - पृ॰139

वह दिलीप को अपने बड़े कोने में कमरा देती है । पहले तो दिलीप ने इन्कार किया । "लेकिन-वेकिन कुछ नहीं, मैं जो कह रही हूँ, तुम जिसकेलिए हिचकते हो, उसको मैं समझ रही हूँ । पर अगस्त से पहले वे आयेंगे नहीं - से यह प्रमाणित होता है कि पति के अभाव में मित्र दिलीप को घर में जगह देना और उसके साथ खाना और सोना चाहती है । दिलीप के सारे असबाब लाने केलिए वह बड़ी खुशी के साथ रामाधीन को भेजती है । रामाधीन को छोड़ दूसरा कोई यह जानता नहीं कि दिलीप के बिना माया खाती भी कम नहीं । एक साल बाद माया एक बच्चे को जन्म देती है और यह जानकरदार साहब का आश्चर्य प्रकट करना और सोचना कि कब कब दिल्ली आए थे, और फिर कुछ अन्य बातें याद आना - यह सिद्ध करता है कि उन दिनों वह घर में नहीं था और पत्नी के साथ सोया नहीं था । "दिलीप के रचनात्मक कार्य की सफलता के लिए" बधाई देना भी इसका उदाहरण है । अदम्य कामेच्छा को शान्त करने केलिए माया दिलीप को घर में लाती है । पति तो व्यस्त है, उसे और माया तो अब माता है । ऐसी अवस्था में, अपने पति के घर में न रहते समय एक मित्र को घर में बुला लाना और उसके साथ खाने सोने से यह व्यक्त होता है कि माया काम काज की भूख शान्त करने केलिए दिलीप से संगति बनाये रखती है । माया और दिलीप में इस वैज्ञानिक युग की विचारधारा का खूब प्रभाव दर्शनीय है ।

<u>जहाँ सभ्यता साँस लेती है -</u>

ख. <u>कहानी का कथ्य</u>

नर्मदा बी.ए. विद्यार्थिनी है । कालेज जाते समय गाड़ी में उसके बगल की सीट पर एक युवक आ बैठा । नर्मदा ने उस पर कोई ध्यान नहीं दिया; किन्तु उस युवक के हाथ की "यौवन, सौन्दर्य और प्रेम" नामक पुस्तक पर उसकी दृष्टि जम गयी । कालेज की स्टाप पर वह उतरी तो

देखा कि युवक भी उसके साथ चल रहा है । दोनों ओर से गाड़ियाँ आ रही थी कि नर्मदा उनके बीच फँस गयी और उस युवक ने उसकी रक्षा की । पिताजी किशोरीलाल मर्म दा की शादी किसी अच्छे लड़के के साथ कराना चाहते थे । लेकिन दहेज के लिए धन्या नहीं था । इसी बीच नर्मदा और उस युवक दिवाकर की भेंट हुई । वह एक प्रयोगशील प्रगतिवादी पत्रकार था । रविवार का दिन था । नर्मदा ने माँ बाप को खाना खिलाया । छः बजे सिनेमा देखने की अनुमति लेकर वह घर से बाहर चली । हार्डिंग गार्डन में पूर्वनिश्चित बेंच के पास आज जब दिवाकर और नर्मदा ने एक दूसरे को देखा तो उनमें कोई विशेष संकोच न था । दोनों ने खाना खाया और घर लौटा । लौटते समय दिवाकर मर्म दा को उसके घर तक पहुँचाने गया । मर्म दा जब अन्दर गयी तो दिवाकर को भी ले चली । किशोरीलाल को पहली बार मर्म दा पर क्रोध आया । बोले - कहाँ गयी थी ? नर्मदा ने निर्भीकतापूर्वक उत्तर दिया - "गयी थी वहाँ जहाँ सभ्यता साँस लेती है । यह लीजिए उसका प्रमाण पत्र ।" इस कथन के साथ ही दिवाकर ने अन्दर आकर किशोरी लाल और माताजी के चरण छू लिया ।

समीक्षा

यह आधुनिक जीवन और सभ्यता के वातावरण में गढ़ित कहानी है। दहेज देने के लिए धनोपार्जन करने में असमर्थ पिता और अनुकूल वर ढूँढकर माँ बाप के सामने आनेवाली बड़ी किसी युवती की ही कथा इस में है । दहेज और जातिचिंता भारत के लिए एक शाप है । इस कारण कभी कभी अनमेल विवाह या अविवाहित अवस्था में जीवन बिताने की स्थिति संजात होती है । यह कहानी हमारी दूषित अर्थ व्यवस्था और सामाजिक अन्धता की ओर भी संकेत करती है । नर्मदा और दिवाकर हार्डिंग गार्डन में पूर्वनिश्चित स्थान पर मिलती है । यह इसलिए कि कालेज को जाते समय उनका परिचय हुआ

और परस्पर समझने का अवसर हुआ था । दोनों ओर से आयी गाड़ी के बीच फँस जानेवाली नर्मदा की रक्षा दिवाकर ने की थी । यह घटना नर्मदा के जीवन में बड़ा विश्वास और सुरक्षा का बोध देती थी । इस प्रकार परस्पर समझने पर दोनों विवाहित हो जाते हैं और प्रमाण पत्र माँ बाप के सामने प्रस्तुत करके उनका अनुग्रह माँगते हैं । यह कहानी विवाहेतर यौन का अच्छा उदाहरण है । भारत की सामाजिक पृष्ठभूमि में यह कहानी अजीब लगती है लेकिन पढ़ी लिखी युवा पीढ़ि के लिए यह प्रेरणाप्रद है । इस कहानी के द्वारा वाजपेयी जी ने भारत की परंपरागत विवाह प्रणाली के आगे एक प्रश्नचिह्न डाला है ।

ग. <u>दृग-दान</u>

<u>कहानी का कथ्य</u>

"सात वर्ष का यह मेरा बच्चा सो रहा है । घर भी मेरा पास ही रोटी गोदाम मुहल्ले में है । इस समय मैं बाँधु नामक एक महाशय की रखेली हूँ ।" यह वामावाली का शब्द है । वामावाली अब विधवा है । उसकी शादी अठारह वर्ष की अवस्था में पैंतीसीस वर्ष के एक स्टेशन मास्टर से हुई । स्टेशन मास्टर स्वभाव से बड़े उदार और शरीर से न तो कृश थे, न वृद्ध और न ही स्थूल था । उनके यौवन का दाम्पत्य शान्त हो चुका था । वामावाली के स्वामी को मित्रों की कमी नहीं थी । वे नित्य आते जाते रहते थे । एक दिन उन मित्रों में से एक मिस्टर बाँधु ने अपने यहाँ उन लोगों की दावत दी । इस प्रकार जीवन में वह पहला दिन था जब वह परपुरुष के सामने आयी । मिस्टर बाँधु अविवाहित थे और उनका शरीर भी बहुत गठा हुआ और सुन्दर था । गायन और वादकला में भी वे यथेष्ठ दक्ष थे और

उससे वह आकृष्ट हो गयी[1]। एक दिन जब रात के दस बजे थे उसके पति सोने जा ही रहे थे कि वह उन्हें दूध पिलाने गयी। दूध पीकर उसने उसकी गलती की ओर संकेत किया[2]। अनायास उसके मुँह से निकल गयी - हाँ गलती तो हो गयी। कुछ कम सवा लाख रुपये मिस्टर बाँधु के हाथ लग गये थे। बैंक में जमा हुआ यह सारा रुपया स्वामी उसके नाम पर कर गए थे। ~~बैंक में जमा हुआ यह~~ लड़के के नाम पर दस हज़ार रुपया है वह सुरक्षित और वयस्क हो जाने पर उसका हो जाएगा। अब बाँधु उसके घर के समीप ही रहते थे। रुपये की ज़रूरत पड़ने पर वह उसके पास आ जाता है। उसकी स्वामी की मृत्यु स्वाभाविक नहीं थी। दुग्ध पान से पूर्व ही विष पान कर चुके थे। वसीयतनामा लिखवाकर उसकी रजिस्ट्री भी करा चुके थे। एक दिन गगन बिहारी ने यह देखा कि पान्नवाली ने पिछली रात को विषपान करके आत्मघात कर लिया है और लड़का बिलख रहा है।

समीक्षा

अठारहवर्ष की युवती की शादी बैतालीस वर्ष के एक स्टेशन मास्टर से हुई। वह तन्दुरुस्त और कोमल हृदय आदमी था। वह पत्नी से अच्छी व्यवहार करता था। उसकी शारीरिक और मानसिक आवश्यकताओं पर ध्यान रखता था। लेकिन जितनी आवश्यकताओं की कामना अठारह वर्ष की पान्नवाली करती थी उतनी उस बैतालीस वर्ष के स्टेशन मास्टर से न मिली। इससे वह दूसरा मार्ग खोजती रही। वह घर से बाहर नहीं जाती थी। उसके घर के मित्रों का आगमन होता था। पति के मित्र मिस्टर बाँधु अविवाहित और सुन्दर शरीरवाला दृढ नौजवान था। गायन और वाद्य कला में उसकी बड़ी रुचि थी। और पान्नवाली उस पर हठात आकर्षित हो गयी।

---

1. मिस्टर बाँधु ने कुछ ऐसे गाने गये कि मैं उस समय हृदय से उनकी ही हो गयी। मैं भूल गयी कि मेरी भी कोई मर्यादा है। मैं यह भी भूल गयी कि मेरी भी कोई सीमा है। स्नेह बाती और लौ - भगवती प्रसाद वाजपेयी - पृ.114
2. अब इस कटोरे के दूध में धीरे धीरे कड़ुवापन खूब गहरा आ गया है .... मैं सब कुछ जान गया हूँ। तुम ने बड़ी भारी गलती की। स्नेह, बाती और लौ - भगवती प्रसाद वाजपेयी - पृ.115

एक दिन वह उसके घर में भोजन करने गयी । "मिस्टर बाँबू ने कुछ ऐसे गाने गाये कि मैं उस समय हृदय से उनकी ही हो गयी । मैं भूल गयी कि मेरी भी कोई मर्यादा है । मैं यह भी भूल गयी कि मेरी भी कोई सीमा है ।" इससे यह स्पष्ट है कि वह पाण्डवानी पति को भूलकर बाँबू से आकर्षित हो गयी थी और वह पति से बढ़कर बाँबू से संपर्क स्थापित करने लगी थी । उस अठारह वर्षवाली को बाँबू के सुन्दर सुदृढ़ शरीर की कामना थी । यह जानने पर स्टेशनमास्टर पति को बड़ा दुःख हुआ । उसने असह्य वेदना के कारण पत्नी और बच्चे के नाम बड़ी संख्या छोड़ आत्महत्या कर ली । कुछ वर्ष के लिए पाण्डवानी बाँबू की रखैल रही फिर आत्महत्या कर ली । अनमेल विवाह से उत्पन्न विकल परिस्थिति में पड़े परिवार की यह कहानी है । इसमें विवाहेतर यौन भावना का स्वरूप दर्शनीय है ।

उतार-चढ़ाव

कहानी का कथ्य

केशव एक डाक्टर थे । एक दिन वे बम्बई से कानपुर जा रहे थे । उस डिब्बे में दूसरे यात्रियों के बीच एक युवती भी बैठी थी । केशव के हाथ पर टाइम टेबिल था, युवती ने उससे टाइम टेबिल माँगा । उसने दे दिया । पर जब वह वापस मिला था, तो एक पेज पर उस युवती नाम लिखा हुआ था - दीपा । आगे स्टेशन से दीपा ने अमरूद खरीदे और केशव से चाकू माँगा । अमरूद छीलते छीलते दीपा ने अपना अंगूठा काट लिया¹ ।

1· तो आपने जानबूझकर मुझे इतना तेज चाकू दिया था, जिस में आपको यह बतलाने का मौका मिल जाय कि आप डाक्टर है ।

- स्नेह बाती और लौ - भगवती प्रसाद वाजपेयी - पृ·198

लगातार रक्त बहने लगा । उसने बैग खोलकर तुरन्त फस्ट एड की सारी क्रिया अथ से लेकर इति तक पूरी कर दी । फिर वे तो सो गये । जब आँखें खुली तो देखा कि दीपा की जगह खाली है । स्टेशन पर अपना बिस्तर सम्भालने लगे तो तकिये के नीचे एक चिट पड़ी मिली थी जिसमें लिखा था - "ओ सहयात्री । सोते प्यार को जगाना अच्छा नहीं होता इसलिए मैं बिना मिले चली जा रही हूँ । पर तुम्हारी याद हमेशा मेरे साथ रहेगी और यहीं एक बूँद आँसू पड़ा हुआ था -"दीपा" । किसी कारण से केशव घरवालों से बिगड़कर घर से निकले थे । वही टाइम-टेबिल, वही उन्हीं दिनों का, उस समय भी उसी तरह उनके हाथ में था कि एकायक उस पर दीपा के नाम के साथ उसका पता भी लिखा दीख पड़ा जिससे मालूम हुआ कि वह लखनऊ के कैसर बाग में रहती है । दुबारा स्टेशन की ओर जा रहा था कि अचानक दीपा से उसकी भेंट हुई । धीरे धीरे दीपा और उनका परिचय शादी में परिणत हुआ । वह इस बार फिर दीपावली कानपुर में कर रहा है । भाभी दीपा से उलाहना दे रही है - यह केशव पूरा बच्चा है अभी तक किसी की जरा सी बात भी सह नहीं सकता । उसने एक बार सिर्फ इतना ही कहा था - "वक्त से खाना खाने आ जाया करो" तो यह घर से निकल गया था ।

समीक्षा

रेल की यात्रा के समय दीपा का केशव के साथ परिचय हुआ । दोनों अविवाहित था । दीपा ने केशव से टाइम टेबिल माँग ली । लौटाते समय एक पेज में उसने अपना नाम लिख रखा । दीपा को केशव के प्रति आकर्षण था । बाद में अमरूद छीलते छीलते उसकी अंगुली कट गयी तो केशव ने फस्ट एड करके आश्वासन दिया तो दर्शन और स्पर्श से दीपा का प्यार बढ़ने लगा । उस सान्निध्य से वस्तुत: उसे एक सुखद अनुभव हुआ । काम सम्बन्धी बातों में पुरुष का स्पर्श और आश्वासन देनेवाला व्यवहार का स्त्री पर विशेष प्रभाव पड़ता है । यहाँ दीपा और केशव के संबंध में हुआ । अंगुली काटने पर भी

उसे वेदना नहीं होती बल्कि वह मधुर शब्दों में डॉ॰ केशव से यह फरियाद करती है - 'तो आपने जानबूझकर मुझे इतना तेज चाकू दिया था जिसमें आपको यह जतलाने का मौका मिल जाय कि आप डाक्टर है । फिर गाडी से उतरते समय दीपा ने एक चिट्ठी लिखकर केशव के सिरहाने रखी थी - ओ सहयात्री । सोते प्यार को जगाना अच्छा नहीं होता इसलिए मैं बिना मिले चली जा रही हूँ । पर तुम्हारी याद हमेशा मेरे साथ रहेगी और यही एक बूंद आँसू पडा हुआ था - दीपा । इस उक्ति से यह प्रमाणित होता है कि वह केशव को चाहती है और उसके साथ जीने की अदम्य अभिलाषा रखती है । "पर तुम्हारी याद हमेशा मेरे साथ रहेगी" - यह उक्ति भी इसका प्रमाण है । केशव और दीपा को मिलकर कहानीकार ने उनके साथ न्याय किया है । दोनों शादी करके सुख से जीवन बिताते हैं । इसमें आकस्मिक मिलन से विकसित प्यार का सुन्दर चित्रण आधुनिक वातावरण में प्रस्तुत किया गया है ।

ङ. **बधाई**

कहानी का कथ्य

गिरिधारी एक कारपोरेशन कम्पनी के अफसर है । उनकी अवस्था चालीस से ऊपर थी । और वे निस्सन्तान थे । उन्होंने दुबारा शादी की । जब उनका यह विवाह हुआ था पुष्पा केवल चौदह वर्ष की थी । उस समय गिरिधारी तीस पार कर चुका था । उनके लिए रुपये पैसे की कमी नहीं थी, मकान अपना था, पत्नी सुशिक्षित और सुन्दरी थी । लेकिन वर्ष पर वर्ष बीत गए, गिरिधारी की पत्नी पुष्पा पुष्पित नहीं हुई । इसी बीच रघुनाथ नामक एक युवक वहाँ आ गया । रघुनाथ को गिरिधारी के आफीस में स्टेनोग्राफी का काम मिला । ब्रांच सेक्रेटरी उसके काम से बहुत प्रसन्न थे ।

रघुनाथ गिरिधारी के घर में रहता था । वह गिरिधारी की पत्नी को अपनी भाभी के समान देखता था । लेकिन धीरे धीरे उसमें कुछ परिवर्तन देखने में आया । अब गिरिधारी का अन्तपुर रघुनाथ के निकट था । पुष्पा पर वह विश्वास करता था । वह रघुनाथ पर उससे अधिक विश्वास रखता था । धीरे धीरे गिरिधारी के मन में अविश्वास की कालिमा फैलने लगा । रात के ग्यारह बजे मित्रों के यहाँ से आकर अपने कमरे में चुपचाप लेट रहा था । आँखों में नींद नहीं आती थी । गिरिधारी ने चाहा कि देखे, पुष्पा क्या कर रही है ? एक चमकती हुई छुरी उसने जेब से निकालकर हाथ में ली । वह चुपचाप मकान के उस कमरे की ओर जा पहुँचा जहाँ पुष्पा लेटी हुई थी । वहाँ रोशनी नहीं थी । बिजली का बटन दबाकर उसने देखा – पुष्पा सो रही है – अब छुरे को उसने खूब मजबूती के साथ पकड़ लिया । किन्तु पुष्पा मर चुकी थी । पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पता चला कि उसने जहर खाया था और उसके चार महीने का गर्भ था । दूसरे दिन अचानक आ गया रघुनाथ – वह उसे बधाई देने आया था । रघुनाथ पागल बन गया था ।

समीक्षा

यह कहानी अनमेल विवाह का परिणाम है । तीस वर्ष की अवस्था में चौदह वर्षीय पुष्पा से गिरिधारी शादी करता है । यह उसका दूसरा विवाह है । पहले विवाह में कोई बच्चा नहीं था । शादी के बाद पुष्पा दस साल तक बच्चों की कामना करती रही । लेकिन वह असफल निकली । हर एक नारी को माता बनने की इच्छा है और अधिकार भी । जब नारी पति से गर्भिणी नहीं बन सकती तो निराश हो जाती है । ऐसी अवस्था में दूसरा मार्ग खोजने की संभावना बढ़ती है । यहाँ गिरिधारी घर में ऐसी अवस्था में रघुनाथ नामक एक सुन्दर, सुदृढ युवक आया ।

वह गिरिधारी के आफीस में काम करनेवाला है । पुष्पा के साथ वह भाभी का सा व्यवहार करता था । गिरिधारी भी उसे पसन्द करता था । लेकिन धीरे धीरे उसमें कुछ परिवर्तन देखने लगा । वह पुष्पा के साथ खूब मिलता जुलता रहता था । पति से गर्भिणी बनना असंभव जानकर पुष्पा रघु पर अधिक विश्वास करने लगी । रघु भी उस पर विश्वास करता था । वह रघुनाथ से संपर्क करके गर्भिणी बनी और गिरिधारी का सन्देह बढ़ने लगा । इसलिए, पत्नी की हत्या करने का निश्चय करता है । पति के अस्वस्थ व्यवहार से तंग आकर पुष्पा ने जहर खाकर आत्महत्या की । नारी माता बनने से ही पूर्ण हो जाती है । पूर्णता की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करना ही नारी का जीवन है । यहाँ पुष्पा भी यही कार्य करती है । लेकिन भारत की सामाजिकता के धरातल पर उसकी अपेक्षा स्वाभाविक बात रही । इसलिए वह मृत्यु का वरण करती है । रघु पागल हो जाता है ।

"दूध धाम" की नायिका पानवाली और बधाई की नायिका पुष्पा दोनों अनमेल विवाह के दुष्परिणाम के प्रमाण है । दोनों अपने पतियों से कामेच्छा में वंचित रहे जिस से दोनों अपने अपने पति के मित्रों से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती है । बधाई की नायिका गर्भिणी बनने की अभिलाषा यथार्थ करती है । गलती समझ में आने पर पश्चात्ताप के रूप में वह आत्महत्या करती है ।"जहाँ सभ्यता सांस लेती है" की नायिका मर्यादा बहुत प्रगतिशील है । वह इस कहानी में सफल निकलती है । "उतार - चढ़ाव" की दीपा भी विवाहित होकर प्रेमी के साथ सुखपूर्ण जीवन बिताती है । "मार्सेल्स की मुर्गी" की माया तो पाश्चात्य जीवन से प्रभावित है । वह स्वस्थ और सम्पन्न पति के रहते हु दूसरे युवा पुरुष से यौनसम्पर्क में दूसरी बार माता बनती है । वाजपेयी जी की कहानियों के कथ्य की विशेषता पर प्रकाश डालते हुए गोविन्दलाल छाबड़ा और लक्ष्मण दत्त गौतम लिखते है - "उनकी कहानियों में नारी पात्रों की प्रमुखता है ।

मध्यवर्गीय मान्यताओं के कलुषित और वीभत्स बन्धनों में नारी की तड़प ने वाजपेयी जी की कोमल और भावुक हृदय को आकर्षित कर लिया । जिसकी की प्रेरणा भी एक ऐसी ही घटना से उन्हें मिली - ऐसा वे स्वीकार करते हैं । पूरन पात्र तो इस भावुकता और संवेदना को वहन करने के प्राय: माध्यम मात्र है ।[1]" डॉ॰ लक्ष्मी-नारायण लाल के शब्दों में "वाजपेयी जी की कहानियों का स्वर एक है - मध्यवर्गीय समाज उसकी अपनी मान्यताएं, मान्यताओं में उतार - चढ़ाव, उत्थान-पतन, उन्नयन और ह्रास ।[2]

वाजपेयी जी की कहानियाँ प्राय: चरित्रमूलक है । "मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ" - में उनका अपना कहना है "यों तो मैं ने घटनामूलक कहानियाँ भी लिखी है, पर मेरी अधिकांश कहानियाँ या तो चरित्र विशेष पर आधारित हैं या मनोविश्लेषण पर।" कहानिकार सेक्स या यौन भावना को व्यापक क्षेत्र में देखते हैं । जीवन का एकमात्र लक्ष्य यौन भावना की तृप्ति नहीं मानते । इस भावना को समाज की कल्याण केलिए और व्यक्ति के उत्थान के लिए प्रयोग में लाने की आशा है, उनकी वाणी में । सेक्स के बारे में वाजपेयी जी का मत यह है - "चरित्र की निर्मिति में, अत: साहित्य में भी सेक्स संकुचित रूप में नहीं है - उसका क्षेत्र बहुत विस्तृत और व्यापक रहा है । हमारा संपूर्ण जीवन-सौख्य एक सेक्स में ही निहित और समाहित रहता है, ऐसी कोई बात नहीं है । ...... हाँ एक बात हम कह सकते हैं कि जैसे जीवन भोग की एक उपलब्धी सेक्स है वैसे ही उसके सारे आनन्द और सौख्य, द्वन्द्व और संघर्ष की अनुभूति के मूल में है प्रकृति - और प्रकृति तथा सेक्स ये दोनों एक नहीं है[3] ।"

---

1. कहानिकार भगवतीप्रसाद वाजपेयी - संवेदना और शिल्प आदर्श - गोविन्दलाल छाबड़ा और लक्ष्मण दत्त गौतम - पृ॰160
2. साहित्यकार पंडित भगवती प्रसाद वाजपेयी - डॉ॰लक्ष्मीनारायण - पृ॰31
3. ग्रामोदय - दिसम्बर - 1968 - पृ॰128-129

4. चन्द्रगुप्त विद्यालंकार की कहानियाँ

क. भय का राज्य

कहानी का कथ्य

मिदनापुर जिले के महीपुर नामक गाँव में एक जुलाहे परिवार के अजित नामक बालक और मोहिनी नामक उसी कुल की बालिका के बीच परिचय बढ़ने लगा । उस समय ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन चल रहा था । अजित अपनी [illegible] बूढ़ी माता का एकमात्र बालक और मोहिनी से चार पाँच साल बड़ा है । अजित और मोहिनी दिन रात के साथी रहे । अजित कपड़ा बुनने में समर्थ था और माता की सहायता कर रहा था । एक दिन अजित के यहाँ चार पाँच फिरंगी लोग आए । उन्होंने वहाँ कुछ कारखाने खोले और सारे जुलाहों को कारखाने में काम करने की आज्ञा दी । उनका यही उद्देश्य था कि कपड़े बुनने की रीति को नष्ट करें जिससे फिरंगी प्रगति प्राप्त कर सकें । ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एजन्ट मिस्टर फाक्स भी वहाँ आया था । वह बड़ा क्रूर था । मिदनापुर के जुलाहों के नाश करने का फिरंगियों का वह निश्चय मोहिनी के कान में भी पड़ा । उसके उपदेश से अजित और माता पूरब के जंगलों में जाकर रहने लगे । वह शिकारी बन गया । इसी बीच संपूर्ण बंगाल में अंग्रेजों का अखण्ड राज्य स्थिर हो चुका था । मगर जिस जंगल में अजित रहता था वहाँ उसी का अधिकार चल रहा था । वह फिरंगियों का दुश्मन भी था । एक दिन अजित ने देखा कि जंगल के एक भाग में दो तीन बड़े बड़े तम्बू डाले हुए हैं । इन तम्बुओं के सामने एक फिरंगी धीरे धीरे टहल रहा था । उस फिरंगी की ओट में एक भारतीय महिला बंधी हुई पड़ी थी । बिजली की गति से अजित उस स्थान पर जा पहुँचा । बन्दूक की तीन चार गोलियाँ मार कर शिकारी

अजित ने उस फिरंगी की छाती पर हत्या की । उस महिला के निकट पहुँचकर उसने व्यग्रता की आवाज़ में चिल्लाया, "मोहिनी" । अचानक अपना नाम सुनकर वह चौंक पड़ी । उसके मुँह से निकला - "अज्जी" । शिकारी ने उस अचेतनी महिला को अपनी भुजाओं में उठा लिया और उस जंगल में प्रविष्ट हो गया ।

समीक्षा

अंग्रेज़ों ने कई प्रकार से भारत का नाश करने का निश्चय किया था । भारत के कुटीर उद्योगों का नाश करना और बड़े बड़े कारखानों की शुरुआत करना इसका मार्ग था । इस कहानी में मिदनापुर के पास महीमपुर नामक एक गाँव है जो जुलाहों का प्रदेश है । महीन से महीन कपड़े तैयार करने में वे मशहूर थे । इस कहानी का नायक अजित महीमपुर का है । अंग्रेज़ों ने इस गाँव के लघु उद्योगों का नाश करने का निश्चय किया । मोहिनी अजित को इसकी सूचना देती है । अजित माता के साथ पूरब के जंगल में जाकर रहने लगा । दस वर्ष के बीच वह एक बड़ा शिकारी बना और उस प्रदेश का अधिकारी हो गया । वह मोहिनी की मोहक स्मृति में दिन काटता था । एक दिन उसने उस जंगल में फिरंगियों के दो तीन तम्बू और एक फिरंगी की ओट में एक भारतीय महिला को देखकर उसके पास दौड़ आया और फिरंगी की हत्या करके स्त्री की रक्षा की । वह मोहिनी थी । दोनों परस्पर पहचानकर चकित हो गये । कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए मोहिनी अपने गाँवमें अजित की प्रतीक्षा कर रही थी । अजित भी मोहिनी की प्रतीक्षा में था । मोहिनी यदि चाहती थी तो दूसरे एक सम्पन्न पुरुष की पत्नी बन सकती थी । लेकिन वह अजित केलिए स्वयं समर्पित रही । इसमें इन दोनों के परस्पर प्रेम की गहराई का परिचय हो जाता है ।

अजित और मोहिनी की कामना भी अंत में पूर्ण होती है । यह कहानी यौन भावना का ज्वलंत उदाहरण है साथ ही साथ कर्तव्य और वीरता का भी निदर्शन है । अजित और मोहिनी के क्रीड़ाओं के विरुद्ध महान देश प्रेम का उदाहरण है । यह कहानी स्वदेशप्रेम स्वदेशी चीज़ों का महत्व और प्यार की दृढता का उदाहरण' देती है । भारतीय सामाजिक पृष्ठभूमि में इस कहानी का बड़ा महत्व है क्योंकि भारतीय प्रेमी-प्रेमियों के पूर्वानुराग तथा तज्जन्य अनेक कठिन परिस्थितियों के झेलने का इसमें वर्णन हुआ है ।

ङ. भेंट

कहानी का कथ्य

इन्दुभूषण कालेज की शिक्षा केलिए काश्मीर से लाहौर आया एक दिन प्रोफेसर के साथ कुछ विद्यार्थी पिकनिक को निकले । उनके साथ कुछ विद्यार्थिनियाँ भी थी । कुछ छात्र साइकलों पर सवार होकर शालीमार बाग की ओर गए । उन्होंने साइकल पर एक लड़की को देखा । कुछ दूर और चलने के बाद उन्होंने देखा कि वह युवती अपनी साइकल के साथ पानी में गिर पड़ी । उसकी साड़ी जंजीर में फंसी थी । इन्दु ने शीघ्रता से युवती की साड़ी साइकल की पकड़ से छुड़ा दी । युवती को वहीं खड़ा करके इन्दु तांगा ले आया और उसे उस पर सवार करा दिया । उस युवती का नाम प्रभा था, वह लुधियाना के प्रसिद्ध डाक्टर की बड़ी कन्या थी । वह द्वितीय वर्ष में पढ़ रही थी । ग्रीष्म छुट्टी के लिए सारे छात्र अपने अपने घर गए । इन्दु छुट्टियों में एक बार गया जहाँ एक दिन इन्दु साँझ की सैर से वापस लौट रहा था कि प्रभा मिल गई जिसके माँ-बाप भी थे । तीन चार दिनों में प्रभा के परिवार से इन्दु का खूब हेलमेल हो गया । प्रभा के भाई बहिन सब उसे भाइजी कहकर पुकारने लगे । कुछ वर्षों के बाद प्रभा की शादी एक इंजीनियर से हुआ जो विलायत से लौटा आया युवक था । शादी को इन्दु भी गया था । एक दिन इन्दु ने प्रभा को चिट्ठी लिखी थी

प्रभा ने विस्मय से देखा कि चिट्ठी खुली हुई है । उसे अपने पति देवदत्त के व्यवहार पर बड़ा क्रोध हुआ । अगले ही दिन इन्दु को प्रभा की एक संक्षिप्त सी चिट्ठी मिली, जिसने उसके जीवन का रुख ही बदल दिया । इन्दु मुकुल अब लद्दाख के बर्फीली, निर्जन और सुनसान पर्वतों में अगस्त का अफसर है । उसने अभी तक विवाह नहीं किया है ।

समीक्षा

कालेज की पृष्ठभूमि में गठित इस कहानी में कालेज के विद्यार्थी विद्यार्थिनियों के बीच देखनेवाली यौन सम्बन्धी उत्सुकता इन्दु मुकुल और प्रभा के व्यवहार में देखने को नहीं मिलता । वे दोनों भाई बहिनों के समान जीवन भर प्यार करते रहते हैं । लेकिन गलतफहमी से वास्तव जीवन में बड़ा परिवर्तन हो सकता है । इस कहानी के मुख्य पात्र इन्दु मुकुल, प्रभा और उसके पति देवदत्त तीनों किसी न किसी प्रकार दुखी है । इन्दु मुकुल अपने सहपाठी प्रभा की एक विशेष परिस्थिति में सहायता करती है । इससे दोनों के बीच मैत्री बढ़ने लगी । भाई बहिन के समान वे परस्पर पत्र लिखते रहे । लेकिन शादी के बाद प्रभा के पति देवदत्त ने इन दोनों की मित्रता को संदेह की दृष्टि से देखती रही । यह जानने पर इन्दु मुकुल को बड़ी वेदना हुई । इस गलतफहमी से पीड़ित इन्दु मुकुल ने जीवन भर अविवाहित रहने का निश्चय किया । संदेह के कारण, शादी के बाद सुखपूर्ण जीवन बिताने में देवदत्त और प्रभा असमर्थ निकला । इस सन्देह से उठती वेदना से इन्दुमुकुल अस्वस्थ रहा । प्रभा, पति के व्यवहार पर रोती रहती है ।

"भय का राज्य" का नायक अजित और नायिका मोहिनी वैयक्तिक सुख सुविधा को राज्य की आज़ादी के आगे त्याग देती है। राज्य केलिए अजित जंगल जाकर फिरंगियों का नाश करता रहा। गाँव में रहनेवाली मोहिनी अजित की लौट आने की प्रतीक्षा में अविवाहित रह बूढ़ी बन गयी। अन्त में दोनों का मिलन भी हुआ। यह एक त्यागपूर्ण कहानी है।
"चोट" कहानी भी त्याग और वेदना की कथा कहती है। पुष्पा के पति देवदत्त अकारण पत्नी के मित्र और सहपाठी इन्दुभूषण पर सन्देह करता है। इस सन्देह से पुष्पा और देवदत्त का वैवाहिक जीवन शुष्क रहा और मित्र इन्दुभूषण अपने मित्र पुष्पा की वेदना से पीड़ित होकर अविवाहित रहता है।

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार की कहानियों में नारी पात्र और पुरुष पात्र दोनों तुल्य रूप से कष्टता बाँटते हैं। इन के पात्रों में यौन-भावना तो संतुलित और नैतिक रहती है। यौन जीवन में ये पात्र त्यागशील दिखायी पड़ते हैं। विद्यालंकार जी का यह कथन विचारणीय है - "मैं यहाँ सेक्स, अपराध और हिंसा के पाठकों की चर्चा नहीं कर रहा, जिनकी संख्या करोड़ों में है। इन पाठकों को पहले भी अच्छी कहानियों में दिलचस्पी नहीं थी, या यों कहना चाहिए कि कहानियों में भी वे सेक्स, अपराध और हिंसा ही चाहते थे[1]।"

---

1. मेरी प्रिय कहानियाँ - चन्द्रगुप्त विद्यालंकार - पृ.9

5. इलाचन्द्रजोशी की कहानियाँ

क. क्रय-विक्रय

कथा सार

मालिनी राजेन्द्र की पत्नी है । वह मामूली घर की अशिक्षित युवती है । मालिनी के पिता की अत्यन्त दयनीय दशा देखकर और एक गरीब युवती समझकर राजेन्द्र ने उसकी शादी की । विवाह के बाद, मिस्टर सिंह की सहायता से राजेन्द्र को नौकरी मिली । राजेन्द्र अपनी पत्नी की किसी भी माँग की उपेक्षा नहीं करता था । लेकिन उसके व्यवहार से मालिनी सन्तुष्ट नहीं थी । एक दिन राजेन्द्र मालिनी को कम्पनी बाग में शाम के छुटपुटे में मिस्टर सिंह के साथ छोड़कर स्वयं किसी काम के बहाने बाहर गए । लेकिन उस दिन उसका पतन नहीं हुआ । दूसरी बार और तीसरी बार भी मालिनी ने अपने को मिस्टर सिंह से बचाया । नारी के कोमल हृदय को समझना उसका उद्देश्य नहीं था । अपनी पदोन्नति के लिए राजेन्द्र ने मालिनी को सिंह और अन्य कुछ विशिष्ट अफसरों के बीच कर दिया । पचास रुपये मासिक वेतन पानेवाले क्लर्क की हैसियत से पाँच वर्ष के अन्दर राजेन्द्र पाँच सौ रुपये वेतन पानेवाला अफसर बन बैठा । मालिनी यह जानकर आश्चर्य प्रकट करती है कि यद्यपि वह दूसरे पुरुषों के साथ अनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित किए हुए है, तो भी राजेन्द्र के मन में उसी ईर्ष्या का भाव लेशमात्र भी उत्पन्न नहीं हुआ । सबसे बड़ी दिल्लगी की बात यह हुई कि सब कुछ जानते हुए भी वह अपनी पत्नी के साथ दाम्पत्य सम्बन्ध स्थापित करता रहता है । एक दिन मालिनी सुरेन्द्र नामक एक साधारण युवक से बात करते हुए देखकर राजेन्द्र उसे सतीत्व के सम्बन्ध में संकेत करता है । पाँच साल का उसका बच्चा दूसरे आदमी का था, यह जानकर भी यही राजेन्द्र अब सन्न नहीं था । इसलिए अपने पति राजेन्द्र की बुरी चित्तवृत्ति से ऊबकर मालिनी, सुरेन्द्र नामक युवक के साथ घर से भाग निकलती है ।

समीक्षा

जोशीजी की कहानी "क्रय-विक्रय" में एक युवती पत्नी मालिनी, पति की प्रेरणा से अपने शरीर का क्रय-विक्रय करती है । मालिनी एक निरीह और अशिक्षित युवती है । पति के साथ सुखपूर्ण जीवन की कल्पना वह करती थी । लेकिन पद की उन्नति हेतु पति राजेन्द्र उसे बेचने लगा । शादी के समय राजेन्द्र पचास रुपये वेतन पानेवाला क्लर्क था, पाँच वर्ष के अन्दर पाँच सौ रुपये वेतन पानेवाला अफसर बन गया । सबसे पहले, मालिनी को उसने अपने आफीस के मिस्टर सिंह को समर्पित किया । दो तीन बार मालिनी सिंह से दूर रहने का प्रयत्न कर गयी । लेकिन,बाद में उसको वशंवदा होना पड़ा । फिर, जौहरी के लड़के को और अन्य बड़े धनी पुरुषों को समर्पित करके कार, बंगले आदि मालिनी अर्जित करती है । मालिनी को अनेक प्रकार के प्रलोभनों से इस घृणित कर्म की ओर लाने का प्रयत्न राजेन्द्र करता रहा मालिनी मुखर इस कुकर्म का विरोध करती थी । मालिनी का यह कथन इस संदर्भ में उल्लेखनीय है - "तुम मुझे जो अच्छे कपड़े पहनाते रहे, प्रतिष्ठित समाज के स्त्री-पुरुष" - खासकर पुरुषों से मिलाते रहे, इसका कारण क्या है । शुरुआत में यह बात भले ही मेरे समझ में न आई हो पर क्या तुम आज भी मुझे उसी तरह अच्छी समझते हो, जैसा कि मैं ब्याह के समय थी ? मुझपर भी ऐसा न समझना ।" मालिनी की वेदना और पति के घृणित व्यवहार की अवहेलना भी इन शब्दों से प्रकट होती है । किन्तु मालिनी यह जानती थी कि वह पति का गुलाम है और पति की रुचि के अनुसार चलना ही पत्नी का धर्म है । धीरे-धीरे पति के कुकर्म की अवहेलना वह करने लगी । वह अपने इच्छानुकूल दूसरे एक दरिद्र युवा के साथ भाग खड़ी होती है । इसमें कथाकार जोशीजी ने ऐसे एक नैतिक पति का चित्रण किया है जो अपनी पत्नी को पढ़ाने और धनोपार्जन का साधन बना लेता है ।

ख· पतिव्रता या पिशाची

कहानी का कथ्य

सूरजप्रसाद एक मिल में नौकर है । उसकी पत्नी शान्ती बीस वर्ष की सुन्दर युवती है । सूरजप्रसाद को शादी के बाद आठ वर्ष तक काम की खोज में इधर उधर घूमना फिरना पड़ा । नौकरी की खोज करके वह कानपुर आया और काम में प्रवेश करने के बाद माँ और बीवी को यहाँ ले आया । माँ, कुछ दिन के अन्दर लौट गयी । सूरजप्रसाद फीमेल इमान्सिपेशन का पक्षपाती था । पति की छोटी सी छोटी आवश्यकता पर भी शान्ती पूरा ध्यान देती थी और प्रतिक्षण सच्चे मन से उन्हें प्रसन्न रखने की चेष्टा करती थी । मुरलीमोहन नामक सत्रह साल का एक लड़का, सूरजप्रसाद का दूरस्थ सम्बन्धी, उनके यहाँ आकर रहने लगा । वह कानपुर के क्रिश्चियन कालेज में पढ़ने केलिए आया था । शान्ती की चंचल प्रकृति ने इस उच्छृंखल लड़के का मन विचलित कर दिया था कि वह एक मिनट के लिए भी उसका साथ छोड़ना नहीं चाहता था । एक दिन आफीस से लौटते समय सूरजप्रसाद ने देखा कि उसकी पत्नी वस्त्रहीन है और मुरली शान्ती का पाँव मलता रहा है । आज पहली बार सूरज ने पत्नी के प्रति रूखा व्यवहार प्रकट किया और एक दिन इस प्रकार दफ्तर जाने का बहाना करके घर से गया और कुछ समय के अन्दर लौट आया तो उन दोनों को अपने घर में बातें करते देखा । मुरली जिस ढंग से बातें कर रहा था, उससे स्पष्ट था कि वह संसार के दुष्कर्मों से केवल परिचित ही नहीं है, उनका अनुभव भी उसे हो चुका है । सूरजप्रसाद ने इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि शान्ती ऐसी निर्लज्जता के साथ परपुरुष से बातें कर सकती है । शान्ती को एक दिन मालूम हुआ कि उसके गर्भ रह गया है । पुत्र की इच्छा उसे बहुत दिनों से थी । बहुत देर में सूरज को पत्नी की गर्भावस्था का हाल मालूम हुआ । शान्ती ने एक पुत्र को जन्म

शिशु के साथ सूरज प्यार प्रकट करता था । शान्ती ने जो सोचा था वह ठीक निकला कि पुत्र की आकृति बिल्कुल मुरली से मिलती जुलती है । शान्ती ने निर्मम होकर उस बच्चे का गला घोटकर मार डाला । उसको आजीवन जेल का दण्ड भोगना पड़ा । सूरजप्रसाद एकदम पागल हो गया । वही उसकी मृत्यु हुई । शान्ती किसी कारण से जेल से छोड़ दी गयी । अब वह अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट तथा प्रसन्न और अधिक निर्लज्ज हो गयी है । अब तो वह कुटनी का पेशा करती है ।

समीक्षा

जोशीजी की कहानी "पतिव्रता या पिशाची" विवाहेतर विकृत यौन भावना का उदाहरण है । इस कहानी का नायक सूरज नपुंसक है आठ वर्ष तक उसकी पत्नी शान्ती, सूरज से बच्चे की प्रतीक्षा करती रही । इसी अवस्था में दूरस्थ बन्धु मुरली मोहन कानपुर के एग्रिकल्चरल कालेज में पढ़ने केलिए आया । वह सूरज के घर में रहता था । शान्ती चंचल एवं सुन्दर थी जो उस लड़के से आकर्षित हो गयी । उस उच्छृंखल लड़के के सान्निध्य से शान्ती गर्भिणी बनी । सूरजप्रसाद के मन में सन्देह फैलने लगा । एक दिन आफीस से लौटते समय सूरज ने यथार्थतः अपने सामने ऐसा दृश्य देखा । सूरज को पहली बार अपनी पत्नी पर क्रोध हुआ । और एक दिन भी सूरज को ऐसा अनुभव हुआ । शान्ती के व्यवहार से सूरज को बिल्कुल दुःख हुआ । शान्ती ने एक बच्चे को जन्म दिया । पश्चात्ताप के कारण उसने उस बच्चे की हत्या की । उसे प्राणदण्ड मिला । सूरज एकदम पागल हो गया और आगे चलकर उसकी मृत्यु हुई । सूरज का फोबिक इमाजिनेशन का पक्षपाती बनना, और नपुंसक होना, शान्ती का चंचल और युवती होने के साथ ही साथ मुरली नामक दूरस्थ बन्धु लड़के को घर में जगह देना आदि इस कहानी के यौन-भाव के वैकृत के प्रमुख कारण है ।

ग· चरणों की दासी

कहानी का कथ्य

डॉ· देवकीनन्दन पाण्डेय की पुत्री कामिनी अत्यन्त बुद्धिमती और धृष्ट स्वभाव के होने के कारण अपने विद्यालय की लड़कियों की मुखिया रही । वह बिना किसी संकोच और घबराहट के युवकों के साथ बेधड़क बातें किया करती थी । वह अँग्रेज़ी अच्छी तरह जानती थी । विनोदशङ्कर शर्मा नामक युवक से उसका विशेष परिचय था । विनोद स्त्री पुरुष के समानाधिकार का पाठ कामिनी को बार बार पढ़ाया करता था । कामिनी विनोद से प्यार करने लगी । एक दिन कामिनी ने लताकोमल हाथों से विनोद के दोनों हाथों को पकड़ लिया और गद्गद् स्वर में कहा -"मैं और किसी को नहीं चाहती ।" लेकिन कामिनी के माँ-बाप कट्टर धर्मावलम्बी थे । इसलिए ज्योतिश्चन्द्र त्रिपाठी नामक दूसरे युवक से कामिनी का विवाह हुआ । वह लन्दन में डाक्टरी केलिए पढ़ता था । ज्योतिश्चन्द्र सुन्दर और सुसंस्कृत युवक था । शादी के बाद पत्नी के साथ ज्योतिश्चन्द्र अपने घर लौट आया । घर के सब भाई और बन्धु उसके स्वागत केलिए उपस्थित थे । कामिनी की जेठानी अपने देवर से बोली - "मैं तुम्हें बधाई देता हूँ लला ।" दरवाज़े पर से उत्तर मिला - मुझे बधाई देने में कोई लाभ नहीं है, भाभी । अम्मा को द' मैं ने तो सिर्फ कर्तव्य का पालन किया है । मैं ने तो सिर्फ कर्तव्य का पालन किया है-।- पति का यह कथन काँटे की तरह उसके हृदय में गड़ गया था । कामिनी एक हफ़्ते के बाद घर लौट आयी । उसने अपने स्वामी को एक पत्र लिखा जिसमें अपनी वेदना प्रस्तुत की गयी थी । इस पत्र द्वारा कामिनी अपने को प्रियतम की चरणों की दासी समझकर उसकी सेवा पूजा करने की अभिलाषा प्रकट करती थी । पत्र पढ़ने पर ज्योतिश्चन्द्र का संयम टूट गया और उसने पत्रोत्तर में अपने को कामिनी के चरणों का दास समझकर उससे मिल

उत्कट इच्छा प्रकट की, इस पत्र को पढ़ने पर अदम्य आनन्द से कामिनी की आँखें भर आयीं ।

समीक्षा

कामिनी का विवाह ज्योतिषचन्द्र से सम्पन्न हुआ । विवाह के बाद ज्योतिषचन्द्र डाक्टरी की पढ़ाई की पूर्ति केलिए गया । सुशिक्षित और बुद्धिमती रहने पर भी कामिनी विरह से पीड़ित, प्यार केलिए तरसती रहती है । कामिनी ने एक बार अपनी वेदना की पत्रों में सूचना दी और प्रियतम के चरणों की दासी मानकर उनकी सेवा की आशा प्रकट की । उस पत्र को पढ़ने पर ज्योतिषचन्द्र का दिल गलने लगा । वह घर लौट आया इस कहानी में पति की सेवाके लिए तरसनेवाली पत्नी की वेदना कही गयी है यह कहानी वैवाहिक जीवन के असाधारण यौन भावना का दृष्टान्त है ।

"रूप-विक्रय" नामक कहानी में राजेन्द्र अपनी पत्नी मालती को पदोन्नति और धनोपार्जन केलिए बड़े बड़े अफसरों के आगे समर्पित करता है व्यभिचार न पसन्द करनेवाली पत्नी, पति की निरन्तर प्रेरणा से सतीत्व का विक्रय करके धन कमाती और अन्तत: इस कुकर्म से ऊबकर सुरेन्द्र नामक दरिद्र युवक के साथ भाग जाती है । "पतिव्रता या पिशाची" में पति सुरजप्रसाद से पत्नी शान्ती आठ वर्ष तक बच्चे की प्रतीक्षा करती रही । लेकिन पति को नपुंसक जानकर दूरस्थ बन्धु मुरलीमोहन नामक युवक से गर्भिणी बनती है । बाप की चिन्ता से पीड़ित वह बच्चे की हत्या करके जेल जाती है । जोशी जी की इन कहानियों में स्त्री के पत्नी और वेश्या रूप पर प्रकाश डाला गया है । "चरणों की दासी" का पतिव्रता पत्नी कामिनी पढ़ने को दूर गए हुए पति ज्योतिषचन्द्र के सान्निध्य केलिए तरसती हुई दिखाई पड़ती है । कामिनी अपने पति को सर्वस्व समझकर सदा उसके चरणों की सेवा केलिए स्वयं समर्पित करत है । इसमें पतिव्रता पत्नी का उत्कृष्ट उदाहरण दर्शनीय है ।

इलाचन्द्र जोशी मनोवैज्ञानिक कहानियों के रचयिता है । ऐतिहासिक दृष्टि से स्वातन्त्र्य युग के समस्त कहानिकारों में जोशीजी प्रथम कहानीकार है जिन्होंने इस प्रवृत्ति को लेकर कहानी लिखना आरंभ किया । डा॰ देवराज उपाध्याय के शब्दों से हमें सहमत होना पड़ता है कि मनोवैज्ञानिक धारणा का प्रभाव यह हुआ है कि जहाँ प्रेमचन्द तक कथा विचार तक ही सीमित थी वहाँ अब उसका प्रारंभ ही वैचारिक जीवन से होता है, जैनेन्द्र, अज्ञेय और जोशी की कहानियाँ इसके प्रमाण है ।"

---

1. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान -
- डॉ॰ देवराज उपाध्याय - पृ॰333

6. <u>अश्क की कहानियाँ</u>

क. <u>चट्टान</u>

<u>कहानी का कथ्य</u>

शंकर एक सुशिक्षित परिवार का सदस्य है । शंकर के भाई ने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और जनता की सेवा केलिए योग-साधना का छोटा सा आश्रम, दवाखाना, स्कूल आदि खोला। भाई साहब के इन कार्यों से भाभी को कोई दिलचस्पी न थी । भाई अब भी नियमित रूप से दो तीन दिन एकान्तवास करता था । लेकिन इन दिनों भाभी को ज़रूर ही कुछ न कुछ कष्ट हो जाता, दिल धड़कने लगता अथवा सिर में पीड़ा होती शंकर को एक या दो बार उसका सिर दबाना पड़ता था । किन्तु उस दिन जब भाभी को फिट आया तो शंकर हैरान रह गया । शाम हो गयी थी और भाई साहब आये न थे । वह भागकर भाई साहब के कमरे से दवाई की शीशी उठा लाया और एक चम्मच उसने भरा । लेकिन भाभी ने उसका हाथ झटक दिया । दवाई गिर गयी और वह तड़पती रही । उसने फिर लिहाफ को ऊपर करके भाभी के वक्ष को हाथ से दबाया । शंकर चारपाई के पास घुटनों के बल बैठ गया और उसने दोनों हाथ भाभी के दिल पर रख दिये । दबाते दबाते वह इतना झुक गया कि उसका अपना सीना धक् करता हुआ भाभी के वक्ष पर बिछ गया । .... एक दिन भाई साहब पास के गांव में रोगी को देखने केलिए गए हुए थे । शाम का समय था । शंकर अपने कमरे में पढ़ रहा था, भाभी आकर बैठी रही । फिर चारपाई पर उसके पास लेट गयी । शंकर ने कनखियों से एक बार उसकी ओर देखा । ब्लाउज़ का बटन खुला हुआ था । वह कुछ मोटा सा हो गया था । पुस्तक उसके हाथ से गिर गई और उसकी दृष्टि भाभी के सुन्दर अंगों पर गड़ने लगी भाभी निस्पन्द, निष्प्राण, अचेत सी पड़ी थी । उसे उन प्यासे ओठों को चूमने की आशा हुई । चूमने को वह झुका । उस समय भाभी ने आलिंगन दी

वे ही प्यासी प्यासी उदास उदास अतृप्त कामना भरी आँखें । उन्हीं में देखता हुआ वह और झुका ...... । लेकिन वह रुक गया । झुका और उठा । भाभी के ऊपर से गुजरता हुआ, दरवाज़ा खोलकर वह निकल गया । तेज तेज चलने लगा, फिर भागने लगा ।

समीक्षा

शंकर की भाभी को पति का सान्निध्य बहुत कम ही मिलता शंकर के भाई तो योग साधना में परिचित, स्वयं नियन्त्रण रखने में समर्थ और समाज सेवक है । भाई दूसरों की सेवा में तत्पर रहने के कारण घर में हमेशा नहीं रहता था । उसकी पत्नी तो रोगिणी थी । वह कभीकभी सिरदर्द और दिल की धड़कन से पीड़ित रहती तो शंकर उसकी सहायता करता था, उसकी आज्ञा का पालन करता था । हर दिन भाभी को कुछ न कुछ कष्ट अवश्य होता था । एक दिन भाभी को फिट आया, घर में कोई नहीं था । उसने भाभी *फिर* दवा दी फिर भाभी के वक्ष को हाथ से दबाया । दूसरे एक दिन शंकर की चारपाई पर उसके पास भाभी आकर लेट गई । शंकर की दृष्टि भाभी पर पड़ी । ब्लाउज़ का बटन खुला हुआ था । वह कुछ भींगा सा हो गया था । और उन प्यासे होठों को चूमने की आशा हुई । और वह झुका । लेकिन वह रुक गया । दरवाज़ा खोलकर बाहर आया । इस प्रकार परिस्थितिवश शंकर के मन में भाभी के प्रति कभी कभी यौन सहज भाव जाग उठता था । लेकिन शंकर ने संयम की सीमा को तोड़ा नहीं था । भाई के समान शंकर भी विकारों पर नियन्त्रण रखता था वह कर्तव्य की महिमा जानता था । वातावरण अनुकूल रहने पर भी शंकर गलती करने से हट जाता था । शंकर के लिए वह यौन सहज आकांक्षा और उत्कंठा का समय था फिर भी वह दुराचारी नहीं निकलता । अश्क जी ने इस कहानी के द्वारा संयमित देवर का चित्रण प्रस्तुत किया है ।

७. वह मेरी मंगेतर थी

कहानी का कथ्य

सारा दिन गायें चराना और सन्ध्या को दूध दुहकर संजौली जाकर उसे बेच आना उस युवक का काम था । संजौली जाते समय मार्ग में मुर्तु नामक एक युवती से उसका परिचय हुआ । युवक ने यह समझ लिया कि उसे भी दूध बेचने संजौली जाना है और अन्धेरा हो जाने से वह तनिक डर भी रही है । संजौली पहुँचते पहुँचते दोनों घुल मिल गये और लौटते समय दोनों इकट्ठे ही लौट आये । युवक, मुर्तु को घर तक छोड़कर अपने गाँव को चला गया । दूसरे दिन भी पहले दिन की भाँति फिर दोनों इकट्ठे संजौली गये, फिर उसे घर तक छोड़कर उसी प्रकार उल्लास से वापस आया । इसके बाद दोनों प्रायः रोज साथ ही गायें चराते साथ ही दूध लेकर संजौली जाते और साथ ही वापस आते । उनकी प्रेम की बात गाँव में फैल गयी । युवक के भाई और मुर्तु के माँ-बाप ने उनकी सगाई कर दी । दूध देने को अब उसका छोटा भाई जाता था । इन्हीं दिनों सीपुर का मेला आ गया । मेला में वह युवक मुर्तु की प्रतीक्षा करता था । मुर्तु की पड़ोसिन तुलसी की दुकान में मुर्तु और युवक की भेंट हुई । युवक ने मुर्तु का आलिंगन किया और अपनी रेशमी रूमाल उसकी जेब में ठूस दिया । मुर्तु भाग निकली । वह युवक मेला में मुर्तु की प्रतीक्षा में घूमता फिरा । उसने देखा कि एक पुरुष मुर्तु को रोक रहा है और प्रेम भरी दृष्टि से देख रहा है और इस प्रेम में वासना का पुट अधिक है । वह कोटि का दारोगा था । युवक ने एक हाथ से मुर्तु को उसके पंजे से छुड़ाया और दूसरे से ज़ोर का थप्पड़ दारोगा के मुँह पर रसीद किया । उस युवक पर मेले से एक स्त्री को भगाने का प्रयास करने और सिपाहियों को उनके कर्तव्य से रोकने तथा पीटने का अभियोग लगाया गया ।

उस युवक को डेढ साल कैद की सजा मिली । सजा भोगने के बाद अपनी पेट की ज्वाला ने उस युवक को धोबीमंडी में आ बसने को बाध्य किया । मूर्तु ने अपने प्रेमी के सामने उस रेशमी रूमाल को रख दिया और रोती हुई बोली - "आज तीन साल से मैं ने इसे संभालकर रखा है, परन्तु यह पवित्र रूमाल अब मुझ जैसी अपवित्र नारी के पास नहीं रहना चाहिए । इसे अपनी नववधू को भेंट कर देना ।"

समीक्षा

"वह मेरी मंगेतर थी" एक असफल प्रेम की कहानी है । इस कहानी का नायक युवक और नायिका मूर्तु दूध बेचने को संजौली जाते समय परिचित हो गये । दोनों पास पड़ोस के गाँव से आते थे और दोनों एक ही जगह में दूध बेचते थे । परिचय बढ़ने पर दोनों प्राय: रोज साथ ही गायें चराते साथ ही दूध लेकर संजौली जाते और साथ ही वापस आते थे । इस प्रकार युवक और मूर्तु का परिचय प्रेम में परिणत हो गया । मूर्तु और उस युवक के माँ-बाप ने उनकी शादी कराने का निश्चय किया । लेकिन इसी बीच सीपुर का मेला आया । इसी मेले में युवक ने मूर्तु को एक रेशमी रूमाल दिया और उसे आलिंगन में आबद्ध किया । मेले में कोटि के दारोगा ने मूर्तु को अकारण तंग किया । इससे उस युवक ने क्रुद्ध होकर दारोगा को मारा । युवक को डेढ साल की सजा मिली । मूर्तु तीन साल तक उस युवक की प्रतीक्षा करती रही अपने सतीत्व को लुटाकर उसके घर जाना मूर्तु नहीं चाहती थी । इसलिए वह घर छोड़कर धोबीमंडी में आ बसने लगी । मूर्तु ने तीन साल से अपने पास संभालकर रखा हुआ रूमाल लेकर उस युवक को लौटा दिया और परपुरुष के स्पर्श से अपवित्र समझकर अविवाहित रहने का निश्चय किया । युवक और मूर्तु के बीच परिचय बढ़ने के बाद दोनों का साथ साथ दूध बेचने और गायें चराने को जाना और युवक से मूर्तु का रूमाल स्वीकार करना आदि उनके बीच के बढ़ते प्रेम का प्रमाण है । यथार्थत: इस कहानी में भी असाधारण प्रेम की झलक आई है ।

ग. नज्जियाँ

कहानी का कथ्य

नज्जिया का जन्म और पालन पोषण भारत में हुआ था । इसलिए उसे स्वभावतः भारतीय गीतों और नृत्य में दिलचस्पी थी । नज्जियाँ को भारतीय संगीत पर उतना ही अधिकार था जितना अरबी संगीत और नृत्य पर । वह अरब से बागदाद पहुँची । वहाँ रामरतन हसरत से उसका परिचय हुआ । हसरत बागदाद में सैनिक था । नज्जियाँ और हसरत परस्पर मिलते थे । बातों बातों में नज्जियाँ ने अपने सिर को हसरत के कन्धे पर रख दिया और हसरत ने अपनी बाँह उसके गले में डाल दी । हसरत अपने कैंप में आया । उसे रात भर नींद न आयी । हवा में किला बनाते बनाते रात बीत गयी । अगले प्रभात में हसरत भारत की ओर जाने वाले सैनिकों को विदा देने को गया । उसी दिन हसरत की वापसी का भी आदेश आ गया । उसी दिन वह नज्जिया के घर गया । उन्होंने भारत लौटने का प्रोग्राम बनाया । जब हसरत लौटने की तैयारियाँ करने लगा तो नज्जियाँ ने उसका कन्धा दबाकर कहा, "हसरत तुम्हारे घरवाले पूछेंगे - यह कौन है, तो क्या जवाब दोगे ?" हसरत ने कुछ उत्तर दिया नहीं । दूसरे दिन हसरत को एक पत्र मिला जिसमें लिखा था - "हसरत तुम भी मुझे इस हैसियत से भारत नहीं ले जाना चाहते । तुम्हारे हृदय में भी एक ऊँचे घराने की युवती से विवाह करने की आकांक्षा है, एक नर्तकी के लिए वहाँ कोई स्थान नहीं । तुम भी मेरे रूप से प्रेम करते हो, मेरी कला से नहीं, इसलिए विदा ।"

समीक्षा

मञ्जियाँ एक नर्तकी है । नृत्य और गीत में मञ्जियाँ का प्यार है । परिस्थितिवश मञ्जियाँ का इसरत से परिचय हुआ । उनके बीच प्यार बढ़ता रहा । दोनों अभिन्न रहना चाहते थे । इसरत सैनिक था । इसरत को भारत वापस आने का समय आया । मञ्जियाँ को भी साथ लाने का निश्चय किया गया था । लेकिन मञ्जियाँ के यह प्रश्न - इसरत, तुम्हारे घरवाले पूछेंगे - यह कौन है, तो क्या जवाब दोगे ? - के आगे इसरत निरुत्तर रहा । सैनिक इसरत को नारी की ही ज़रूरत थी । इसरत को मञ्जियाँ के शरीर से प्यार है, उसकी कला से नहीं । मञ्जियाँ शरीर से बढ़कर कला को महत्व देती है । इस प्रकार दोनों अलग हो जाते हैं । यह कहानी भी विचित्र यौन भावना का उत्तम् उदाहरण है ।

ब· निशानियाँ

कहानी का कथ्य

सरला साधारण परिवार के क्लर्क पिता की पुत्री है । जमना और उसके पति के कमरे से सटे हुए दो कमरों में सरला पिता के साथ रहती है । सरला स्कूल में पढ़ती है । "ज़रा यह प्रश्न तो समझा दीजिए" की प्रार्थना के साथ जमना के पति के कमरे में सरला आयी । उसके हाथ में एक खुली हुई किताब थी । सवाल समझाता गया और कभी कभी सरला के गोरे हाथों और मेंहदी से रंगे हुए नाखूनों को जमना के पति देखता रहा । सरला ने परीक्षाएं पास कर लीं । उसकी सगाई भी हो गयी । किन्तु जमना का पति अपने हृदय के कुम्हलाते हुए भाव को न प्रकट कर सका ।

सरला की शादी का दिन आया । उसकी विदायी होनेवाली थी । स्त्रियाँ दान दहेज की तैयारियों में व्यस्त थीं । जमना के पति कमरे में बैठा था, एक टक उस डिबिया को देख रहा था । सरला की विदाई में कोई ईंट छूटा रह गया होगा कि वह वहाँ आयी । जमना के पति ने पूछा, "क्या दूँ तुम्हें ? मेरे पास तुम्हारे योग्य कुछ हो भी ।" "कुछ क्यों नहीं, सब कुछ है" कहकर उसकी चंचल दृष्टि मेज पर पड़ी हुई संगमरमर की डिबिया पर जम गयी । "बस ! मैं यह डिबी कहते हुए डिबिया को सीने से लगाये वह भाग गयी ।

समीक्षा

जमना और उसके पति के घर के समीप सरला माँ-बाप के साथ रहती है । हर दिन सरला और जमना के पति परस्पर मिलता था लेकिन कुछ न बोलता । एक दिन एक प्रश्न सुलझाने के लिए जमना के पति के कमरे में सरला गयी । सरला से जमना का पति प्यार करता था । इसलिए प्रश्न समझाता रहा और सरला के सौन्दर्य को देखता रहा । सरला की शादी हो गयी । उसकी विदाई का समय हो गया । एक क्षण के लिए सरला जमना के पति के कमरे में आयी । जमना के पति ने सबसे सुन्दर संगमरमर की डिबिया लेकर सरला को दिया । सरला और जमना के पति परस्पर चाहते थे, लेकिन वे यह अच्छी तरह जानते थे कि उनका अधिकार बहुत सीमित है और अनुकूल अवसर बहुत कम है । जमना के पति और सरला के बीच प्यार के निशानी के रूप में यह संगमरमर की डिबिया है । इस कथा में मर्यादित योग भावना का चित्र हमें मिल जाता है ।

९. जुदाई की शाम का गीत

कहानी का कथ्य

राजरानी एक सम्पन्न परिवार की युवती है । वह पिता के साथ लाहौर से कपिलपुर आयी । दो महीने के बाद उसके पिता की मृत्यु हुई और वह अकेली रहने लगी । वह अच्छी तरह हारमोनियम बजाती थी । उस गाँव में माधो नामक एक सुन्दर युवक था जो बाँसुरी बजाने में बहुत समर्थ है । उस गाँव में मिन्नो नामक एक सीधी सरल पहाड़ी युवती थी । वह गायें चराया करती थी और माधो भी उसके साथ पहाड़ की पगडंडियों पर ढोरें चराता फिरता था । मिन्नो उसे बहुत चाहती थी । कुछ दिनों से माधो को मिन्नो के साथ मिलने का अवसर नहीं मिला था । मिन्नो के पिता ने उसे माधो जैसे बेकार युवक के साथ घूमने फिरने से रोक दिया था । राजरानी ने किसी न किसी तरह माधो को अपने यहाँ नौकर रख लिया । मिन्नो की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा । उसे माधो से मिलने की आज्ञा मिल गयी । किन्तु अब माधो का दिल उसके काबू से निकल चुका था । उस पर अब राजरानी का अधिकार था । मिन्नो का स्थान अब राजरानी ने ले लिया था । मिन्नो ने यह सुना कि माधो और राजरानी दोनों शादी करनेवाले हैं । लेकिन मिन्नो की प्रार्थना के अनुसार माधो उसके साथ एक सैर के लिए उस जगह गया जहाँ उन्होंने प्रेम के दिन गुजारे थे । वहाँ आने पर मिन्नो ने माधो से इन पहाड़ियों का प्रसिद्ध विरह गीत सुनाने की प्रार्थना की । "गिरिजा नामक लड़की से रमिया नामक युवक प्यार करता था । छमछम से कगी नामक एक विधवा ने रमिया को अपने ओर आकर्षित कर लिया । फिर भी गिरिजा की प्रार्थना के अनुसार उन दोनों ने उस पहाड़ी प्रदेश में एक दिन काटने का निश्चय किया जहाँ दोनों आलिंगनबद्ध होकर उस खड्ड के गहरे अन्धकार में कूद गये ।" इस आशय का गीत गाकर मिन्नो और माधो आलिंगनबद्ध होकर उस खड्ड के गहरे अन्धकार में कूद पड़े ।

समीक्षा

इस कहानी में प्रेम का सुन्दर चित्रण दर्शनीय है । इसमें यह दिखाने की चेष्टा की गई है कि धन-दौलत तो प्रेम के आगे तुच्छ है । इस कहानी के नायक और नायिका ग्रामीण वातावरण से आनेवाले और गीत गाने में समर्थ हैं । माधो गीत गाते गाते उस पहाड़ी प्रदेश में घूमता फिरता था । मिम्मो गायें चराने को वहाँ आती थी । दोनों प्रेम के जाल में फँस गये माधो को राजरानी के घर में कुछ काम मिला और राजरानी और माधो को कुछ निकट आने का अवसर प्राप्त हुआ । किन्तु अब माधो का दिल उसके काबू में नहीं था । उस पर अब राजरानी का अधिकार बढ़ने लगा । मिम्मो का स्थान अब राजरानी ने ले लिया । मिम्मो की प्रार्थना के अनुसार माधो उसके साथ एक सैर के लिए उस जगह गया जहाँ उन्होंने प्रेम के दिन गुज़ारे थे । वहाँ उस पहाड़ के प्रसिद्ध विरह गीत गाकर उसके नायक और नायिका के समान आलिंगनबद्ध होकर उस खड्ड के गहरे अन्धकार में वे कूद पड़े । इस प्रकार माधो और मिम्मो की इच्छा सदा के लिए सफल हो जाती है ।

ब. पाप का आरोप

कहानी का कथ्य

लज्जा के पति मास्टरजी बी.ए. हैं । वे कुछ दिनों जिला बोर्ड गर्ल्स स्कूल की हेडमिस्ट्रेस को अंग्रेज़ी पढ़ाने गए जो एक विधवा है । मास्टरजी हेडमिस्ट्रेस के यहाँ अधिक से अधिक समय बिताने लगे । मास्टरजी के पास अंग्रेज़ी पढ़ने को आनेवाले युवक मनमौजी हँसमुख सौ जवान था, उससे लज्जा हिन्दी सीखने लगी । लज्जा को यह जानने में अधिक समय न लगा कि उसके पति बीबीजी के साथ सोता है । एक दिन यह भी लज्जा के कानों में पहुँचा कि

वे "दिलकुश" होटल में हैं और उन्होंने रात भर के लिए एक कमरा लिया है । बलवंत के निर्देश से लज्जा "बुकम" परीक्षा की तैयारी करने लगी । कई दिनों से मास्टरजी अपनी पत्नी के पास नहीं आते थे भोजन भी यहाँ नहीं करते थे । इसी बीच एक दिन बलवंत ने लज्जा से अपना प्यार प्रकट किया । दोनों प्यार की गहराइयों तक उतर गए थे, दोनों एक हो गए थे । एक दिन मास्टर जी ने कुछ ज़रूरी कागज लेने आये । अब लज्जा को भविष्य की चिन्ता होने लगी । लज्जा ने खामोशी से अपने जेवरात और रुपयों की गठरी सम्भाले हुए सीढ़ियों से उतरी । बलवंत पहले ही से प्रतीक्षा कर रहा था । दोनों "पवित्र" होटल चले । समीप के दिलकुश होटल से आनेवाली बिजली के मध्यम प्रकाश में उसने देखा कि "वे" और "बीबीजी" आ रहे हैं । उन्होंने परस्पर देख लिया । मास्टरजी और बीबीजी दिलकुश होटल गए और लज्जा बलवंत के साथ पवित्र होटल गए ।

समीक्षा

"पाप का आरंभ" नामक यह कहानी प्रतिकार की छाया में चलती है । मास्टरजी पत्नी लज्जा के साथ सुखपूर्ण जीवन बिताते थे । उस समय मास्टरजी एक हेडमिस्ट्रस को अंग्रेज़ी ट्यूशन देना शुरू करते हैं । दोनों घनिष्ठ हो गए और यह जानने पर मास्टरजी की पत्नी लज्जा, मास्टरजी के छात्र बलवंत से प्यार करने लगी । विधवा हेडमिस्ट्रस को एक पुरुष से संपर्क और सम्बन्ध निःसंदेह आवश्यक था । मास्टरजी हेडमिस्ट्रस के यहाँ अधिक से अधिक समय बिताने लगे । लज्जा यह जान गई कि मास्टरजी और बीबीजी एक ही बिस्तर पर सोए हुए थे और बीबीजी का हाथ उनके गले में पड़ा था । और दिलकुश होटल में वे दोनों रात काटने को जाते थे । लज्जा बहुत उदास हो गयी । एक दिन मास्टरजी ज़रूरी कागज लेने आये ।

इस पर सज्जा बहुत चिन्तित हो गयी । एकान्तता से तंग आकर और एक पुरुष के सान्निध्य से प्रभावित होकर सज्जा ट्यूशन छात्र कमलेश से परिचित हो गयी और उसके पीछे भाग निकली । यौन आवश्यकताओं केलिए विधवा हेडमिस्ट्रेस मास्टर जी से सम्बन्ध स्थापित करती है और इसी की पूर्ति केलिए मास्टरजीकीपत्नी, मास्टर के ट्यूशन छात्र के साथ भाग जाती है । इस कहानी में भी इसी यौनेच्छा के अद्भुत रहस्यमयी दुरंगा चित्र हमें प्राप्त होता है ।

छ· <u>बेबसी</u>

<u>कहानी का कथ्य</u>

लाल इकतीस साल का विवाहित युवक है । उस के सुन्दर पत्नी और एक बालक है । लाल के घर में एक आया थी । वह अविवाहित और असुन्दर बूढ़ी थी । खाना पकाने में वह पारंगत थी । लाल की पत्नी दो चार दिन के लिए अपने भाई के साथ बम्बई गयी । लाल पाजिटिव नहीं था, यों ही सैनिटोरियम में समय काटने केलिए केर" और बेनहम की पुस्तकें पढ़ी थीं और साथी मरीज़ों के साथ हँसा करता था । एक दिन लाल ने आया से कहा - "तुम्हारी शादी जल्दी ही होनेवाली है । घबराओ नहीं ।" लाल के मन में आया के साथ कोई इच्छा नहीं थी । लेकिन आया हमेशा लाल से प्यार प्रकट करती रही । एक दिन आया ने आकर लाल के शयनागार में बिस्तर बिछाया । लाल हमेशा उससे दूर रहना चाहता था । एक दिन लाल सो रही थी कि आया उसके कमरे में आयी, लाल को आलिंगन में बाँध लिया । लाल ने इनकार किया । आया की पकड़ से वह बाहर आया । फिर लाल ने देखा कि आया गेट से बाहर जा चुकी है तब वह चुपचाप बिस्तर पर जाकर लेट गया ।

समीक्षा

नाम विवाहित और अपने यौन जीवन से सन्तुष्ट है । आया बीमार और अत्यन्त कुरूप है । आया केवल यौन वासना की शिकार थी, वह नाम के माध्यम से यौनेच्छा की संतृप्ति चाहती थी । नाम की पत्नी के अभाव में आया ने शयनागार में बिस्तर बिछाया । नाम ने उसकी परवाह नहीं की । एक दिन इस प्रकार नाम सोते वक्त उसके कमरे में आया और उसको आलिंगन में बाँध लिया । इस घटना से आया के यौन भावना का उत्तेजित रूप प्रकट होता है । कुरूपा की प्रेमाग्नि जब उसे तृप्ति को प्राप्त होती है तब क्या परिणाम होगा उसका सुंदर चित्रण लेखक ने इस कहानी द्वारा प्रस्तुत किया है ।

चट्टान में भाभी और शंकर के बीच यौन सम्बन्ध स्थापित करने का कई अवसर हुए लेकिन शंकर और भाभी सदाचार पर दृढ विश्वास करते थे इस कारण कुछ बुरी घटना नहीं घटी । "वह मेरी मीतर थी" में प्रेमी युवक का स्नेह और रक्षा और प्रेमिका की ईमानदारी प्रकट हुई है । परपुरुष के स्पर्श से अपने को अपवित्र समझकर नायिका अविवाहित रहती है । "मक्खियाँ" की नर्तकी मक्खियाँ जब यह जानती है कि उसके प्रेमी को कला से बढ़कर उसके बाह्य रूप से ही प्यार है तो वह उसे छोड़ जाती है । "मिलामियाँ" की सरला और जमना के पति का प्यार, स्नेह और भाईचारे में परिणत हो जाता है । "जुदाई की शाम का गीत" का माधो और मिन्नो ग्रामीण वातावरण से आनेवाले है । प्रतिकूल परिस्थिति से लड़कर वे दोनों आलिंगनबद्ध होकर आत्महत्या करते हैं । "पाप का आरंभ" नामक कहानी में मास्टरजी अपनी पत्नी को छोड़कर एक विधवा हेड मिस्ट्रेस के पीछे जाता है, यह जानने पर मास्टरजी की पत्नी मास्टर के छात्र के साथ भाग जाती है । इस कहानी में अश्क जी के पात्र सदाचार की सीमा को लाँघते है ।

"बेबसी" की बुढ़िया नायिका यौनसुख के अनुभव केलिए अपने मालिक को चाहती है । पर पराजित होकर वह मालिक को छोड़ जाती है । इस प्रकार अश्क जी हमेशा अपनी यौन सम्बन्धी कहानियों में सीमित और सदाचार युक्त शैली में इस भाव को प्रकट करते हैं ।

फ्रायड के समान उपेन्द्रनाथ अश्क ने भी सेक्स को प्रकृति का एक आवश्यक अंग मानकर उसका मानव जीवन से अति सूक्ष्म एवं मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध स्थापित कर उसका विश्लेषण किया है । अश्क जी की यौन सम्बन्धी कहानियों के शिष्ट एवं सीमित यौनवाद दिखाई पड़ता है । चट्टान, वह मेरी मंगेतर थी, मक्खियाँ, मिठाइयाँ, जुदाई की शाम का गीत, पाप का आरंभ, बेबसी आदि कहानियों में इस सीमित यौनवाद का प्रभाव दर्शनीय है ।

जैनेन्द्र के पात्र गोप्य स्वभाववाले हैं । स्त्री पात्रों में यह गोपनीयता अधिक मात्रा में मिलती है । "दृष्टिदोष" की सुमित्रा, विएट्रिस, सुदर्शनादेवी और विजया आदि पात्रों में गोपनीयता और नैतिकता पर विश्वास दर्शनीय है । इन नारी पात्रों में सुमित्रा का केदार के साथ, विएट्रिस का रघु के साथ, सुदर्शनादेवी का जयराज के साथ और विजया का मनमोहन के साथ प्यार और यौन भावना दृष्टव्य है । लेकिन पत्नी धर्म से च्युत हो जाने के डर से वे अपने भावों मुँह मोड़ती हैं । मात्र अविज्ञान की नायिका पति के साथ ही साथ मित्र से सम्बन्ध स्थापित करती है । जैनेन्द्र के पात्रों में विलक्षण यौन भावना की ओर झुकाव देखने को मिलता है । ये पात्र मध्य वर्ग से आते हैं ।

भगवतीचरण वर्मा के पात्र शिक्षित और अशिक्षित हैं । वे निम्न वर्ग और मध्यवर्ग से आनेवाले हैं । इसमें परिवार चलाने केलिए विवश होकर वेश्यावृत्ति करनेवाली सुखिया है । "एक विचित्र चक्कर" की कमला आदर्शशील

नारी है । वेश्या रहकर भी आदर्शवान् पुरुष की आराधना और कामना करनेवाली "दो रातें" की युवती भी मिलती है । "राख और चिनगारी" की नायिका त्यागशील है । वह परिवार की रक्षा के लिए अविवाहित रहती है । भगवती बाबू की कहानियाँ सोद्देश्य है । यौन-भावना के विवाहपूर्व, विवाहेतर और वेश्यावृत्ति आदि रूपों का प्रयोग उनकी कहानियों में देखने को मिलता है ।

भगवतीप्रसाद वाजपेयी के पात्र मध्यवर्ग से आते हैं । शिक्षित अशिक्षित दोनों उनमें है । अनमेल विवाह और उससे उत्पन्न यौन-अतृप्ति से प्रेरित होकर नारी पात्र पति के मित्र से या दूसरे पुरुष से यौन सम्बन्ध में लीन होती है । "आहसैल की मूर्ति" की माया और "बधाई" की पुष्पा और "दुग्ध-पान" की पानवाली ऐसे नारी पात्र है । उतार-चढ़ाव में पढ़े-लिखे लोगों के बीच परिचय के कारण बढ़नेवाले प्रेम और विवाह के उदाहरण भी मिलते है । विवाहेतर और विवाह के बाद की यौन-भावना के उनकी तादृश कहानियाँ उदाहरण हैं ।

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार की कहानियों में पात्र आदर्शशील और त्यागमनोवृत्तिवाले हैं । वे यौन भावना को परिवार के वातावरण में पति पत्नी के माध्यम से प्रस्तुत करते है । अन्य कहानीकारों के समान विवाहपूर्व या विवाहेतर सेक्स का अंकन उनकी रचनाओं में नहीं मिलती । उनके पात्र नैतिक बातों पर महत्व देते है । विद्यालंकार सेक्स सम्बन्धी अपराध और हिंसा को कहानी में स्वीकार नहीं करते ।

इलाचन्द्र जोशी मनोवैज्ञानिक कहानीकार है । उन्होंने अपनी कहानियों में विवाह के बाद की घटनाओं को स्वीकार किया है । जोशी जी के नारी पात्र पति से तृप्त न होकर दूसरे पुरुष के साथ जाती हैं । (पतिव्रता या विलासी) कभी कभी पति की इच्छा के अनुसार पदोन्नति के लिए अपने को

पति के कृषिपरिवारके आगे अंचल से समर्पित होती है । (क्रय-विक्रय) । उन्होंने नारी के सहज रूप का ही सर्वत्र चित्रण किया है। उनके पात्र मध्यवर्ग से आये हैं और मनोवैज्ञानिक है ।

उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानियाँ नैतिकता की पृष्ठभूमि में गठित है । उनके पात्र आदर्शशील और ईमानदारी है । उनमें सहज स्नेह और प्यार दर्शनीय है । प्रेम उनके लिए पवित्र और आस्था की मांग है । पात्र संयमी और मर्यादाशील है । मांस की भूख अश्क जी की कहानियों में कम है । "पाप का आरंभ" विवाहेतर यौन भावना का मार्मिक दृष्टांत है । अश्क जी की अन्य कहानियों में प्रायः शिष्ट एवं सीमित यौन-भावना का रूप ही मिलती है

जैनेन्द्र जी के नारी पात्र दूसरे पुरुष के साथ प्यार करती है लेकिन शादी या शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करती नहीं (मात्र "अपि "अविज्ञात") की मालती इसका अपवाद है । भगवतीचरण वर्मा की कहानियाँ आदर्शशील है । परिवार बचाने केलिए वेश्या बनी मुखिया, वेश्या रहकर भी आदर्शवान पुरुष की कामना करनेवाली "दो रातें" की युवती, और परिवार की रक्षा केलिए अविवाहित रहने का निश्चय करनेवाली "राख और चिनगारी" की गीता आदि स्मरणीय है । भगवतीप्रसाद वाजपेयी अनमेल विवाह और उससे उत्पन्न यौन अतृप्ति का चित्रण करते हैं "लालसेन की मुर्गी" की माया, "बधाई" की पुष्पा "दूध पान" की पन्नावती आदि इसके उदाहरण है । इस प्रकार इलाचन्द्र जोशीजी के पात्र भी पति से तृप्त न होकर दूसरे पुरुषके पीछे जाती है - "पतिव्रता या पिशाची" की शान्ती और "क्रय विक्रय" की मानिनी, इसका उत्तम उदाहरण है । चन्द्रगुप्त विद्यालंकार की कहानियों में नैतिकता पर बल दिया है । इसी तरह उपेन्द्रनाथ अश्क की कहानियाँ भी नैतिक पृष्ठभूमि पर गठित है । मात्र "पाप का आरंभ" इसका अपवाद है ।

तीसरा अध्याय

यौन-भावना के आधार पर यशपाल की कहानियों का अध्ययन

तीसरा अध्याय

यौन-भावना के आधार पर यशपाल की कहानियों का अध्ययन

इस अध्याय में यौन-भावना के आधार पर यशपाल की कहानियों का अध्ययन प्रस्तुत है । यशपाल मौलिक रूप में प्रगतिवादी है फिर भी उनकी रचनाओं - उपन्यास और कहानियों - में यौन भावना भी दृष्टिगत होती है । यशपाल प्रेमचन्द के बाद, हिन्दी के सशक्त कहानिकारों में प्रमुख हैं । शान्ति प्रिय द्विवेदी का कथन है कि "प्रेमचन्द के बाद यशपाल सही माने में जनसाधारण के लिए हिन्दी कथा साहित्य का प्रतिनिधित्व करते हैं । उनकी रचनाएं एक ओर साहित्यिकों के लिए है तो दूसरी ओर जनता के लिए भी आकर्षक है । भाषा और शैली की दृष्टि से यशपाल, एक शब्द में, प्रेमचन्द की तिरोहित प्रतिभा की तरुण शक्ति है[1] ।"

---

1. सामयिकी - शान्तिप्रिय द्विवेदी - पृ.283-284

यशपाल मार्क्सवादी होने के कारण आर्थिक स्थिति पर विशेषध्यान देते है और आर्थिक समस्या को ही संसार कीमूल समस्या मानते हैं । इस आर्थिक विषमता को दूर करना साम्यवाद का उद्देश्य है और उनकी रचनाएं इस व्यवस्था को लाने के उद्देश्य से रचित है । साथ ही साथ यशपाल ने फ्रायड के मूल सिद्धान्त को स्वीकार किया है और इसीलिए उनकी रचनाओं में काम सिद्धान्त का प्रभाव दिखाया देता है । यशपाल जी काम प्रवृत्ति को मानव जीवन को संचालित करनेवाली मूलभूत प्रवृत्तियों में से एक मानते हैं । काम प्रवृत्ति का दमन करने से उसके व्यवहार में विकृतियां आने लगती है । यशपाल कहते है कि वर्तमान जीवन में सेक्स पर लगाए गए नियन्त्रणों को ढीला करने से ही मानसिक घुटन और निराशा दूर कर सकता है । भूख प्यास के समान स्वाभाविक मानवीय मांग है, यह । यह प्रवृत्ति बचपन से ही मनुष्य में रहती है और इसका सैंगिक विकास किशोरावस्था में ही होता है । देवराज उपाध्याय ने लिखा है कि "यशपाल में फ्रायड और मार्क्स मानों अपने शाश्वत विरोध का परित्याग कर साथ साथ गलबाही देकर घूम रहे हैं[1] ।" अर्थात् यशपाल की कहानियों में एक ओर द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद का प्रभाव प्रकट है तो दूसरी ओर स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों के विवेचन में फ्रायड का प्रभाव लक्षित होता है ।

डॉ॰ नलिन विलोचन शर्मा द्वारा संकलित हिन्दी के प्रतिनिधि कथाकार में संग्रहीत एक लेख में यशपाल कहते है कि आज का पाठक और आलोचक वर्ग यौनाक्रान्त है और इस कारण वह मेरी कहानियों में यौन वृत्तियों को ही मुख्य रूप से देखते हैं । वे कहते है "ऐसा होना आपकी व्यक्तिगत भावना का दोष नहीं है, हमारी सामाजिक परिस्थिति का परिणाम है, मानसिक स्थिति इतनी यौनाक्रान्त है कि स्त्री की उपस्थिति या संकेत मात्र से ही यौन प्रसंग जान पड़ने लगता है । यौन सम्बन्धी अनुशासन यौन भावना का उपाय नहीं कर देते बल्कि स्वाभाविक अवसर के अभाव में यौन क्षेत्र में मानसिक विकृतियों को पैदा करते हैं और अनेक दुराचारों और अन्यायों का साधन भी बन जाते हैं।"

1• देवराज उपाध्याय - आलोचना - अक्टूबर - 1952 - पृ•147

2• मनुष्य के रूप - यशपाल - पृ•96

और सब चीज़ों की तरह यशपाल प्रेम को भी द्वन्द्वात्मक ही मानते हैं। उनका कथन है - "और सब चीज़ों की तरह जीवन में प्रेम की गति भी द्वन्द्वात्मक है। प्रेम जीवन की सफलता और सहायता केलिए है।"[1] आगे हम यशपाल की प्रमुख कहानियों में विश्लेषण करेंगे।

<u>तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ</u>

क. <u>कहानी का कथ्य</u>

माया आगरा के एक प्रसिद्ध वकील की तीसरी पत्नी है। माया के विवाह से पहले वकील साहब की पहली पत्नी, दो लड़कियाँ, एक लड़के को छोड़कर और दूसरी पत्नी दो लड़कियों को छोड़कर, एक दूसरी के बाद क्षयरोग के कारण मर गयी थी। वकील ने गृहस्थी संभालने केलिए माया को पत्नी के रूप में स्वीकार किया। माया तो बीस वर्ष की थी। चौबीस पच्चीस की अवस्था में वह भी क्षयरोग के आक्रमण की शिकार बन गयी और घर से दूर शान्त वातावरण में चिकित्सा के लिए आती है। उस अस्पताल में अनेक रोगियों में निगम नामक एक रोगी था। वह किसी दूसरे रोग से पीड़ित होकर चिकित्सा के लिए यहाँ आया हुआ था। दोनों परस्पर परिचित हो गए। एक दिन निगम ने माया को उत्साहित करने केलिए कहा - "आप भी सीख लीजिए न फोटो बनाना। बड़ा आसान है माया कभी कभी निगम के कमरे के पास आती थी। एक दिन लज्जा से आँखों की मुस्कान छिपाते हुए बोली - "भाई साहब, हमारा फोटो दे दीजिए।" निगम ने फोटो लिया और कहा कि लखनऊ जाने पर याद आने पर इसे देखूँगा[2]।

---

1. मनुष्य के रूप - यशपाल - पृ.96
2. मैं तो इसे संभालकर रखूँगा। निगम ने उत्तर दिया। लखनऊ जाने पर या आने पर इसे देखूँगा।" - मेरी प्रिय कहानियाँ - यशपाल - पृ.109

इसके बाद माया में कुछ परिवर्तन दिखाई पड़ा । अब माया की आँखें दूसरी आँखों को बचाकर निगम को ढूँढने लगी । वह लुकछिपकर ही निगम से बात करने लगी । उससे मिलने के अवसर की खोज करने लगी । निगम को माया के रोग का बोध था । इसलिए वह अपने को यों रोके रहता था । माया तो हमेशा निगम का सान्निध्य चाहने लगी । इसलिए उससे पत्रिका माँगती थी और उसके कमरे में बीच बीच जाती थी[1] । एक दिन घूमने को जाते समय दोनों ऊपर के पीछे कोने में गयी । बंगला तो सूना था । एकान्त में माया के इतने निकट होने से निगम का रक्त तेज हो गया । माया ने दरवाज़ा बन्द किया और प्यार प्रकट करने का प्रयास किया[2] । माया ने निगम के साथ अपना शरीर बाँटना चाहा था[3] ।" लेकिन निगम ने उसे हटा दिया । क्षण भर स्तब्ध रहकर क्रोध के साथ निगम को घूरकर कड़े स्वर में पुकार उठी – "तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ ।" निगम अगले दिन लखनऊ लौट गया । मौसम ठीक न रहने से माया डाक्टर के उपदेश से आगरा लौटी ।

समीक्षा

इस कहानी का निगम और माया रोगी है । माया क्षयरोग से पीड़ित है । दोनों एक ही ~~[illegible]~~ डाक्टर के पास चिकित्सा केलिए आए और परिचित हो गए । दोनों का परिचय प्रेम में परिणत हो गया है । एक दिन निगम ने यों माया से कहा – आप भी सीख लीजिए न फोटो बनाना । बड़ा आसान है ।" और दूसरे दिन उसने माया का फोटो ले लिया । माया के

---

1. "पढ़ने में जी नहीं लगता भाई साहब । कहीं घूमने नहीं चलते ?
मेरी प्रिय कहानियाँ – पृ.106
2. हमारा फोटो अच्छा था ? सच कहिए ? निगम का हृदय धक धक कर रहा था उसने उत्तर दिया है तो .... ।" मेरी प्रिय कहानियाँ – यशपाल – पृ.108
3. "यहाँ आओ ।" व्याकुलता से भभककर माया ने निगम को पुकारा । माया अभी कुर्ती को सीम देने के लिए खींच रही थी । कांधे में फंसे बटन खिंचे जा रहे थे और उसके स्तन चोंच उठाए तीतरों की तरह कुर्ती को फाड़ देना चाहते थे । मेरी प्रिय कहानियाँ – यशपाल – पृ.108

पूछने पर निगम का कथन कि "मैं तो इसे संभालकर रखूँगा । मकसूद आने पर याद आने पर इसे देखूँगा । माया के मन में निगम के प्रति प्यार उमड़ने लगा फिर और एक दिन अकेले में और दूसरों के कान की पहुँच से परे होने पर निगम कह बैठता - वह तस्वीर आपने लौटाई नहीं ? इतना सब होने पर भी निगम अपने को आगे बढ़ने से रोकता रहा । लेकिन अब माया का मन निगम के प्रेम के पागल हो गया था । निगम के कमरे से पत्रिका ले जाना फिर वह लौटाने के ब्याज में आकर उसका कथन कि "पढ़ने में जी नहीं लगता भाई साहब" और "कहीं घूमने नहीं चलते" से यह व्यक्त है कि वह हमेशा निगम का सान्निध्य चाहती है । घूमने को जाते समय ऊपर के पीले बंगले में जाना और उस एकांत बंगले में निगम को साथ लेकर दरवाज़ा बन्द करना, कुर्सी को खोल देने के लिए निगम को खींचना आदि निगम के प्रति उसके प्रेम प्रमाण है । निगम के साथ वह शरीर बाँटना चाहती है । निगम भी उसके लुक छिपकर बातचीत करने से और उसकी हँसती आँखों की बोली से प्रभावित हो गया था । लेकिन वह अपने को नियंत्रित रखता है । निगम का यह कथन कि "पागल हो । होश करो" से यह व्यक्त होता है कि वह मायो को रोग की याद दिलाती है, और वह दूर रहता है । "तस्वीर अच्छी लगती है" यह कथन ही माया को इस प्रकार निगम से आकर्षित करता है । इसमें यह व्यक्त है कि माया निगम से बेहद आकर्षित हो गयी थी और निगम भी माया से आकर्षित था लेकिन वह माया के रोग से डरता था । इस कहानी से यह स्पष्ट है कि माया निगम से यौन सम्बन्ध स्थापित करना चाहती है और पराजित होने पर उसकी यह उक्ति "तुम ने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ", सार्थक है ।

प्रतिष्ठा का बोझ

अ. कहानी का कथ्य

केवलचन्द, अम्बाला के निवासी, "मिलिटरी इंजीनियरिंग सर्विस" के दफ़्तर में काम करता है । वह एक पंडित जी के मकान में किराये पर रहता है । पंडित जी के मकान से लगता तिमंज़िला मकान विधवा भवानी का है । भवानी इक्कीस वर्ष की अवस्था में विधवा बन गयी । उसके दो सन्तानें हैं, एक बेटा और एक बेटी । उसकी लड़की मर गयी थी । बेटा घर से कहीं भाग गया था । उसकी बहू बड़ी सुन्दर है । दो सप्ताह ही बीते थे कि लक्ष्मी बहू से केवल की आँखें लड़ गयीं । तीन चार दिन बाद फिर आँखें मिलने पर लक्ष्मी ने मुस्करा दिया । एक दिन भवानी मन्दिर गयी रात का समय था । घर में बहू के बिना कोई नहीं था । बहू के संकेत के अनुसार केवल उसके घर गया । उसने लक्ष्मी का ज़ोर से आलिंगन किया और उसके होठों को खा जाना चाहता था । इतने में दरवाज़ा खोल कर भवानी भीतर आयी । उसने ज़ोर से चिल्लाने के लिए सीने में सांस भरा । सोचने का अवसर नहीं था । केवल ने बेसुध बहू को छोड़कर सास के भरपूर शरीर को बाँहों में लेकर समीप पड़े पलंग पर डालकर ऊपर से दबा दिया । सास ने दबे स्वर में विरोध किया और अन्त में उस मधुर वेदना की सराहना दी ।[1] अब भवानी बहू से बढ़कर केवल को चाहने लगी । केवल को भवानी के स्नेह से संकट मालूम होने लगा । लक्ष्मी अब उसे सुन्दर चमकीले सांप सी लगने लगा । उसका शरीर निर्बल और मन उदास होता जा रहा था ।

---

1. पर ठुमका देकर मुस्कराकर शिकायत की - बड़े वैसे हो तुम । पृ. 67
   - फूलों का कुर्ता - यशपाल

समीक्षा

इस कहानी की नायिका लक्ष्मी का पति कहीं दूर भाग गया है । लक्ष्मी तो बहुत सुन्दर और युवती है । पति के लौट आने की कोई सूचना भी नहीं । इसलिए शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति केलिए कोई रास्ता न देखकर वह पड़ोस में आये केवलचन्द को देखकर मुस्कराती और आँखों से बातें करती है । इसलिए उसका निमन्त्रण पाकर केवल उसके घर आती है । दोनों आलिंगनबद्ध हो जाते हैं । उस समय वहाँ लक्ष्मी की सास आयी । वह चिल्लाने लगी । इस मौके में दूसरा कोई मार्ग न देखकर केवल ने बहू को छोड़कर विधवा सयानी को पकड़ लिया । उसे पलंग पर डालकर अच्छी तरह दबा दिया । उस पर पुरुषत्व का प्रयोग किया । इस मधुर वेदना से प्रभावित होकर वह स्त्री सहज लज्जा के साथ विरोध प्रकट करती है । अन्त में वह मुस्कराकर उसकी सराहना करती है । इससे यह सत्य प्रमाणित होता है कि वह विधवा रहने पर भी यौन सहज आवश्यकताओं की कामना करती थी और केवल से उसकी तृप्ति हुई । युवावस्था में विधवा बनी सयानी की दमित वासना यहाँ फिर पल्लवित होती है । सयानी अब केवल को बार बार चाहती है । यों यह आसानी से समझा जा सकता है कि विधवा की अपेक्षा सुन्दर नव युवती बहू कितनी पीड़ित और कितनी मात्रा में वह केवल को चाहती होगी । वह केवल को चाहती है लेकिन सास के कारण निर्जीव सी रहती है । बहू और सास दोनों पुरुष के गरम स्पर्श के लिए तड़पती है । केवल तो विवाहित है और पत्नी और बच्चे के साथ रहता है । लेकिन वेतन कम होने कारण परिवार को अपने पास ला पाया । ऐसी दशा में पड़ोसिन से परिस्थितिवश सम्बन्ध स्थापित करता है । इस कहानी के तीनों पात्र यौन सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति केलिए प्रयत्नशील है । इन तीनों का मिलन पूर्व निश्चित नहीं । ऐसी एक परिस्थिति में तीनों आ पड़ती है और उनके बीच संपर्क हो जाता है । लक्ष्मी बहू ही

वास्तव में यौन-वेदना से अधिक ग्रस्त है । इसमें विवाहित लड़की को पराये मर्द केशव चन्द के साथ रंग-रेलियाँ करते देखकर उसकी सास इस अनैतिक आचरण के प्रति कदम उठाना चाहती है, परन्तु जब केशव सासके साथ भी वही व्यवहार करता है तो सास की मनोदशा बदल जाती है ।

ग. धर्मरक्षा

कहानी का कथ्य

प्रोफेसर ब्रह्मव्रत विश्वकल्याण के लिए वेद प्रचार सभा के आजीवन सदस्य बन गए । ब्रह्मव्रत विवाहित है । ज्ञानवती नामक उसकी एक बेटी है । वह माता की मृत्यु के बाद पिता के साथ रहती है । वह भी ब्रह्मचारिणी बनना चाहती है । ज्ञानवती गुरुकुल में बारह वर्ष की शिक्षा पूर्ण कर चुकी थी । शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह पिता के साथ रहने लगी । उसके घर में पिता के साथ नौकर मोतीराम और कपिला नामक एक गाय भी थी प्रोफेसर पूर्ण युवती बनी पुत्री के विवाह की चिन्ता करने लगा । एक दिन प्रोफेसर महाशय लाहौर में वेदप्रचार सभा की बैठक में भाषण देने को गया । उस दिन घर की गाय को लेकर मोतीराम ने साँड के पास जाने केलिए एक रुपया माँगा । ज्ञानवती यह नहीं जानती थी कि गाय साँड के पास क्यों जाती है इसलिए ज्ञानवती ने यह जानने का हठ किया तो मोतीराम ने सब सुनाया[1] । मोतीराम अनियन्त्रित हो गया । वह अश्लीलता पर आ गया । इस प्रकार ज्ञानवती ने मोतीराम से गर्भाधान मन्त्र का पाठ पढ़ा । प्रोफेसर भाषण देकर लौट आया । नौकर के साथ अस्त-व्यस्त वस्त्र में अपनी बेटी को देखकर प्रोफेसर को क्रोध हुआ । उसने दोनों को अच्छीतरह मारा ।

---

1. "अरे, जैसे मर्द औरत करते है ।"

फूलों का कुर्ता - यशपाल - पृ.91

अदम्य क्रोध के कारण अपनी पुत्री के साथ व्यभिचार करने को भी वह तैयार हो जाता है । लेकिन परिस्थितिवश शामवती निकलकर अपने को बचाती है । उसने योग्य वर के साथ पुत्री की शादी करने का निश्चय किया । धर्मरक्षा के लिए प्रोफेसर ने सन्यास ग्रहण किया ।

समीक्षा

यह कहानी कुछ विशेष परिस्थिति से गुजरती है । प्रोफेसर ब्रह्मदत्त तो वेद प्रचार सभा के सदस्य रहने के कारण पारिवारिक बातों से कम परिचित है । उसकी पत्नी तो मर गयी थी । घर में एक युवा नौकर और गाय मात्र है । इस समय में पुत्री शामवती गुरुकुल की शिक्षा पूर्ण करके युवती बन कर घर आयी । घर में माता न रहने के कारण और गुरुकुल की शिक्षा के कारण बाह्य संसार का विशेषकर लौकिक जीवन की जानकारी से वह अछूती रहती है इस सन्दर्भ में एक दिन प्रोफेसर घर से बाहर जाता है । गाय को लेकर सांड के पास जाने के लिए मोतीराम ने रुपया मांगा । गाय को लेकर सांड के और सांड का सम्बन्ध शामवती को अग्राह्य था । शामवती जानने का हठ करती है तो मोतीराम उस पर पुरुषत्व का प्रयोग करता है । नौकर के साथ अस्तव्यस्त वस्त्र में शामवती सोती है । उसने गर्भधारण का पाठ भी पढ़ा । स्त्री पुरुष का परस्पर आकर्षण प्रकृति सहज है । यौन-विषय पर नौकर मालिक का अन्तर नहीं रहता । यह कहानी इस बात पर प्रकाश डालती है । यौन विषय में शामवती की अज्ञता, माता का अभाव, पिता का घर से दूर जाना गाय सांड का सम्बन्ध नौकर युवा से जानना आदि विभिन्न स्थितियाँ कहानी के लिए परिस्थिति का निर्माण करती है । दमित वासना और अज्ञान ही मानव को अंधेरे गर्त में डालता है । यहाँ यशपाल यह कहते हैं कि प्रकृति के प्रतिकूल जाने पर मनुष्य का नैतिक पतन होता है । भौतिकवादी यशपाल यह कहना चाहते हैं कि मनुष्य की नैसर्गिक वृत्तियों को दबाना ठीक नहीं । कि सन्दर्भ में मनुष्य की सहज वासनायें सजग हो जाती हैं ।

७. पराई

कहानी का कथ्य

रक्खी पन्द्रह साल की युवती है । वह माँ बाप और भाई-बहिनों के साथ पुरली गाँव में रहती है । रक्खी छोटी पारो के साथ कपड़े धोने को पास के बरसाती तालाब गयी । वह उस प्रदेश की बहुत सुन्दर युवती है । वह छोटी बहिन के साथ छोटी छोटी थापियों से आहिस्ता-आहिस्ता पीटकर कपड़ों को धो-धो एक एक ओर रखती जाती थी । पारो सुबह के कपड़े लेने को भूल गयी थी इसलिए वह लाने को घर की ओर दौड़ी । अकेले रहना रक्खी को अच्छा न लगा । उसे सहसा पूरन का ख्याल आया । पूरन बीस इक्कीस साल का नौजवान है । वह सुन्दर और सुशील पुरुष है । पूरन से वह डरती थी । रक्खी को निश्चय था, पूरन उसे अकेले में मिलने की चेष्टा करता है । इतने में झाड़ियों के बीच से पूरन वहाँ आया । रक्खी ने भय से उसे हट जाने को कहा । ब्याह की बात करके वह चला[1] । रोज देखने के लिए सामनेवाली बावड़ी पर पानी लेने को आने की आशा भी प्रकट की । रक्खी पूरन से बेहद प्यार करती थी । लेकिन दूसरे पुरुषों से बोलना वह असभ्य समझती थी । एक दिन पूरन 'चीड़ताल' के झरने में पैर फिसलकर गिर गया । यह सुनकर उसे असह्य दुख हुआ । व्यथा के मारे से उसे बुखार हुआ । कुछ दिनों के बाद पूरन और रक्खी की शादी हुई । दोनों आनन्द से दिन काटने लगे । मार पीट और धमकी में आनन्द बढ़ता रहा । पहले ससुराल में रक्खी को पराई का बोध हुआ । लेकिन धीरे धीरे वह भी बदलने लगा ।

---

1. पूरन ने कहा - "रक्खी, तू मुझ से ब्याह नहीं करेगी तो मैं जहर खाकर मर जाऊँगा । बता, मुझसे ब्याह करेगी ?"

पिंजरे की उड़ान - यशपाल - पृ. 116

समीक्षा

पूरन और रज्जी परस्पर प्यार करता है और उनकी शादी सम्पन्न हो जाती है । यह कहानी ग्रामीण वातावरण में चित्रित है और अश्लीलता से रहित रहती है । पूरन और रज्जी का प्रेम सन्तुलित और सदाचार पर अधिष्ठित है । ग्राम्य जीवन की निरीहता और नैतिकता के कारण प्रारंभ में नायिका नायक के साथ बोलना भी अनुचित समझती है । लेकिन एक दिन कपड़ा धोने को जाते समय उस तालाब में उनका मिलन हुआ । पहले रज्जी को बहुत डर लगा । वह कुछ बोल न सकी । हर दिन पानी लाने को आने का निमन्त्रण देकर पूरन खेती में व्यस्त हो जाता है । वह उसे बेहद चाहता है । और उसका यह शब्द कि "रज्जी, तू मुझसे प्यार नहीं करेगी तो मैं जहर खाकर मर जाऊँगा, बता, मुझसे प्यार करेगी ?" से यह व्यक्त है कि वह रज्जी के साथ भविष्य की कल्पना करता है । इस प्रकार बीउलाल में एक दिन पूरन का गिरने की वार्ता सुनकर वह बुखार से ग्रस्त हो जाती है । यह तो पूरन के । उनके अदम्य प्यार का प्रमाण सा लगता है । इस प्रकार दोनों विवाहित होकर सुख से दिन काटते हैं । यशपाल की यह कहानी शुद्ध ग्रामीण वातावरण में गठित है और विकृत यौन-भावना से कोसों दूर है ।

ङ. दर्पण

कहानी का कथ्य

रतन रिश्ते में लेखक का मामा है । तीन चार वर्ष वह कानपुर में व्यापार के सिलसिले में रहा था । वहाँ उसने चित्रा नामक बंगाली युवती से सिविल मैरेज की । लाहौर लौटकर, किराये पर एक मकान लेकर रहने लगा । कुछ महीनों के बाद रतन रोगी बन गया, हालत खराब हुई, वह मर गया । छः मास तक चित्रा ने रतन की सेवा शुश्रूषा की । रतन की मृत्यु के बाद चित्रा यहाँ लेखक के मकान के ऊपर के कमरे में रहने लगी ।

वह बहुत सुन्दर और व्यवहार में सरलता और शालीनता भरी युवती थी । लेखक की बेटी किरण को चित्रा से इतना प्यार था कि वह कहती थी कि पिताजी इस मोची की बेटी है । चित्रा, पति रतन की भेंट, एक आईने में अपना रूप देखकर उसमें मुग्ध हो जाती थी । उसमें रतन का यह एक स्नेहपूर्ण वाक्य खुदा था जो कछुए की खोपड़ी के फ्रेम में जटित थी । चित्रा हरदिन उस आइने में देखती थी और वह पढ़ती थी । एक दिन किरण उस आइना लेकर खेलती थी कि वह नीचे गिरकर टूट गयी । उस दिन से चित्रा कुछ अजीब बेचैनी से रोगिणी बनी और समीप के लड़कियों की पाठशाला में जाकर रहने लगी । कुछ पत्र भी आया करता था । लेकिन एक दिन लेखक के घर में एक चिट्ठी आयी जिसमें सिविल सर्जन ने लिखा था कि श्रीमती चित्रारतन अस्पताल के स्त्री-भाग में दाखिल हुई है । हृदय रोग की पीड़ा से अठारहवें दिन चित्रा का देहांत हो गया ।

समीक्षा

एक विवाहिता युवती के दुर्भाग्य की कहानी है । प्रेम विवाह के कारण बिरादरी से तिरस्कृत चित्रा और रतन एक साथ रहते हैं । कुछ महीने के बाद चित्रा विधवा बनी और पति की भेंट-उसका चित्र जटित दर्पण नीचे गिरकर टूट जाने से हृदय वेदना से धीरे धीरे वह मृत्यु की ओर बढ़ती है । अस्पताल में इसी कारण उसकी मृत्यु हुई । उनका जीवन वास्तव में सुखपूर्ण था । लेकिन पति की मृत्यु और उसकी भेंट-आइने में कछुए की खोपड़ी में खुदे हुए वाक्य का टूट जाना चित्रा को असह्य लगा । एकमात्र वही आइना और उसमें खुदा हुआ स्नेहपूर्ण वाक्य ही उसकेलिए सहारा था । इसके बल पर वह जी रही थी । उसके मिटने पर वह निरावलम्ब होकर महिला पाठशाला में

-----

1. "यह आईना मेरा हृदय है । जब तुम इसमें अपनी सुन्दर छवि देखो, समझना मेरे हृदय में बसी अपनी मूर्ति को देख रही हो - रतन ।"
पिंजरे की उड़ान - यशपाल - पृ. 130

जाती है । स्थान परिवर्तन से भी उसे कोई चैन न मिला । वहाँ भी उसको शान्ति न मिली । चित्रा के प्राण पति की खोज में उड़ गये । यह कहानी यौन-भावना के आधार पर अपूर्ण निकलती है । यह मध्य वर्गीय परिवार के अन्तर्गत विवाहिता नारी की दुःख कहानी है । चित्रा का रतन के साथ अटूट प्यार इसमें व्यक्त होता है । इसमें प्रेम की तीव्रता देखने को मिलती है ।

मोटरवाली-कोयलेवाली

घ. कहानी का कथ्य

वर्मा कालेज में पढ़ रहा था । लाला भानमल ने वर्मा को रमा केलिए वर चुन लिया । वह मोटोर कार में स्कूल जाती थी । रमा स्कूल में पढ़ती थी । लाल भानमल के अनेक पहाड़ी बंगलों और विदेशी कम्पनियों के शेयरों का भावी स्वामी वर्मा होनेवाला था । लेकिन पचपन वर्ष की अवस्था में भानमल को एक पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई जिसके फलस्वरूप लाल भानमल ने अपनी बेटी केलिए दूसरे सम्पन्न वर को ढूंढ निकाला । वर्मा वकालत की परीक्षा की तैयारी न कर सका । मन अति खिन्न और निरुत्साहित हो जाने के कारण वह कुछ महीनों केलिए जाड़े में उजड़ी हुई भागसु की बस्ती में एक मकान लेकर रहने लगा । जाड़े के महीनों में भागसु शून्य रहता था । पीठपर कोयलों की भारी कण्डी उठाये आती जाती पहाड़ी औरतों की ओर उसकी नज़र पड़ती । एक दिन उनमें एक जवान लड़की ने अपने शरीर को जाड़े के शीत में सिकोड़कर तम्बाकू पीने की इच्छा की "बाबू बड़ा जाड़ा है घूंट दें" वर्मा ने उस युवती से कोयला इकट्ठा किया । एक दिन भीगे कपड़े में आनेवाली कोयलेवाली का उसने एक शाल और एक घूंट भी देकर सन्तुष्ट किया ।

वर्मा उसे पुखराज कहकर पुकारने लगी । जाड़े का समय था । वर्मा बैठक में अंगीठी के सामने आराम कुर्सी पर बैठा था और कुर्सी की बांह पर पुखराज । वह वर्मा के सूट का कुर्ता-पायजामा पहने थी । उस युवती ने वर्मा से अपनी याद की कोई चीज़ देने की आशा की । वर्मा ने उसके होंठ चूमकर अपनी तस्वीर देने का वचन दिया । लेकिन पुखराज ने इससे इन्कार किया । पुखराज की कमर से लिपटी वर्मा की बांह ढीली पड़ गयी । वह दोनों हाथों में सिर थामकर गहरे सोच में पड़ गया । वर्मा ने उसको दो सौ रुपये दिए । और यह समझ लिया कि यह मोटरवाली और कोयलेवाली सब एक है और इनका देवता पैसा है, प्रेम नहीं ।

समीक्षा

इस कहानी के द्वारा कहानीकार यशपाल यह बताते हैं कि यहाँ पैसा ही बड़ा है, प्रेम का मूल्य बहुत कम है । बड़े धनिक की बेटी और साधारण घर की लड़की दोनों पैसा चाहती है । पैसे के लिए सब कुछ करने को मनुष्य तैयार हो जाते है । इस कहानी की मोटरवाली रूपा और कोयलेवाली पुखराज पैसे के गुलाम है । एक दिन कोयलेवाली युवती अपने शरीर जाड़े के कंबल में सिकोड़कर वर्मा के आगे तम्बाकू पीने की इच्छा प्रकट की । उसने भीगे कपड़े में कोयले लेकर आनेवाली उस युवती को सूट और शाल देकर सन्तुष्ट किया । वर्मा उस युवती से बेहद हिलता मिलता था । युवती ने इन्कार प्रकट किया नहीं । वर्मा के साथ इस प्रकार हिलने मिलने के बदले में वह सोने की चीज़ चाहती है । सोने के लिए वह पुरुषों से मिलती है । अर्थाभाव के कारण विवश होकर शरीर का सौदा करती है । वर्मा के कहने पर कि

---

1. पायजामे बाबू ने मलकी को सोने की ज़ंजीर दी है । मैं भी सोने की कोई चीज़ लूंगी । दो दुनियाँ - यशपाल - पृ.5।

मैं तुझे अपनी तस्वीर दूँगा ।" आँखें ऊपर उठा पुखराज नामक कोयलेवाली ने उत्तर दिया - "चायवाले बाबू ने मुन्नी को सोने की जंजीर दी है । मैं भी सोने, की कोई चीज लूँगी ।" और वर्मा के यह प्रश्न कि "सोने का क्या होगा ? ..... "बुढ़ापे में क्या खाओगी ?" - ये शब्द पुखराज जैसी युवतियों की असहाय अवस्था की ओर प्रकाश डालते हैं । वह जीने केलिए और बुढ़ापे के दिनों केलिए कुछ पैसा कमाना चाहती है । इसलिए विवश होकर शरीर बेचती है । पैसे के अभाव के कारण ही वह व्यभिचार करती है । यह कहानी आर्थिक व्यवस्था के दूषित वातावरण से उपजी विवशता की बात कहती है ।

ज्ञानदान

क. कहानी का कथ्य

महर्षि दीर्घलोम प्रकृति से ही विरक्त है । ऋषि-पत्नी पुत्री के साथ एक पर्णकुटी में उन्हीं के समीप नर्मदा तट पर रहती थी । वन्यलताद्रुमों और तपोवन के पशु पक्षियों की संगति में पली ब्रह्मचारिणी सिद्धि का शारीरिक और मानसिक वासना से कोई परिचय न था । सिद्धि पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए छब्बीस वर्ष की अवस्था की हो गयी । दीर्घलोम के आश्रम में सभी योगसम्बन्धी चर्चा चलती थी । एक दिन वहाँ अनासक्ति योग की चर्चा चल रही थी । उसमें भाग लेने केलिए आए हुए अनेक सन्यासियों में एक था नीलक । वय अधिक न होने पर भी उसका ज्ञान और योग परिपक्व था । आश्रम में विशाल वट वृक्ष के नीचे नीलक का भाषण अनेक ऋषिगण सुन रहे थे । उनमें तपस्विनियों के बीच में दीर्घलोम की कन्या सिद्धि भी *अति* उपस्थित थी । मध्याह्न प्रवचन के बाद ऋषि लोग कन्द-मूल का आहार केलिए चले गए । नीलक नर्मदा के जल के प्रवाह पर दृष्टि लगाए

विचारों में मग्न थे । उनकी स्मृति में ब्रह्मचारिणी सिद्धि का समाधिस्थ रूप नाचने लगा । स्नान करके ब्रह्मचारिणी सिद्धि लौट रही थी । नीलक के ब्रह्मतत्त्व सम्बन्धी प्रश्नों के आगे ब्रह्मचारिणी सिद्धि पराजित हो गई । उसने नीलक के संपर्क में यह स्वीकार किया कि लौकिक जीवन का सुख भी अत्यन्त प्रिय है ।[1] ब्रह्मचारिणी ने उसके आगे निर्बलता अनुभव कर आश्रय के लिए अपने दोनों बाहुएं शरीर के बोझ सहित ब्रह्मचारी के कन्धे पर रख दी । एक संपूर्ण रात्रि के सम्मिलन ने उनके अनेक वर्षों की समाधि तोड़ दी और वे भौतिक सुख में तल्लीन हो गए ।

समीक्षा

महर्षि दीर्घलोम की बेटी सिद्धि आश्रम के वातावरण में पलती और पढ़ती माँ बाप के संपर्क में रहती है । इसलिए वह ब्रह्मचारिणी का पाठ मात्र जानती है । महर्षि दीर्घलोम के आश्रम में भाषण के लिए आये हुए नीलक के अनासक्ति योग की चर्चा से वह अत्यन्त प्रभावित हो गयी । उस समाधिस्थ सिद्धि के रूप ने नीलक के मन को बेचैन कर दिया । ब्रह्मतत्त्व सम्बन्धी नीलक के प्रश्नों के आगे सिद्धि का पराजित होना और सहारा के लिए उसके कन्धों पर शरीर के बोझ सहित बाहें डालने से यह प्रकट होता है कि नारी प्रकृति से पुरुष की सहारा चाहती है और वह अकेली रह नहीं सकती । नीलक की छाया में सिद्धि तरलता अनुभव करती है । एक रात्री के संयोग-सुख ने उन्हें यह समझाया कि लौकिक सुख भी अलौकिक सुख से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है । इस कहानी में सांसारिक विषयों की श्रेष्ठता का प्रतिपादन किया गया है ।

---

1. नीलक के शरीर का आश्रय लेकर सिद्धि ने कांपते हुए स्वर में उत्तर देने का यत्न किया - "नहीं ..... एक अपरिचित अनुभूति है, कुछ असह्य सी, कुछ अप्राप्य सी, अत्यन्त प्रिय है । आह .... ।"
ज्ञानदान - यशपाल - पृ.20

आनन्द न में ज्ञान देनेवाला ब्रह्मचारी स्वयं ही स्त्री के आकर्षण से वंचित न हो पाया । तर्क के आधार पर मीडक से पराजित ब्रह्मचारिणी सिद्धि ने इन्द्रियसुख को महत्वपूर्ण समझा । यशपाल इस कहानी के द्वारा यह कहते हैं कि लौकिक सुख अलौकिक आनन्द के सामने अनत्य नहीं है । सृष्टि में योग देना सब जीवों का धर्म है । यहाँ ब्रह्मचारिणी सिद्धि और ब्रह्मचारी मीडक प्रकृति के इस क्रम में योग देते हैं ।

पराया सुख

अ० कहानी का कथ्य

उर्मिला का पति मिस्टर मदन मिलिटरी अकाउण्ट्स के दफ्तर में काम करता है । उर्मिला स्कूल में अध्यापिका है । वह बहिन से मिलने के लिए अमृतसर गई । उसके एकमात्र बच्चा बब्लू को लेकर वह डलहौजी से लौट रही थी । पठानकोट स्टेशन के मुसाफिरखाने में आर०एन० सेठी नामक एक बड़ा ठेकेदार गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था । वह अकेला है । अविवाहित और बड़ा धनिक भी । बस न मिलने के कारण दोनों कार पर यात्रा करने लगे । दो घंटे तक यात्रा करके उन्होंने बीच में डाक बंगले में विश्राम किया । बहुत बड़ी ज़ोर की बारिश के कारण यात्रा जारी करना मुश्किल लगा । इसलिए उन्होंने वहीं ठहरने का निश्चय किया । दोनों ने लंच खाया । बीच में उर्मिला (मिसेज मदन) ने अपनी कहानी भी सुनायी । वे एक ही कमरे में अपने अपने बिस्तर में कम्बल में लिपटकर सो गए । वे दो महीने बाद मिस्टर मदन मिलिटरी अकाउण्ट्स के दफ्तर से एक सौ रुपये की नौकरी छोड़कर "सेठी एण्ड कम्पनी" में असिस्टेंट मैनेजर बन गया । उर्मिला ने साठ रुपये की मास्टरनी से इस्तीफा दे दिया । सेठी बिना कुछ बोले उसे सामने बैठा रखना चाहता है । सेठी की किसी भी बात को अस्वीकार कर देना उसके लिए असम्भव रहा । सेठी का उर्मिला पर पूर्ण अधिकार है । बब्लू भी उसी का है, मदन भी उसी का है और उर्मिला सबसे पहले उसकी है ।

---

1. मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ । मुझे कुछ नहीं चाहिए । मुझे तुम हृदय की चाह जैसी जान पड़ती हो । तुम्हें देखना चाहता हूँ, अपना समझना चाहता हूँ ।
ज्ञानदान - यशपाल - पृ०63

समीक्षा

सेठी धनिक ठेकेदार और अविवाहित है । बस की प्रतीक्षा में खड़ा था कि उर्मिला उसकी दृष्टि में आयी । उसका आकर्षक रूप और मातृसहज स्नेहयुक्त व्यवहार ने सेठी को हठात आकर्षित किया । सेठी स्त्री के स्नेहशील व्यवहार की आशा करता है । लेकिन अब तक वह अपूर्ण रहा । कार यात्रा और लंच के लिए बैठते समय उर्मिला से परिचय बढ़ाने का अवसर मिला । सेठी का निमन्त्रण पाकर डाक बंगले में सोयी उर्मिला को अच्छीतरह जानने का अवसर भी उसे मिला । उनका सम्बन्ध इस प्रकार दृढ़ हो गया । मिस्टर मदन को सेठी की कम्पनी में असिस्टेंट मैनेजर का पद देना और उर्मिला का साठ रुपये की नौकरी से इस्तीफादेना इसका प्रमाण है । सेठी मिसेज़ मदन को परिवार के साथ खरीदता है । कम वेतन पाने वाली उर्मिला के परिवार केलिए सेठी का सम्पर्क लाभदायक रहा । सेठी ने वास्तव में रुपये के बल पर उर्मिला को परिवार सहित आकर्षित किया । सेठी का कथन कि "मैं तुम्हें प्यार करता हूँ । मुझे कुछ नहीं चाहिए । मुझे तुम हृदय की चाह जैसी जान पड़ती हो । तुम्हें देखना चाहता हूँ, अपना समझना चाहता हूँ ।" इससे यह व्यक्त होता है कि सेठी उर्मिला के शरीर को ही चाहता है । अपनी शारीरिक आवश्यकताओं के लिए सेठी उर्मिला को खरीदता है साथ ही उसके परिवार की देखरेख करता है । सेठी को उर्मिला के समान मदन और उसका बच्चा भी अपना ही है । सेठी के धन-बल के आगे उर्मिला और उसके परिवार का अपना अस्तित्व मिट गया । सेठी धन के बल से अपनी इच्छाओं की पूर्ति करता है । वह पूंजीवादी संस्कृति का उपज बनकर इस कहानी में आता है । प्रेम और पति-पत्नी का सम्बन्ध सेठी केलिए मूल्यवान नहीं है । हमारे समाज में धन के बल से पुरुष के प्रेम का व्यापार का एक उदाहरण इस कहानी में मिलता है ।

ड. जहाँ वक्त नहीं

कहानी का कथ्य

नूरहसन पत्नी समेत एक घर के आधे हिस्से पर किराये पर रहता है । वह रेल्वे वर्कशाप में काम करता है । उस घर के दूसरे हिस्से में हबीब नामक दूसरा मुसलमान भाई भी रहता था । वह अकेला था, घर में दूसरा कोई नहीं था । एक दिन नूरहसन के घुटने पर एक भारी बेलन के गिर जाने से चोट आ गई । उसकी सहायता के लिए पत्नी के सिवा दूसरा कोई नहीं था । इसलिए हबीब ने उस परिवार की सहायता की । वह अस्पताल में कभी कभी जाता था और नूरहसन का संग लेता था । कभी उसके यहाँ से वह भोजन भी लेता था । नूरहसन का घुटना आहिस्ता-आहिस्ता ठीक हो रहा था । उसकी पत्नी सआदत के दिल में हबीब के प्रति स्नेह बढ़ने लगा । नूरहसन ने यह समझ लिया । इसलिए उसने मकान बदलने का निश्चय किया । लेकिन सआदत के इनकार से वह असंभव रहा । एक दिन उसने पत्नी को खूब मारा । हबीब की दशा भी बहुत शोचनीय थी । सआदत को छोड़कर एक क्षण तक रहना उसको असह्य लगा । सआदत भी यह अनुभव करने लगी कि हबीब के सान्निध्य से दूर रहना उसके लिए मुश्किल है । वह पति से बढ़कर प्रेमी को और प्रेमी से बढ़कर पति को चाहती थी । इसलिए एक दिन उसने हबीब से कहा, "घबराओ नहीं, फिर मिलेंगे । हम जाते हैं । हबीब के प्रश्न पर उसने उत्तर दिया कि "उस दुनियाँ में ...... जहाँ वक्त नहीं होता ।" उसने अपने हृदय के रक्त से हबीब लिखकर दूसरे हाथ नूरहसन के गले में डालकर उसका माथा झुकाकर चूम लिया और आँखें बन्द कीं ।

समीक्षा

मनुष्य की आशा अक्षुण्ण रहती है। एक के बाद दूसरी आशा जन्म लेती ही रहती है। इस में नुरहसन और सआदत सुख से विवाहित जीवन काटता था। एक दिन नुरहसन के कर्मशाला की अनहोनी घटना से वह अस्पताल जाता है। वहाँ उसकी सहायता केलिए हबीब नामक पड़ोसी भी जाता है। धीरे धीरे यह स्नेह और परोपकार सआदत और हबीब के बीच प्यार में परिणत हो जाता है। सआदत अपना हृदय पति और हबीब के बीच बाँटने लगी। नुरहसन ने यह जानने पर दूसरी जगह घर बसाना चाहा लेकिन पत्नी के इनकार से यह भी छोड़ दिया। पत्नी के इनकार से यह व्यक्त है कि वह हबीब का सान्निध्य चाहती है। पति को छोड़कर प्रेमी हबीब के साथ भागने या प्रेमी को छोड़कर पति के साथ रहने में वह असमर्थ निकलती है। वह दोनों को चाहती है। उन दोनों से प्यार का रिश्ता चाहती है। लेकिन जब यह असंभव अनुभव होने लगा तो हबीब से यह कहकर कि घबराओ नहीं, फिर मिलेंगे, हम जाते हैं, कहकर वह आत्महत्या करती है। सआदत के लिए आत्महत्या से बढ़कर दूसरा कोई मार्ग नहीं था। नैतिक रूप से तो सआदत को हबीब की आशा नहीं करनी चाहिए था। लेकिन उसके मन की गति में रुकावट डाला न सकती। नुरहसन के अस्पताल जाने के कारण ही हबीब का सआदत के साथ सम्बन्ध बढ़ता है जो एक कारणमात्र लगता है। मनुष्य का मन तो चंचल और आग्रहशील है। यही इस कहानी का मुख्य प्रतिपाद्य है। यहाँ सआदत अपने पति के रहते हुए दूसरे आदमी से सम्पर्क स्थापित करना चाहती है। दूसरे की पत्नी के साथ प्यार बढ़ाना गलत जानकर भी हबीब उसमें रत रहता है। सआदत और हबीब के प्रेम-व्यवहार में दमित वासना का चित्र मिलता है।

७. पाँव तले की डाल

कहानी का कथ्य

ब्रजनन्दन वकील है । वह लखनऊ जाता तो पुराने सहपाठी डाक्टर बिहारीलाल माथुर के यहाँ ही ठहरता है । इस बार ब्रजनन्दन अपने शहर के मित्र और बड़े ठेकेदार मुवक्किल मित्तल बाबू के यहाँ अदालती काम से लखनऊ गया तो होटल में ठहरा । मित्तल ने ब्रजनन्दन के लिए होटल में पहले से ही एक कमरा ठीक कर लिया था । ब्रजनन्दन के कमरे में डाक्टर बिहारीलाल माथुर आया । कमरे की तैयारी से डाक्टर ने यह जान लिया कि कमरे में वे चीज़ें उपस्थित है जो घर पर नहीं हो सकती[1] । पढ़ी लिखी बड़े घर की दो युवतियाँ मिस रावल और मिसेज सक्सेना ने आगे पीछे कमरे में प्रवेश किया । मित्तल ने ब्रजनन्दन से युवतियों का परिचय कराने के लिए उसकी ओर आँखों से इशारा किया । परन्तु अवाक रह गया । एक ही क्षण में ब्रजनन्दन का चेहरा विस्मय और क्रोध से पथरा गया था । मित्तल को अवाक रह जाते देख डाक्टर ने भी ब्रजनन्दन की ओर देखा और फिर उसकी दृष्टि मिस रावल की ओर गई । वह आँखें झुकाये काँप रही थी ।

समीक्षा

इस कहानी में यौन-भावना एक विशेष शैली में प्रस्तुत की गई है । यहाँ मिस रावल और मिसेज़ सक्सेना पढ़ी लिखी और बड़े घर की युवतियाँ है । मिस रावल कालेज में पढ़ती है । वह धन के लिए नहीं शारीरिक आवश्यकता के रूप में इसे देखती है । बड़े बड़े लोगों से कभी कभी होटल में मिलती है ।

1. "बिहारी का हाथ अपने हाथों में दबाते हुए नन्दन बोला, एक बात और है जो घर पर नहीं हो सकती ।" चित्रकार का शीर्षक - यशपाल - पृ०79

मिसेज़ सक्सेना भी पढ़ी लिखी और विवाहिता है । लेकिन एक बार होटल में अपने भाई के कमरे में जब जाती है तो तुरन्त चकित हो जाती है । मिस राजन नहीं जानती थी कि उसके भाई और मित्र भी इस प्रकार उस होटल में कभी कभी मिलते है । वकील ब्रजनन्दन, डाक्टर बिहारीलाल और ठेकेदार मिस्तन तीनों सम्मानित और सम्पन्न परिवार के है । इसलिए घर से दूर शहर आते समय एक चेंज के लिए इस प्रकार होटल में मिलते थे । इससे यह व्यक्त होता है कि मिस राजन और मिसेज़ सक्सेना बड़े लोगों के साथ अंग बाँटती थी, वह तो धन के लिए या परिवार चलाने के लिए नहीं । इस प्रकार तीनों मित्र वकील, डाक्टर और ठेकेदार भी । यह कहानी बड़े परिवारों में चलनेवाली यौनगत उच्छृंखलता की ओर प्रकाश डालती है । इन से हमारे समाज के ऊँचे वर्ग के स्त्री पुरुषों का चित्रण मिलता है । कुछ लोग ऐसे मिलते है जो दूसरों की स्त्रियों के साथ खिलवाड़ करते हैं, परन्तु यही आचरण यदि उनकी स्त्रियाँ करने लगे तो इसमें उनका अपमान है । अपनी स्त्री, बहन, बेटियाँ उनकी अपनी संपत्ति है । दूसरों की बहन, बेटी या पत्नी की कामना रखनेवाला व्यक्ति स्वयं अपनी बहन का कुकृत्य देख कुपित हो जाते हैं । समाज की इन विकृतियों को ही उसके नग्न रूप में दिखाना यशपाल का उद्देश्य है ।

८. जादू का चावल

कहानी का कथ्य

जमील और मेहर दोनों दूर के रिश्तेदार हैं । मेहर का निकाह माँ-बाप ने ज़ोहर नामक होनहार लड़के से कर दिया था । महीनों के अन्दर ज़ोहर निमोनिया से मर गया और वह माँ-बाप के साथ रहने लगी । इसी तरह पाँच साल बीत गए लेकिन अब जमील की बदली निगाहें मेहर को परेशान करने लगी । वह जानती थी, जमील उससे नज़रें मिलाने और अकेले में कोई बात कहने का मौका ढूँढता रहता है । एक दिन जमील

मेहर के यहाँ आया और अपनी इच्छा प्रकट की। इस पर मेहर ने अपना मन जमील के सामने खोल रखा। इस प्रकार कुछ महीने बीत गए। अब तो जमील पहले की तरह मेहर को देखने केलिए नहीं आता। मेहर को नौकरानी अम्मा से यह खबर मिली कि अब तो जमील अस्पताल की किसी मिसिया [नर्स] के फिराक में है। अक्सर उसे लेकर तांगे पर सैर किया करता है। मेहर के दिल पर सांप लोट गया। खाना और नींद हराम हो गयी। मेहर को अस्पताल की उस डायन पर गुस्सा आने लगा। अम्मा एक फकीर से कलीमा पढ़वाकर कुछ चावल ले आयी और बताया, जिस पर डाल दिये जाय उसे कोढ़ फूटकर मौत हो जायगी। मेहर ने अस्पताल जाकर जिनि से सत्कार किया। लेकिन जिनि के ये शब्द कि "जमील हमसे दोस्ती माँगता है। सो हम उससे दोस्ती करती है। हम अपना गुज़ारा चलाने के वास्ते उससे दोस्ती नहीं करती, सुनकर मेहर चुपचाप लौट पड़ी। जादू के-चावलों की पुड़िया हाथ ही में रह गयी।

समीक्षा

"जादू का चावल" नामक यह कहानी मेहर के दुर्भाग्य की गाथा सुनाती है। साथ ही साथ इसमें अन्धविश्वास का प्रभाव भी अंकित होता है। अपने पति की मृत्यु के बाद मेहर माँ-बाप के साथ रहने लगी तो जमील आकर उसे फिर आशा देता है। उसके बाद वह मेहर को तिरस्कृत करके जिनि नामक नर्स के पीछे जाता है। मेहर जिनि की अवहेलना की शिकार बनी। इस प्रकार वह दुख की अग्नि में जलकर मरती है। नारी पुरुष से सहारा चाहती है। पुरुष के अभाव में नारी का विकास और उन्नति अपूर्ण रहेगा। मेहर पति की मृत्यु के बाद बिल्कुल निराशाग्रस्त होकर माँ बाप के

---

1. "हाँ, आप बड़े ऐसे हैं। ..... हमें बहुत जल या आपने।"

तर्क का तूफान - पत्रकार - पृ.103

पास लौट आती है। बचपन के मित्र जमील से फिर उसकी आशनाबाजी बढ़ने लगी। लेकिन वह कुछ दिनों के बाद उसे छोड़ती है। "हाँ .... आप बड़े वैसे हैं। ..... हमें बहुत जलाया आपने"।" से यह सत्य निकलता है कि जमील ने मेहर को सहारा देना चाहा था। उससे सम्बन्ध स्थापित करना था लेकिन मेहर से भी बढ़ी जिमि को प्राप्त करने पर मेहर को भूल कर उस नर्स के पीछे दौड़ने लगा। इससे मेहर का जीवन दुःखपूर्ण हो गया। वह निराश हुई। उसने जिमि का नाश करने का निश्चय किया। जिमि को किसी भी प्रकार मारने का निश्चय इसका प्रमाण है कि वह जमील के साथ सम्बन्ध अक्षुण्ण रखना चाहती है। इसमें बाधा पड़ने पर भी वह मंत्र फूँककर उस नर्स के पास जाती है। जमील से बिछुड़ जाने पर उसका अस्तित्व नष्ट हो जाएगी। नर्स जिमि की यह शब्द कि "जमील हम से दोस्ती माँगता है तो हम उससे दोस्ती करती है" उसे चुपचाप लौटा देती है। यह कहानी जिमि के व्यक्तित्व पर केन्द्रित करके चलती है। वह स्वतंत्र है, अपने पैरों पर खड़ी है। उसके हृदय में प्रेम का वास्तविक भाव नहीं है। वह किसी से प्रेम करती है तो केवल उसके शरीर से। इस प्रकार वह किसी के साथ बाँधकर रहना नहीं चाहती। वह प्रेम की स्वच्छन्द भावना से प्रभावित है।

ढ. छाया

कहानी का कथ्य

हरबंसलाल कालेज में अध्यापक है। वह किराये पर एक मकान में रहता था। उस मकान के दूसरे भाग में एक बंगाली सज्जन उनकी पत्नी और बीस-बाईस वर्ष की बेटी के साथ आकर रहने लगा। इस कमरे से उस कमरे, रसोई घर और गुसल खाने में आती जाती युवती भाग को दिखाई देती

रहती थी । लाल ने देखा, उसकी आँखें बड़ी बड़ी थी, ध्यान दे सकने केलिए फैली हुई सी । लाल की आँखें सुस्मिता नामक उस युवती पर टिक सी जाती । वह बहुत सुन्दर थी । कालेज में अध्यापक होने के नाते उसे अपनी स्थिति का ख्याल था । सुस्मिता भी वास्तव में लाल को चाहती थी । सुबह दस बजे से पहले और शाम को चार बजे के बाद लाल कमरे में ही रहता है । उस समय सुस्मिता की दृष्टि उधर घूम जाती । सुस्मिता पढ़ी लिखी होने पर भी बंगाली के अलावा कुछ नहीं जानती थी । एक दिन गुसल खाने से लौटते समय रसोई की ओर से आती हुई सुस्मिता से उसकी टक्कर हो गयी । सुस्मिता और लाल के बीच प्यार बढ़ने लगा । इतने में सुस्मिता का मन बंगाल लौट जाने केलिए माँ-बाप का उत्साह देखकर डूबने लगता था । लाल को खिड़की की ओर से वह देखती, परन्तु बेबस थी । लाल की बेचैनी को भी वह जानती थी । अन्तिम बार देखने केलिए लाल सुस्मिता के घर पहुँचा । उस समय घर में सुस्मिता को छोड़कर कोई दूसरा नहीं था । कुछ बोलने के लिए उनके पास भाषा नहीं थी ।

समीक्षा

लाल पंजाबी है । परिस्थितिवश उसका मिलन बंगाल के बोस परिवार से हुआ । बोस की बेटी सुस्मिता और लाल के बीच प्रेम सा पनपने लगा । सुस्मिता पढ़ी लिखी युवती होने पर भी बंगाली के अलावा कुछ नहीं जानती थी । भाषा के अभाव में दोनों कुछ भी बोल न सकते थे । उनका दमित प्रेम मौन रहकर असह्य हो गया । यह कहानी ऐसी एक विशेष परिस्थिति को उद्घाटित करती है । दोनों एक ही मकान के अलग अलग भागों में रहते हैं । वे परस्पर समझ सकते थे लेकिन कुछ बोल न सकते थे । दोनों एक दूसरे को चाहते थे, बेहद प्यार करते थे । एक दिन गुसल खाने से लौटते समय रसोई की ओर आती हुई सुस्मिता से टक्कर हुई ।

उस दिन से उनके बीच प्यार बढ़ने लगा । पूर्णिमा के पिता को कोटा लौट जाने का समय आया । उसकी बेचैनी बेहद थी । अन्तिम बार देखने के लिए हरबंसलाल उसके घर गया । पर बोलने के लिए उनके पास भाषा नहीं थी । यह कहानी मनुष्य मन की असहाय अवस्था की बात कहती है । प्रेम मनुष्य को सब कुछ करने में समर्थ बना देती है । लेकिन यहाँ हम दोनों में संयमित प्रेम का दृष्टान्त मिलता है । हरबंसलाल अध्यापक है इसलिए अपनी स्थिति का ठीक पालन करता है विवाह पूर्व संयमित यौन भावना का उदाहरण है ।

ङ॰ निर्वा सिता

कहानी का कथ्य

इन्दु सक्सेना पढ़ी लिखी युवती है । वह बम्बई के स्त्रियों के कालेज में इतिहास विभाग में अध्यापिका है । हाल ही में उसने पी-एच॰डी॰ की उपाधी ग्रहण की है । अन्तर्देशीय स्तर की रचनाएँ उसके प्रकाशित हुई है । बम्बई के एक होटल में वह रहती है । पढ़ी लिखी, सुसंस्कृत होने के कारण उसे वहाँ जगह मिली थी । इन्दु अधिक सुन्दर नहीं है । इसलिए उचित वर ढूंढने पर भी न मिला । इन्दु के मस्तिष्क में उष्णता बढ़ती जा रही थी । स्वावलम्बी और आत्मनिर्भर बनकर भी जीवन व्यर्थ हो रहा था । जीवन के क्रम का, इसके टूटने के सिलसिले का अवलम्ब पुरुष । पुरुष के बिना वह असहाय है । उसे अपना क्रम जारी रखना है । कुछ मास पूर्व दर्शनशास्त्र के एक महापंडित मसूरी पधारे थे । इन्दु ने उनसे सन्तान की चाह प्रकट की । सन्तान का जन्म और दायित्व दे सकने की शक्ति मुझमें नहीं है कहकर उसने इनकार कर दिया । इन्दु तिरस्कृत और अपमानित होकर लौट आयी । पुरुष की संकीर्णता और अहंकार से वह जलती थी । वह पुरुष को खरीद सकती थी । लेकिन उसे सम्भ्रान्त पुरुष की आवश्यकता थी । उसने कमरे में आकर नोट का बण्डल उठा लिया । पुरुष की तलाश में चारों और नज़र दौड़ाई, किस और कौन पुरुष दिखाई देता है ?

समीक्षा

इन्दु सक्सेना बहुत सुन्दर नहीं । इसलिए पढ़ी-लिखी और स्वावलम्बी होने पर भी उसकी शादी एक सम्भ्रान्त पुरुष के साथ नहीं होती । सम्भ्रान्त पुरुष की खोज में रतङअने एक परिचित दर्शन शास्त्र के विद्वान से माता बनाने की प्रार्थना की । उससे तिरस्कृत होकर अदम्य वेदना से वह लौटती और कमरे में आकर नोट के बण्डल लेकर पुरुष की शिकार के लिए निकलती है । इन्दु में एक माता बनने की अभिलाषा है । इसलिए वह पुरुष की आवश्यकता अच्छीतरह जानती थी । उसे पुरुष की प्राप्ति असंभव नहीं है । लेकिन संभ्रान्त नारी रहने से सम्भ्रान्त पुरुष की कामना स्वाभाविक है । इन्दु भी वही चाह रखती है । इसमें इन्दु यौन सहज आवश्यकताओं की पूर्ति नैतिक और सभ्य शैली में चाहती है । उसके पास काफी धन है इसलिए यदि चाहे तो पुरुष को खरीद सकती थी, लेकिन नैतिक रहना चाहती है । लेकिन उस दर्शनशास्त्र के अध्यापक के सामने जब उसकी प्रार्थना असफल निकली तो उसका संयम टूट जाती है और धन लेकर पुरुष की खोज में निकलती है । इन्दु यौन जीवन में बिल्कुल ठीक रहना चाहती थी । स्त्री सहज अभिलाषा, माता बनने की कामना से वह पुरुष को चाहती थी । इसमें पराजित होकर अब शारीरिक तृप्ति के लिए पुरुष की खोज में नोट की बंडल लेकर वह होटल से बाहर आती है । एक शीलवती नारी के बिगड़ जाने का एक कारण इसमें दिखाया गया है । जीवन में असन्तुष्ट नारियों की एक समस्या का उद्घाटन इसमें हुआ है ।

ट॰ अपनी चीज़

कहानी का कथ्य

मेजर चोहान और पत्नी आलोक सुख से पारिवारिक जीवन बिता रहे थे। उनके दो बच्चे मसूरी में पढ़ते थे। कर्नल कौशिक मेजर का पुराना साथी है। तीनों निस्संकोच रूप से मिलते रहते थे। आलोक को ज्ञान पड़ा कि पति के संपूर्ण संतोष और सुख के लिए कर्नल का सत्संग आवश्यक है। एक दिन आलोक को मालूम हुआ कि कर्नल उसका विशेष आदर करता है और उसकी भावुकता का कारण एक सीमा तक वह स्वयं ही है। वह चोरी चोरी में कर्नल के साथ आलिंगन सुख अनुभव करती थी।[1] लेकिन कर्नल अपने अधिकार की सीमा को समझता था। मेजर ने यह समझ लिया कि कर्नल और आलोक के बीच कुछ आकर्षण है। इसलिए उन्होंने आनेवाले संकट को दूर करने का उपचार भी सोचा। मेजर चिकित्सा के द्वारा दोनों को शारीरिक स्वास्थ्य लाना चाहता था। आलोक और कर्नल की गुप्त व्यथा और वैचित्र्य मेजर को दोनों ओर से आनेवाले बाणों की भांति बेध रहा था। अनेक प्रकार के इलाज कर चुकने पर भी कर्नल में कोई परिवर्तन आ न सका। इसलिए दवा के बहाने इंजक्शन दिया और कर्नल को मारा। यह जानने पर आलोक मूर्छित हो गई और उसमें मानसिक विकार के लक्षण दिखाई देने लगे। वह हँसने रोने और बकने लगी, आत्महत्या करना चाहती थी। मेजर उसे मरने नहीं दे सकता था। वह उसकी अपनी चीज़ थी और आलोक के अपने प्राण भी उसके अपने नहीं थे।

---

1. आलोक कर्नल के बगल में बैठकर, उसके सीने पर सिर रखकर और उसका सिर अपनी गोद में लेकर दूसरे ही संसार में पहुँच जाती थी।
   ज्ञानदान - यशपाल - पृ॰114

समीक्षा

शरीर की इच्छा पूर्ति के लिए आलोक कर्नल से सम्बन्ध स्थापित करती है । उसका पति तो स्वस्थ और सम्पन्न है । उनके दो बच्चे तो मंसूरी के स्कूल में पढ़ते हैं । घर में काफी धन है । सुख सुविधाओं की कमी नहीं । ऐसी दशा में पति के मित्र से सम्बन्ध स्थापित करने से ऐसा लगता है कि आलोक पति से पूर्ण रूप में तृप्त नहीं थी । यह अतृप्ति तो यौन अतृप्ति है । आलोक कर्नल के बंगले में बैठकर उसके सीने पर सिर रखकर और उसका सिर अपनी गोद में लेकर किसी दूसरे ही संसार में पहुँच जाती थी ।" ~~इस कारण~~ से यह स्पष्ट है कि आलोक तो पति से बढ़कर दूसरे आदमी से संपर्क चाहती थी । इस अवस्था में ही पति के मित्र कर्नल वहाँ आया । सो वह कर्नल से सम्पर्क स्थापित करती है । अपनी पत्नी और कर्नल के संपर्क से मेजर को दुख होता था । इसलिए दूसरा कोई मार्ग न देखकर वह उसे विषपान देकर मारता है । इसमें यौन-सुख केलिए मर्यादा का उल्लंघन करनेवाली मेजर की पत्नी आलोक और कर्नल दोनों दुखी है । कर्नल अपनी सीमा से परिचित है लेकिन आलोक अपने उत्तरदायित्व से बेफिक्र रहती है । वह दूसरे पुरुष को मात्र शारीरिक सुख के लिए चाहती है । उसमें वासना की मात्रा बहुत अधिक दिखाई पड़ती है । कर्नल की मृत्यु हुई जानकर आलोक की मूर्छा इसका प्रमाण लगता है । इस प्रकार कर्नल का मित्र की पत्नी से संपर्क रखना भी मात्र यौन सुख को लक्षित करके । इस कहानी का नायक मेजर संयमित व्यवहार प्रकट करता है।

••

ग॰ दूसरी नाक

कहानी का कथ्य

जब्बार ने शब्बू नामक सुन्दर लड़की से शादी की । कमाई के लिए जब्बार को बम्बई अप्रसन्न जाना पड़ा लेकिन मन उसका पीछे गाँव में ही रहा । वह पत्नी को देखने के लिए आधी रात में उठ गाँव को चल दिया और बावली पर जाकर बैठा लेकिन शब्बू पानी भरने के लिए आई तो दो सहेलियों के साथ । वह एक शब्द भी बोल न सका । जब्बार दिन भर पत्थर रखे जिज्ञासा में पत्नी को देखता रहा । शब्बू सहेलियों से बातचीत करती लौट गयी । आठ दस दिन बाद फिर रातों रात पैदल दौड़कर शब्बू को एक झलक देखने के लिए वह आया । लेकिन इस सुबह वह तीन सहेलियों के साथ अठखेलियाँ करती आयी । उनमें मीरन ने शब्बू की ठोड़ी छूकर कहा - हाय रे तेरा नखरा ! तभी तो गाँव के छैले तुझ पर जान दे रहे हैं, कसम तेरे सिर की । जब्बार के मन में सन्देह सिर उठाने लगा । बेकाम फिरनेवाले रहमान और अब्बास की याद उसके मन में आयी । कुछ रुपये इकट्ठा करके वह घर लौट आया । वह सतर्कता से शब्बू पर निगाह रखने लगा । शब्बू से सौ कदम दूर भी आदमी देख लेता तो जब्बार को सन्देह हो जाता कि आदमी शब्बू से आँखें लड़ा रहा है । वह अन्धेरे में आँखें खोले शब्बू के रूप के कारण होनेवाले सब अनर्थ पर विचार कर रहा था । अन्धेरे में टटोलकर उसने शब्बू की नाक पकड़ ली । उसने पत्नी की नाक एक ही झटके में काटकर फेंक दी । दूसरों की आँख अपनी पत्नी पर पड़ना उसे असह्य था । शब्बू को केवल अपने ही लिये रखना चाहता था । नाक काटने के कारण उसका मुख और शक्ल बिलकुल विकृत हो गया । अस्पताल गया । डाक्टर ने रबड़ की नाक लगा देने का उपदेश दिया । जब्बार ने रबड़ की नाक की कीमत चालीस रुपये डाक्टर के यहाँ जमा करवा दी परन्तु पत्नी से वायदा ले लिया कि शब्बू नाक लगायेगी ज़रूर लेकिन अन्य पुरुष उसे घूरेगा तो झट नाक उतारकर जेब में डाल लेगी ।

समीक्षा

पुरुष के स्वार्थ का चित्र इसमें दिया गया है । जब्बार की पत्नी बेहद सुन्दर है । दूसरों का उस की पत्नी की ओर देखना जब्बार को असह्य लगा । विवाह के बाद धन कमाने केलिए जब्बार काम की खोज में जाता है । किसी न किसी कारण से जब्बार पत्नी पर सन्देह करता था । उसके मित्र रहमान और अब्बास का चित्र ऐसी अवस्था में उसकी आँखों के आगे घूमने लगा । वह कल्पना करने लगा कि रहमान और अब्बास का शब्बू के साथ सम्बन्ध है । इसलिए उसने यह निश्चय कर लिया कि पत्नी का रूप विकृत करने से उन लोगों के जाल से उसे मुक्त कर सकता है । वह घर आकर, रात के समय में, शब्बू की नाक पकड़ ली और एक ही झटके में काटकर फेंक दी । रूप मुख विकृत कर दिया । पर उसे डाक्टर की सहायता से रबड़ का नाक लगा दिया । वह पत्नी को दूसरों की दृष्टि से दूर रखने केलिए और उस पर अपनी अधीनता जमाये रखने केलिए यह निकृष्ट कार्य करता है । मनुष्य तो स्वार्थी है । यौन का लेश इसमें बिलकुल भिन्न नहीं है । पुरुष के स्वार्थ के प्रतीक के रूप में जब्बार को यहाँ प्रस्तुत किया है । कनक और कामिनी मनुष्य में म दकता पैदा करती है । इसके कारण ही इस संसार में सब प्रकार की गड़बड़ियाँ जन्म लेती है । इसमें जब्बार के द्वारा स्वार्थी पति और शब्बू के द्वारा असहाय भारतीय नारी का चित्र दिया गया है । नारी इस पुरुष के उपभोग का साधन मात्र है ।

"तुम ने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ" नामक कहानी यौन समस्या का उदाहरण है । मध्यवर्ग के परिवार से आनेवाली माया और किशन का परिचय अस्पताल के वातावरण में हुआ । माया, एक वकील की पत्नी क्षयरोग से पीड़ित होकर अस्पताल में आयी थी जो किशन के स्नेहशील व्यवहार से आकर्षित हो गयी और उसको प्राप्त करने का प्रयास करती है

निगम यह जानता था, लेकिन उसके रोग से डरता था । माया के मन में तीव्र यौनेच्छा थी, इसलिए निगम से तिरस्कृत जानकर कुपित हो जाती है । मध्यवर्ग की झूठी शान और दमित वासना का उद्घाटन इसमें हुआ है ।

'प्रतिष्ठा का बोझ' और 'अँधेरा' नामक कहानियाँ यौन समस्या की कहानियाँ हैं । इसमें अश्लीलता और यौनविकृतियाँ देखने को मिलती हैं । 'प्रतिष्ठा का बोझ' का केवलचन्द ने परिस्थितिवश विवाहिता और पड़ोसिन लक्ष्मी के संकेत के अनुसार लिखा था कि वहाँ लक्ष्मी की सास आयी । उस संकट से मोचन पाने के लिए उसने सास के साथ यौन विकृतियाँ की । केवलचन्द से जो सुरक्षितता उससे वह आकृष्ट हो गयी थी । काम तो मनुष्य को अन्धा बनाता है । इस प्रकार 'अँधेरा' की ब्रह्मचारिणी श्यामली नौकर से यह जानना चाहती है कि गाय साँड के पास क्यों जाती है ? हठ करने पर नौकर उसके साथ यौनविकृतावस्था तक जाती है । इस कहानी के द्वारा यशपाल यह कहते है कि सब प्रकार की कुरीतियों, पापाचारों और भ्रष्टाचारों के लिए यह समाज ही उत्तरदायी है । दमित वासना और अज्ञान ही मानव को अन्धेरे गर्त में डालता है । अश्लीलता की पराकाष्ठा इन कहानियों में निश्चित उद्देश्य से हो गयी है । 'पराई' और 'भाषा' शुद्ध प्रेम कहानी है । 'पराई' ग्रामीण वातावरण में गठित निष्कलंक प्रेमी युगल पूरन और रखी की कहानी है । बचपन से वे परिचित हो गए । धीरे धीरे यह परिचय प्रेम में प्रस्फुटित हो गयी और माँ-बाप ने उनकी शादी कर दी । इस प्रकार 'भाषा' एक निरीह प्रेम कथा है । यहाँ प्रेमी एक पंजाबी जो कालेज का अध्यापक और प्रेमिका एक बंगाली युवती । वह युवती बंगाली के अलावा कोई भाषा नहीं जानती थी । इसलिए वे कुछ न बोल सकते थे । पड़ोसी युवती माँ बाप के साथ बंगाल लौट जाती है । इन दोनों कहानियों में अश्लीलता या यौन विकृतियाँ कुछ भी नहीं मिलती ।

"दर्पण" एक विशेष प्रकार की कहानी है । इसमें अन्तर्जातीय विवाह से बहिष्कृत रतन और विमला बन्धु बान्धवों से तिरस्कृत होकर परिवार से अलग हो जाते हैं । कुछ वर्षों के बाद विमला विधवा बन गई और वह पतिवियोग की वेदना में मर जाती है । यह यौन समस्या की कहानी है । इसमें प्रेम की तीव्रता और कष्टताएं सहन करने की मानसिक शक्ति भी प्रकट होती है । यह कहानी यशपाल की साम्यवादी दृष्टिकोण से प्रभावित सी लगती है ।

"मोटरवाली-कोयलेवाली" कहानी शुद्ध आर्थिक समस्या पर निर्मित कहानी है । मोटरवाली रूपा की शादी बड़े धनिक के साथ होती है, कोयलेवाली पुखराज बुढ़ापे में खाने के लिए युवावस्था में कुछ कमाने के लिए शरीर बेचती है । उन दोनों की देवता धन है, प्रेम नहीं । "ज्ञानदान" में ब्रह्मचारी नीलक ब्रह्मचारिणी सिद्धि को यह सत्य समझाता है कि मनुष्य परस्पर आश्रय चाहता है । स्त्री-पुरुष की पूर्णता उनके मिलन और संयोग से ही होती है । अलौकिक जीवन छोड़कर लौकिक पथ पर आनेवाले युगलों के द्वारा लौकिकता का महत्व दिखाया गया है । यौन-विषय सम्बन्धी कहानी है यह ।

"पराया सुख", जहाँ हसद नहीं, पाँव तले की डाल, "जादू के बादल" और "मिठालिता" नामक कहानियाँ यौन समस्या की ओर प्रकाश डालती हैं । "पराया सुख" का सेठी बड़ा धनिक है वह दूसरों की पत्नी को अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए साथ रखता है । दूसरी ओर आर्थिक लाभ के लिए मिसेज मदन सेठी के संकेत के अनुसार नाचती है । "जहाँ हसद नहीं" यौन समस्या की कहानी है । इसकी सआदत पति मुहसन के साथ ही साथ हबीब नामक पड़ोस के युवा के साथ प्यार बढ़ाती है

दोनों पुरुष को एक ही समय चाहती है, इसमें असफल होकर आत्महत्या करती है, वह| पाँच तले की डाल में बडे परिवार में पढे लिखे स्त्री पुरुषों के बीच देखने में आनेवाली यौन उत्सुकता पर प्रकाश डाला गया है । दूसरों की पत्नी या बहिन के साथ छेडछाड करने को चाहनेवाले लोग जब अपनी बहिन या पत्नी को इस दिशा की ओर जाते देखकुपित हो जाते है । वकील प्रजनन्दन बहिन मिस राधा को अपने मित्र के कमरे में देख कर कुपित हो जाता है । "जादू का चावल" और "निर्वासिता" पढी लिखी और अपने पैरों पर खडी नारियों की कहानी कहती है । जादू का चावल का मिस जिमि मात्र शारीरिक सुख चाहती है । वह किसी से प्यार करती नहीं । किसी का अधिपत्य भी स्वीकार करती नहीं । इस प्रकार "निर्वासिता" की इन्दु कालेज की अध्यापिका है । वह एक सम्भ्रान्त पुरुष की प्रतिक्षा करती रही । लेकिन ऐसे पुरुष को न प्राप्त करने से आतंकित होकर पुरुष के शिकार के लिए रुपये लेकर निकलती है । इसमें पढी लिखी स्वावलम्बी नारी की यौनगत समस्या पर प्रकाश डाला गया है ।

"अपनी चीज़" का आलोक पति के सुख से तृप्त न होकर मित्र कर्नल से मित्रता स्थापित करती है । यह एक यौनगत समस्या की कहानी है । "दूसरी नाक" में पति पत्नी की सुन्दरता से सन्देह करता और दूसरों के आगे उसे क्रुध करता है । इस प्रकार पत्नी पर पूरा अधिकार जमाना चाहता है ।

एक यौन समस्या पर लिखित कहानियों में पाँच तले की डाल "जादू का चावल", "निर्वासिता", "अपनी चीज़", "प्रतिष्ठा का बोझ", "धर्मरक्षा", "शामदान", "तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ" आदि आती है । "पराया सुख", "मोटरवाली", "कोयलेवाली" कहानियों में यौन और आर्थिक विषय का महत्व है "पराई", "दर्पण", "भाभा" आदि कहानियाँ एक प्रेम और यौन आकर्षण का उद्घाटन करती हैं ।

यशपाल की कहानियों के बारे में लक्ष्मीनारायण लाल का कथन है "यशपाल की कहानियों का धरातल मुख्यत: निर्वैयक्तिक सामाजिक शक्तियाँ हैं जिनका मूल केन्द्र द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद है । अतएव यशपाल की कहानी कला में समाज अपने दोनों पक्षों में लिया गया है । प्रथम, शोषित और दृष्टियों से जिसमें समाज का अध्ययन इसे पूँजीपति अथवा सर्वहारा दो वर्गों में बाँट कर किया गया है । इसी के साथ साथ समाज का सांस्कृतिक पक्ष भी लिया गया है जहाँ पुरातन धार्मिकता और परंपरा की कटु आलोचना की गई है और उनके स्थान पर आधुनिक आर्थिक शक्तियों को महत्व दिया गया है, अर्थात् समाज का अध्ययन मुख्यत: अर्थ के धरातल से किया गया है । दूसरे पक्ष में स्त्री पुरुष के सम्बन्धों को लेकर कहानी लिखी गई है और नये मानदण्डों और मान्यताओं की प्रतिष्ठा के फलस्वरूप इनकी कहानियों में मनोविश्लेषण और व्यक्ति की कामप्रेरणाओं का विवेचन सर्वथा अनूठा ढंग से हुआ है[1]।"

यशपाल की कहानियों का धरातल बहुत विस्तृत है । प्रेमचन्द के समान विविध समस्याओं को उन्होंने लिया है। सुरेशचन्द्र तिवारी का कथन सार्थक है-' आधुनिक समाज के जितने अधिक स्तरों और समस्याओं का स्पर्श यशपाल ने किया है, उतनी व्यापकता, उतना वैभव प्रेमचन्द के कहानियों में भी नहीं है । प्रेमचन्द कृषक जीवन के चित्रकार हैं जबकि यशपाल यदा कदा ग्रामीण और विशेषतया नागरिक जीवन के मध्यवर्ग और निम्नवर्ग को उपस्थित करते हैं[2]।"

---

1. हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास - डॉ.लक्ष्मीनारायणलाल - पृ.292
2. यशपाल और हिन्दी कथा साहित्य - सुरेशचन्द्रतिवारी - पृ.141

चौथा अध्याय

योग-साधना के आधार पर ज्ञेय की कहानियों का अध्ययन

चौथा अध्याय

यौन-भावना के आधार पर अज्ञेय की कहानियों का अध्ययन

हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकारों में अज्ञेय का मुख्य स्थान है। उनकी एक सौ कहानियाँ विपथगा, परंपरा, कोठरी की बात शरणार्थी, जय-दोल, ये तेरे प्रति रूप आदि संग्रहों में संकलित है। उनकी कहानियों में एक ओर भारतीय जन-जीवन, उसकी वेदना, विषमताओं आदि के यथार्थ चित्रण है तो दूसरी ओर मानव मन की शाश्वत अनुभूतियों के कलात्मक अभिव्यक्तीकरण भी दर्शनीय है। अज्ञेय की कहानियाँ मनोवैज्ञानिक है। उनकी कहानियों में बाह्य क्रियाकलापों का विश्लेषण कम है। वे, आभ्यन्तरिकता के कथाकार हैं।

अज्ञेय की कहानियों में समाज, क्रान्ति, मानसिक अन्तर्द्वन्द्व और चरित्रविश्लेषण का प्रतिपादन हुआ है। आलोचक ओमप्रभाकर [1] के शब्दों में 'कथानक के दृष्टिकोण से अज्ञेय की प्रायः समस्त कहानियाँ चार वर्गों में

विभाजित की जा सकती है । सामाजिक आधार पर रचित, क्रांतिकारी जीवन पर आधारित, चारित्रिक विश्लेषणपूर्ण और मानसिक अन्तर्द्वन्द्व की प्रतीकात्मक अभिव्यक्तीकरण की कहानियाँ ।[1]" सामाजिक आधार पर लिखित कहानियों में समाज की विषमताओं, समस्याओं का विश्लेषण होता है । उदाहरण के लिए रोज, सभ्यता का एक दिन, परंपरा एक कहानी, जीवनशक्ति, बदला, कविप्रिया आदि कहानियाँ आती हैं । क्रान्तिकारी जीवन पर लिखित कहानियों में पगोडा वृक्ष, छाया के सम्मुख का अभिशाप अकलंक आदि उल्लेखनीय है । चारित्रिक विश्लेषण पर लिखित कहानियाँ हैं पुरुष का भाग्य, पठार का धीरज, सिगनेलर, नम्बर दस हीलीबोन की बत्तखें आदि । इन कहानियों में किसी चरित्र के आन्तरिक या बाह्य विश्लेषण पर कथा चलती है । मानसिक अन्तर्द्वन्द्व की प्रतीकात्मक कहानियों में कथानक, दार्शनिक, बौद्धिक या मनोवैज्ञानिक बातों से सम्बन्धित रहता है । सांप, कोठरी की बात, शिक्षा, कलाकार की मुक्ति आदि कहानियाँ उदाहरण है । अहं, विद्रोह और विश्लेषण अज्ञेय की कहानियों के चरित्रों की विशिष्टताएँ है । इस पर डॉ॰ लक्ष्मी नारायण लाल का मत विचारणीय है । वे कहते है - "अज्ञेय के चरित्रों का यह अहं रूप कहीं संकीर्ण अथवा उथला नहीं है । यह इतना उदात्त और समुन्नत है कि वह अपने में सर्वदा मानववाद को समेटकर चलता है । इनकी कहानियों में इनका व्यक्तिवाद ही मानवतावाद का प्रतीक है ।[2]"

अज्ञेय की कहानी जीवन की अनुभूति है । यथार्थ जीवन के विविध क्षेत्रों की अनुभूति कहानी में रूप लेती है । आधुनिक कहानियों की अनुभूतिशीलता अज्ञेय में सुदृढ़ है ।

---

1. अज्ञेय का कथा साहित्य - ओमप्रभाकर - पृ॰140
2. हिन्दी कहानी की शिल्पविधि का विकास - डॉ॰लक्ष्मीनारायणलाल - पृ॰263

अज्ञेय मनोविज्ञान को कहानियों में प्रामुख्य देते है । यहाँ आकर कथावस्तु पात्र के मन के चारों ओर जाती है । अज्ञेय अपनी कहानियों में सेक्स का प्रयोग करते है । लेकिन उसका स्तर ऊँचा है । आज का नवीन मानव यौन विकृतियों से बुरी तरह आक्रान्त है । इसी कारण अज्ञेय की रचनाओं में यौन-वासना का वर्णन हुआ है । इस सिलसिले में डॉ॰ केदार शर्मा का कथन स्मरणीय है । वे कहते है - "अज्ञेय के पात्रों के दृष्टिकोण में सेक्स केवल यौन तृप्ति के लिए नहीं है वरन् यह आत्मा की माँग है । एक आवश्यकता है जिसके बिना जीवन व्यर्थ है । सेक्स तृप्ति के लिए अज्ञेय के पात्र जाल नहीं फैलाते, फरेब नहीं करते, धोखा नहीं देते । समाज की आँखों में धूल नहीं झोंकते । उन्होंने सेक्स की तृप्ति की है, खुले आम की है । समाज के सामने की है । और जिनके साथ उनका यह भाव रहा है, उसको आजीवन निभाने का व्रत लिया है । शशी सदा शेखर के साथ रही है । रेखा और गौरा सदा भुवन की है । उनकी इस भावना को यदि नीति के रूढ़ि कृत्रिम पलड़ों में न तोला जाये तो इसमें कहीं विकृति दृष्टिगोचर नहीं होती ।

दूसरी बात यह है कि पात्रों की सेक्सगत भावना उनके संपूर्ण जीवन को आक्रान्त नहीं करती । वह जीवन का केवल एक आवश्यक अंग बनकर ही रह गयी है । जब अज्ञेय के पात्रों को यह अनुभूत होती है कि इस भावना के कारण वे दूसरे पात्र के विकास की बाधा बन रहे है तो वे चुपचाप बिना वेदना के, तृप्ति का एक भाव मन में लिए, सुख की अनुभूति करते हुए, उसके मार्ग से हट जाते हैं । वे अपना सब कुछ न्योछावर कर देते हैं, सब कुछ की आहुति दे देते हैं, बिना किसी प्रतिकार की भावना के । रेखा द्वारा गर्भ-शिशु की हत्या और शशि की मृत्यु ऐसे ही आहुतियाँ है ।"[1]

1· अज्ञेय साहित्य : प्रयोग और मूल्यांकन - डॉ॰केदार शर्मा - पृ॰296

आगे यौन भावना के आधार पर निम्नलिखित कहानियों का अध्ययन किया जा रहा है :-

अ· मनसो

कहानी का कथ्य

महेश परदेशी है । वह पहाड़ प्रदेश में, एक बड़ी सी चट्टान की आड़ में, एक झोंपड़ी में छिपकर रहता था । उस रवेत पहाड़ी प्रदेश की ओर स्थिर दृष्टि से देखना उसकी आदत थी । एक दिन वह उस शान्त वातावरण का आस्वादन कर रहा था कि मनसो आयी । उसने झुककर रुमाल उठाकर महेश की ओर देखा। महेश ने किसी तरह पूछा "तुम्हारा नाम क्या है" ? उसने कहा, "मनसो" उसकी आवाज में एक अजीब कम्पन था, जो वय:सन्धि की भरार्ई हुई ध्वनि के सम्मिश्रण से और अधिक आकर्षक हो गया था । महेश ने अपना नाम दाता कहकर अपने को छिपाया । वह खिलखिलाकर हंस पड़ी,"मुझे क्या" कहकर चली गयी, रुमाल से अपना मुंह छिपाकर, पहले से अधिक मुखर स्वर से छुमक छमछुमकर/ मनसो कुछ दूर नीचे की एक झोंपड़ी में रहती थी । एक दिन किसी बूटी ढूंढती वह वहां से जा रही थी कि उसको महेश ने देखा। दूसरे दिन पथ के किनारे पर गोद में घड़ा रखे बैठी मनसो उसकी दृष्टि में पड़ी[1] । अब मनसो में कुछ परिवर्तन देखने लगा । वह दिन में दो तीन बार महेश की झोंपड़ी के सामने से जाने लगी - पानी लेने भी और लेकर वापस भी । एक दिन महेश उस झरने के पास जाकर मनसो की प्रतीक्षा में बैठा था कि मनसो ने महेश के पास आकर

1· "पथ के किनारे पर लगी हुई मेंड़ पर वह बैठी थी, गोद में घड़ा रखे, घड़े के मुंह पर दोनों हाथ रखकर उन पर ठोड़ी टेके, स्थिर दृष्टि से उसकी ओर देख रही थी ।" जिज्ञासा और अन्य कहानियां - अज्ञेय

- पृ·32

अपनी उपस्थिति प्रस्तुत की । घड़े भर पानी लेकर पीठों के घोट पर पहुँचकर उसने रूमाल हटाकर एक बार स्थिर दृष्टि से महेश की ओर देखा, फिर ओझल हो गयी । महेश एक विचित्र स्निग्ध, सन्तोष मिश्रित विस्मय का भाव लिये अपनी झोंपड़ी की ओर चला, वहाँ दस बारह सिपाही खड़े थे, महेश ने चारों ओर देखा, मुस्कराकर दोनों हाथ बढ़ा दिये ।

समीक्षा

पहाड़ी प्रदेश में एक झोंपड़ी में रहनेवाली मनसो का परदेशी महेश से आकस्मिक मिलन और परिचय से प्रस्फुटित प्रेम ही इस कहानी का प्रतिपाद्य है । मनसो की झोंपड़ी के कुछ ऊपर एक पहाड़ी प्रदेश में एक चट्टान की आड़ में बनी एक झोंपड़ी में किसी कारण से छिपकर महेश रहता है । वह एक राजपूत की नौकरी करता है । पहाड़ की सुन्दरता में मुग्ध महेश के सामने से गुज़रती मनसो उसकी दृष्टि में पड़ी है । पानी भरने को जानेवाली मनसो ध्यान से महेश को भी देखती है । इस प्रकार दोनों के बीच प्यार बढ़ने लगता है । तालाब के किनारे मनसो की प्रतीक्षा में बैठनेवाले महेश से मनसो का यह कथन - "परदेशी, तुम इतने दुखी क्यों दीखते हो?"[1] से उनका तीव्र प्यार प्रकट होता है । पुलिस महेश को पकड़ ले जाती है । इस प्रकार बाह्य रूप में उनका प्यार फलता और फूलता नहीं । मनुष्य प्यार का गुलाम है । संकट काल में भी प्रेम ही मनुष्य को आशावान बना देता है । महेश का जीवन इसका उदाहरण है । नारी पुरुष का परस्पर, आकर्षण ही जीवन का आधार है । प्रस्तुत कहानी में इस तत्व का उद्घाटन हुआ है ।

---

1. परदेसी, तुम इतने दुखी क्यों दीखते हो -
विपथगा और अन्य कहानियाँ - अज्ञेय - पृ.39

आ. सिग्नेलर

कहानी का कथ्य

सिग्नेलर कहानी की नायिका रोगग्रस्त है। वह इस चिन्ता में समय काटती है कि जीवन में रोमांस तो सारे अनिश्चित स्थितियों का सामना करने में सहायक है। "वह" अपनी मामा की बेटी - उन्नीस वर्ष की सन्ध्या - के साथ उस अनामी वातावरण में गढ़ित बंगले में विधुर मामा के साथ रहती है। उसका विश्वास है कि प्रत्येक व्यक्ति में रोमांस की क्षमता है और वह कभी कभी प्रकट भी होती है[1]। कहानी की नायिका एक दिन विश्राम कर रही थी कि सामने के पहाड़ की ओर से एक बत्ती जल उठी। उस प्रकाश के सन्देश को इस प्रकार पढ़ सकता था कि आइ लव यू ....। नायिका के मामा की बेटी सन्ध्या ने उस नारी के मन में यह विचार उत्पन्न किया कि वह प्रेम का सन्देश है। वह पिछले आठ सालों से नित्य यह दृश्य देखती आयी है। सन्देश भेजनेवाला बलराज एक सम्पन्न और अधिक पढ़ा लिखा न रहने पर भी बहुत सी विद्याओं में पारंगत है। सन्ध्या और बलराज दोनों का परिचित हुए दस वर्ष हुए। सन्ध्या ने समवयस्क लड़के को तब तक देखा नहीं था। सन्ध्या के साथ उसका परिचय बढ़ा। आज वही व्यक्ति सिग्नल करके कहता है कि मैं प्रेम करता हूँ। अब तीन दिनों से सिग्नल बन्द है। सन्ध्या अब मौन है। वह नितान्त निष्क्रिय रहती है। नायिका और सन्ध्या बलराज के घर पहुँचा तो चिरक्षण क्षीण चारपाई पर पड़ा हुआ उसको।

---

1. "तुम्हें मैं कोई प्रमाण तो नहीं दे सकता, फिर भी मैं सिद्धान्ततः यह मानता हूँ कि प्रत्येक व्यक्ति में रोमांस की क्षमता है, और वह कभी न कभी प्रकट भी होती है - दूसरे के आगे नहीं तो, उस व्यक्ति के आगे अवश्य, जिस में वह हो।" अछूते फूल और अन्य कहानियाँ - अज्ञेय - पृ.160

अब सन्ध्या के लिए वह टोर्च, रोमांस, हमेशा के लिए बुझ गई है । अब उसे कोई बुलाता है तो मृत्यु .... ।

समीक्षा

मनुष्य कुछ चाहता है और कुछ हो जाता है । इस कहानी की नायिका "मैं" अपने मित्र विमल को पत्र लिखकर, रोगशैया में पड़ने पर भी, रोमान्स की आशा करती है । वह विमल को एक एक करके पाँच पत्र लिखती है । और रोमांस की "आशा में समय काटती है । उसकी अभिन्न, उन्नीस साल की युवती सन्ध्या नवराज नामक युवक से आठ साल से प्यार करती आ रही थी । उनके बीच कोई बाधाएं नहीं थी । लेकिन प्रकृति ने नवराज को निरर्थक करके सन्ध्या से प्रतिकार किया । सन्ध्या के लिए अब दूसरे एक व्यक्ति से प्रेम करने को उसमें कुछ बाकी नहीं है । मैं" नामक नायिका भी रोगी रहने के कारण अपने मित्र को प्यार दे न सकी । इस प्रकार इस कहानी में रोग से पीड़ित दो व्यक्तियों के अपूर्ण प्रेम की कहानी कही गयी है । इसमें यह दिखाया गया है कि प्रकृति कभी कभी मनुष्य के विरुद्ध जाती है । मनुष्य अन्तिम क्षण तक आशा के बल पर जिन्दा रहता है । इस कहानी में प्रेम का मौलिक विकास नहीं होता ।

यह पत्रात्मक शैली में लिखित कहानी है । पत्र केवल "मैं" ने अपने मित्र विमल को लिखा है और "मैं" के क्रमशः पाँच पत्रों के समन्वय से "सिगनेलर" कहानी की अभिव्यक्ति हुई है । अन्तिम दो पत्र डायरी के पृष्ठों के रूप में है ।

ङ. अछूते फूल

कहानी का कथ्य

मीरा छब्बीस वर्ष की युवती है । उसने बी॰ए॰ डिग्री प्राप्त कर ली थी । बाद में राजनीति में भाग लिया था, जेल भी हो आयी थी, सभ्य समाज में अपना स्थान बनाया था, बीमा की एजेंसी भी की थी । पुरुषों को अपनी ओर आकृष्ट करने की उसमें विशेष शक्ति थी । कालेज में पढ़ते समय कुछ लड़के उसकी ओर आकृष्ट रहते थे । मीरा उनसे खेलती थी, उन्हें नचाती थी, उनसे काम लेती थी । लेकिन, उसने पुरुषों से एक अलगाव स्थापित रखा था । पुरुषों से मिलजुलकर रहने पर भी वह अछूती रह गयी थी - अस्पृश्य रहती थी । उन पुरुषों को उसने एक एक करके हटा दिया था । एक दिन सैर करके वह घर लौट रही थी । दूर ही से साइकिल की घंटी सुनकर मीरा कुछ चौंकी, फिर उसने पथ पर से एक छोटी सी टूटी हुई डाल उठा ली और साइकिल के पहिए की ओर फेंक दी । साइकिल तीव्र गति से जा रही थी । डाल की लकड़ी पहिए की सलाइयों में अड़ गयी, साइकिल लड़खड़ायी और एकदम से रुक गयी । सवार मुँह पर बल खाकर नीचे गिरा । मीरा ने उसे तांगेवाले के सहारे अस्पताल पहुँचाया । साइकिलवाला बच गया । मीरा अस्पताल से घर लौटी । लेकिन उसका चेहरा मीरा की आँखों के आगे फिरने लगा । वह अपने बारे में सोचकर रोने लगी ।

समीक्षा

"अछूते फूल" नामक इस कहानी में मीरा नामक युवती की वेदना कही गयी है । वह सुशिक्षित, संस्कृत और समाज में समादरणीय है । फिर भी तृप्त नहीं है । उसके दिल के कोने में किसी बात की कमी का अनुभव हो रहा है

वह पुरुष को चाहती है लेकिन पुरुष के स्वार्थ से नफरत है । इसलिए वह अन्त तक अस्पृश्य और अछूत रहती है । पुरुष के स्वार्थ से उसके प्रति ईर्ष्या का भाव पैदा होता है । इस ईर्ष्या के कारण वह उस साइकिलवाले को नीचे गिरा देती है । लेकिन उस पुरुष की वेदना से उत्पन्न अवस्था उसमें परिवर्तन लाती है । पुरुष परिचालन और सेवा शुश्रूषा से वंचित होकर वह अपने को अस्पृश्य समझती है और अपनी विधि पर रोती है । एक पुरुष की वेदना को निकट रहकर समझने पर वह चिन्ताग्रस्त हो जाती है । उसका रुदन अपनी असहाय अवस्था का प्रमाण सा लगता है ।

ई· नीलीहंसी

कहानी का कथ्य

असम प्रान्त में ब्रह्मपुत्र नदी की पृष्ठभूमि में यह कहानी चलती है । देवकान्त के पिता कुशल महावत है और हाथी को साधने में उनकी बराबरी सारे आसम में विरला ही कर सकता है । उस प्रदेश में दो वर्ष बराबर बाढ़ आयी थी, चीज प्रायः नामशेष हो गया था । और अब वहाँ न जलने को तेल था न खाने को नमक । देवकान्त कदली के तने जलाकर उनकी राख से नमक बनाता था कि वहाँ नीलिमा कुछ नमक लेकर आयी । नीलिमा और देवकान्त दोनों पड़ोसी हैं । उनके बीच परिचय बढ़ने लगा । एक दिन नीलिमा ने देवकान्त को मोहन नामक एक मृग के छौने को दे दिया । नीलिमा के घर में उस मृग की देखरेख करना आसान कार्य नहीं था । देवकांत और नीलिमा के बीच धीरे धीरे प्यार बढ़ने लगा । कभी कभी देवकांत बहुत कष्ट सहकर केवड़े का फूल लाता था । नीलिमा को यह सोचकर अधिक दुख हुआ कि जिस प्रदेश से यह फूल मिलता है वह घोर वन है, हिंस्र जन्तुओं का विहार है । देवकान्त के प्रति नीलिमा के मन में गहरा प्यार उमड़ता

देवकान्त ने पढ़ाई पूरी कर ली है, उसने स्कूल में मास्टरी शुरू की । नीलिमा की चिट्ठी में लिखा था - "वे लोग गाँव छोड़कर जानेवाले हैं । इस साल भारी बाढ़ की संभावना है । उसे मोहन की चिन्ता है ।"[1]

समीक्षा

यह एक प्रेम कहानी है । इस कहानी का देवकांत और नीलिमा बचपन से मित्र है । दिनों दिन उनके बीच मित्रता सुदृढ़ होती जा रही । धीरे धीरे मित्रता प्रेम में परिवर्तित हो गयी । शिक्षा पूरी करने के बाद देवकांत डिब्रूगढ़ में मास्टरी करने को गया । दोनों इस प्रकार अलग हो गया । एक दिन देवकांत को नीलिमा की एक खत आयी । बाढ़ से डरकर उस गाँव छोड़कर चले जाने की खबर पाकर देवकांत अनिश्चित हो गया । उसने निश्चय किया कि नीलिमा के उस मृगछौने का संरक्षण वह करेगा और इस प्रकार नीलिमा के साथ प्रतिबद्ध रहेगा । प्रेम की स्मृति में उसकी भेंट उस मृग का पालन पोषण वह अपना कर्तव्य समझता है । और वन से केवड़े का फूल लाकर नीलिमा को देना और इस प्रकार वन से फूल लाने के कष्ट की चिन्ता से फूल केलिए वन को न जाने की अभिलाषा की प्रार्थना उनके बीच के सघन प्यार का उदाहरण है ।

----

1. "हज़ार बार कहा है देवू, मुझे फूल नहीं चाहिए, मुझे तुम्हारी........"
सहसा रुककर उसने ओठ काट लिया, उसका चेहरा लाल हो आया, "अच्छा लाओ दो" - कहकर उसने फूल झपट लिया और आँचल ढकती हुई भाग गई ।

- जयदोल - अज्ञेय - पृ.123

उ. हारिति

कहानी का कथ्य

हारिति अविवाहिता है । जर्मन सेना के अत्याचार से उसके माँ-बाप की मृत्यु हुई । अब हारिति कैंटन सेना में जासूस का काम करती है । वह प्रायः पुरुष वेष में ही रहती है[1] कभी कभी आवश्यकता होने पर ही स्त्री वेश पहन लिया करती है । कैंटन सेना के सैनिकों के आगे साम्य का आदर्श था, युवान शिकाई के आगे व्यक्तिगत लाभ का । कैंटन के आगे प्रजातन्त्र की चाह थी, युवान सैनिक के आगे साम्राज्यवाद का । हारिति बहुत ईमानदार सेवक और सैनिक है इसलिए कर्नल ने उसे कैंटन में डायना पेंडू के घर भेजा, एक पत्र के साथ । चाँदी से बना हुआ एक छोटा सा चीनी अक्षर [जासूस का चिह्न] भी निकाल दिया । हारिति बाढ़ से उमड़ती भयानक सिक्यांग नदी को पार कर गयी । उसके साथ दस एक साथियाँ भी थी उनमें क्वांमियन भी । हारिति और क्वांमियन दोनों एक दूसरे को चाहते थे । वे मिलकर शत्रुओं पर टूट पड़े । अब दो मील बाकी है । शत्रु बहुत पास आ गए हैं । सिक्यांग पर का पुल टूट गया था । इसलिए नदी पार करने केलिए तैरने के सिवा और कोई उपाय नहीं था । हारिति क्षण भर स्थिर दृष्टि से क्वांमियन की ओर देखती रही । फिर घोड़े समेत उस अथाह जलराशि में गिर गई । क्वांमियन अब भी शत्रुओं से लड़ रहा था । गोलियाँ अभी चल रही थी वह बुरी तरह घायल हो गया । उसकी आँखें हारिति को ढूँढने लगी । पुल के कुछ दूर उसने एक वेणीहीन सिर देखा । हारिति तैरती जा रही थी ।

---

1. जब शत्रु-पक्ष की ओर से बौछार आती, तब वह कुछ चिन्तित होकर पूछती, "क्वांमियन, कहाँ हो तुम ?" और वह हँसकर उत्तर देता - "हारिति, हमारी जीत होगी ।" फिर वह शान्त हो जाती थी ।
- अमरवल्लरी और अन्य कहानियाँ - अज्ञेय - पृ. 37

शत्रु के पकड़ में आने के पहले उसने स्वयं मारा[1]। डेल्टा के बाहर, सिक्कयांग के किनारे बैठे हुए मछुओं ने उस नदी से एक शरीर निकालकर नाव में रखा और किनारे पर ले आए। उसने आँखें खोलीं। उन मछुओं ने उसे उठाकर डायना पेङ् के घर पहुँचे। "आपकेलिए एक पत्र है" - हारिति ने पत्र निकालने का प्रयत्न किया। पर हाथों में शक्ति नहीं थी। अपने कमरबन्द की ओर इंगित करके ही रह गयी। डायना ने पत्र को चूम लिया और धीरे से कहा "प्रियतम"। उसने आँखें मूँद लीं। दो तीन चित्र और दो तीन स्मृतियाँ उसके आगे दौड़ आयीं[2]। वह निष्प्राण हो गयी।

समीक्षा

चीन की आज़ादी केलिए और प्रजातन्त्र की स्थापना केलिए लड़नेवाले दल के साधारण सेवक है हारिति। इस युवती ने जीवन में कभी भी सुख और आनन्द का अनुभव नहीं किया है। वह हमेशा कर्तव्य में निरत रहती थी। वह पुरुषों के समान वेश पहनकर और हाथों में पिस्टल लेकर दिन रात शत्रु के विरुद्ध लड़ती रहती थी। हारिति च्वानमियन नामक दूसरे एक साथी से प्यार करती थी। शत्रुओं से हारिति की रक्षा करते करते च्वानमियन ने घायल होकर निष्प्राण होने के पहले आत्महत्या की। इस प्रकार हारिति ने भी अपने प्रियतम की प्रीति की शीतल छाया को मन में रखकर कर्तव्य में निरत होकर प्राण छोड़े है। हारिति और च्वानमियन का प्रेम सांसारिक दृष्टि से अपूर्ण निकलता है। प्रेम की स्मृति में कर्तव्य की

---

1. च्वानमियन ने कहा - "हारिति, मेरा काम पूरा हुआ।"
अमरवल्लरी और अन्य कहानियाँ - अज्ञेय - पृ.44

2. दो तीन चित्र उसके आगे दौड़ गये - दो तीन स्मृतियाँ - वे मरते हुए बन्धु - वह दिन, घोड़ा - च्वानमियन और उसके शब्द - "हारिति, हमारी जीत होगी।" "हारिति, क्या यह विदा है?" "जाओ, हारिति जाओ। तुम वीर हो - मैं भी अधीर नहीं होऊँगा।"
- अमरवल्लरी और अन्य कहानियाँ - अज्ञेय - पृ.47

पूर्ति केलिए दोनों मर मिटते है । निस्वार्थता और साम्यवाद की भावना से प्रभावित इस युवक लेखकों में अटूट आत्मविश्वास और कठिन प्रयत्न करने की क्षमता दर्शनीय है । हारिति और बलामयिन में प्रेम और कर्तव्य दोनों का दृष्टान्त है ।

उ॰ पठार का धीरज

कहानी का कथ्य

किशोर की प्रेमिका है प्रमीला । वह भी उसे चाहती है । [illegible] प्रमीला राजकुमारी हेमा की सहेली है । किशोर और प्रमीला दोनों मिलते समय राजकुमारी और कुंवर के बारे में सोचते थे[1] । कुंवर राजकुमारी हेमा का प्रेमी है । कुंवर नित्य हाथी पर चढ़कर राजकुमारी से मिलने आता था[2] । राजकुमार और राजकुमारी दोनों हर दिन मिलते थे । एक दिन हेमा नितान्त उदासीन दीख पड़ी । कुंवर, के पूछने पर, उसे भरपूर देखते हुए कहा, हाँ आज तिलक हो गया । ऐसी बातों में राजकुमारियों की राय नहीं पूछी जाती थी । राज्य के कल्याण केलिए उन्हें तिलक स्वीकार करनी पड़ी है[3] ।

---

1. और इसी तरह कुंवर राजकुमारी को प्यार करता होगा और कुंड के किनारे मिलने आता होगा और उसी की बातें पलाशों ने सुन रखी है और हवा को सुनाते हैं .... ।" जयदोल - अज्ञेय - पृ॰13
2. अपनी छाया को । चन्द्रोदय होते ही वह कुंड पर आता था, हाथी पर सवार उसकी अपनी छाया कुंड के एक ओर से बढ़कर दूसरे किनारे नहाती हुई राजकुमारी की जुन्हाई सी देह को घेर लेती थी । उसी लम्बी बढ़नेवाली छाया से कुंवर को प्रेम था, राजकुमारी तो योंही उसकी लपेट में आ जाती
वही - पृ॰13
3. हेमा ने धीरे धीरे कहा - मैं राजकुमारी हूं । ऐसी बातों में राजकुमारियों राय नहीं पूछी जाती । साधारण कन्यायें राय देती होगी, पर हमारा जीव राज्य के कल्याणके पीछे चलता है ।" वही - पृ॰15

कुँवर ने राजकुमारी को साथ लेकर कहीं दूर भाग जाने का निश्चय किया । लेकिन राजकुमारी के लिए भाग जाना साधारण कार्य नहीं है । वह देश की शान्ति की धरोहर है । हेमा के मन में कुँवर के प्रति अपार प्रेम है । देश की शान्ति को नष्ट करने की कामना भी वह नहीं कर सकती थी । किसी भी समय कुँवर से मिलने केलिए वह तैयार है । वह कुँवर को मन-प्राणों से चाहती है । वह कुँवर के सामने अपने को समर्पित करती है । कुँवर ने जहाँ राजकुमारी की सगाई हुई थी वहाँ आक्रमणकिया । वह लौट आया नहीं । कई दिन महीने और वर्ष बीत गए । आज भी वह नहीं जानती कि वह केवल वाग्दत्ता है कि विधवा कि केवल इस कुंठ की विवाहिता वधू जिसकी सहेलियों से खेलते उसने वर्ष बिता दिए ।

<u>समीक्षा</u>

"पठार का धीरज" नामक यह कहानी त्याग और प्रेम की कहानी है । इसमें राजकुमारी हेमा और कुँवर का प्रेम और उससे उत्पन्न कठिनाइ पर प्रकाश डाला गया है । राज्यों के बीच शान्ति स्थापित करने केलिए हेमा तिलक स्वीकार करती है । तिलक स्वीकार करने पर भी प्रेम के कारण कुँवर के सामने वह अपने को समर्पित करती है । जिस राज्य से तिलक आया उस राज्य पर आक्रमण करने को कुँवर जाता है । लेकिन अब तक वह लौट आया नहीं । हेमा को पता नहीं कि वह केवल वाग्दत्ता है कि विधवा कि इस कुंठ की विवाहिता वधू । राजकुमारी अपनी इच्छा को राज्य की भलाई से अलग नहीं देख सकती । राज्य के अस्तित्व पर ही राजकुमारी की गरिमा निर्भर है । साधारण जनता का स्वातन्त्र्य तो राजपरिवार के सदस्यों को प्राप्त नहीं है । "साधारण कन्यायें राय देती होंगी, पर हमारा जीवन राज्य के कल्याण के पीछे चलता है - " से यह व्यक्त होता है कि राजकुमारी राज्य की संपत्ति है । उसका अलग अस्तित्व नहीं है ।

वह राज्य के लिए विवश होकर अपनी अभिलाषाओं को कुर्बान करती है । राज्य की भलाई के लिए अपने को जलानेवाली राजकुमारी की वेदना चित्रित है इस कहानी में ।

४. वे दूसरे

कहानी का कथ्य

सुधा हेमन्त की पत्नी है । दोनों सभ्य नागरिक है । लेकिन पारिवारिक वातावरण में होनेवाली स्वच्छन्दता और स्निग्धता उनमें नहीं है । दोनों अलग अलग व्यक्तित्व के प्रतीक के रूप में दिखाई पड़ते हैं । शादी हुए तीन वर्ष हुए, तलाक के बारे में भी वे सोचते है । जब विवाह हुआ था, तब दोनों जानते थे कि दोनों का पहले अन्यत्र लगाव रहा है, जो मिटा नहीं है, लेकिन जिसका कोई रास्ता भी नहीं है । हेमन्त को याद आया, ब्याह के बाद सुधा को उस दूसरे की एक चिट्ठी मिली थी । पर दो दिन बाद सुधा ने – 'यह चिट्ठी आयी थी – पढ लो" कहकर हेमन्त को दिखाया । उस कागज पर लिखे हुए एक वाक्य पर उसकी दृष्टि रुक पड़ी थी – "और मै सोचता हूँ कि तुम शीघ्र ही उसके बच्चे की माँ भी होगी – उस बच्चे की सूरत उस जैसी होगी, लेकिन वह तुम्हारी देह ।" हेमन्त और सुधा दोनों अलग हो गए । उन दोनों के दिल में कोई अपराध या कटुता की भावना नहीं है । सुधा ने पीछे हटते हुए नमस्कार किया और चल पड़ी । हेमन्त क्षण भर उसे देखता रहा । उसने लम्बी सांस ली । फिर सहसा याद करके देखा सुधा दूर पर चली जा रही थी । और अभी तक वह अकेली थी, अब दूर के एक झाड़ के पीछे से एक और व्यक्ति उसके साथ हो लिया और क्षण ही भर बाद कदम से कदम मिलाकर चलने लगा । हेमन्त ने पहचाना, वही दूसरा ।

समीक्षा

हेमन्त और सुधा ने तीन वर्ष तक पति-पत्नी का जीवन बिताया । एक दिन सुधा किसी दूसरे के साथ चली जाती है । शादी के पहले सुधा का उससे सम्बन्ध था । यह सम्बन्ध जानकर भी सभ्य समाज के सदस्य रहने के कारण ही हेमन्त और सुधा की शादी होती है । और इसी सभ्यता के कारण ही दोनों जल्दी अलग हो जाते हैं । आजकल पारिवारिक जीवन में पारस्परिक विश्वास और पवित्रता घटती जाती है । पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव जीवन के हर क्षेत्र में देखने को मिलता है । लेकिन हमारे सभ्य समाज तो उसके कुप्रभावों से ही लाभ उठाता है । सुधा ऐसी सामाजिक दशा की उपज है । अपने पति के सामने वह दूसरे आदमी से खुलकर मिलती और उसके कदम से कदम मिलाकर चलती है । आजकल की पढ़ी लिखी युवतियाँ स्वातन्त्र्य चाहती है, वह पुरुष के समान आज़ादी चाहती है । इस कहानी की नायिका इसका उदाहरण है । वह पति से प्रतिबद्ध नहीं दीख पड़ती । उसकेलिए उसका दूसरा आदमी ही मुख्य है । यह विवाहेतर यौन भावना का उदाहरण है ।

५. <u>मेजर चौधरी की वापसी</u>

<u>कहानी का कथ्य</u>

मेजर चौधरी सेना में काम करता था । एक बार आँख और कुल्हे में चोट लगी थी, इसलिए सेना से छुट्टी पा बाहर आया । चौधरी विवाहित है लेकिन निस्सन्तान । पिछले साल में कुछ महीने मिलिटरी पुलिस में चला गया था । उस समय की एक घटना इसमें वर्णित है । मेजर चौधरी विभाग में प्रोवोस्ट मार्शल के दफ़्तर में था । तब उस डिविज़न की कुछ गोरी पलटनें वहाँ विश्राम और नये सामान केलिए बर्मा से लौट आयी थी ।

एक रात वह जीप लिये गश्त पर जा रहा था । झुरमुटों के किनारे खोजते हुए उसने देखा कि एक गोरा फौजी छिपना चाह रहा है । उसने उसका नाम, नम्बर, पलटन आदि का पता लिख लिया और छोड़ दिया । पर दो दिन बाद फिर एक अजीब परिस्थिति में उसका सामना हुआ । पुलिया के नीचे एक पहाड़ी औरत गुस्से से भरी खड़ी थी और कुछ दूर पर एक अस्तव्यस्त गोरा फौजी, जिसकी टोपी और पेटी जमीन पर पड़ी थी और बुश शर्ट हाथ में । चौधरी ने पहचान लिया कि वह परसोंवाला व्यक्ति है और काफी नशे में है । चौधरी ने यह समझ लिया कि दो तीन घंटे पहले वह गोरा एक बार उस औरत के पास हो गया था और फिर आगे गाड़ी की तरफ चला गया था । लौटकर फिर उसे वह रास्ते में मिली तो गोरे ने उसे पकड़ लिया था । झगड़ा इसी बात का था कि गोरे का कहना था, वह रात के पैसे दे चुका है, और औरत का दावा था कि पिछला हिसाब चुका था, और अब फौजी उसका देनदार है । गोरे को गिरफ्तार किया और उस स्त्री को धमकाकर दौड़ा दिया । रास्ते में चौधरी के इस प्रश्न पर कि तुम्हें शर्म नहीं आया अपने फौज का और ब्रिटेन का नाम कलंकित करते ? उसने कहा कि "सर, वह अच्छी औरत नहीं है, वह रुपया लेती है - मैं तीन दिन से रोज उसके पास आता हूं ।" उसने खुलकर स्वीकार किया कि वह स्त्री चाहती है - "सच बताऊं सर, मुझे औरत चाहिए" - चौधरी ने उसे सड़क पर कहीं उतार दिया - जहां आसपास कहीं गाड़ी का नाम निशान न हो और लौट आना भी जरा मेहनत का काम हो ।

समीक्षा

यह कहानी सेना में काम करनेवाले एक गोरे की यौन भूख की बात कहती है । वह मधुशाम करता और स्त्री के पास जाता है । इस कहानी में यह गोरा एक ही स्त्री के पास दो तीन बार गया, उसके साथ झगड़ा करते समय वह मेजर चौधरी की दृष्टि में पड़ी । चौधरी के पूछने पर वह स्वीकार करता है कि उसको औरत चाहिए ।

यह सैनिक तो स्त्री का शरीर मात्र चाहता है, परिवार और बच्चों से हमेशा अलग रहने से जीवन के कठोर पक्ष का अनुभव ही उसे मिलता है । जीवन में कठोर रहने का वातावरण उसे हर प्रयत्न में कोमल पक्ष से दूर ले जाता है । परिवार के शान्त वातावरण से अलग रहने के कारण ही उसमें स्त्री के प्रति यह कठोर व्यवहार प्रकट होता है । सैनिक में तो उसकी जीवन परिस्थितियों का प्रभाव दर्शनीय है । इसमें विवाहेतर रति का उदाहरण मिलता है ।

जीवित प्राणियों के पारस्परिक आकर्षण का मुख्य कारण है यौन-सम्बन्ध की आकांक्षा । यह जीवन का आवश्यक अंग है । सृष्टि का मूल रूप यह यौन-भावना है । "ममसो" नामक कहानी के नायक महेश अपना देश छोड़कर पुलिस के डर से पहाड़ी प्रदेश में जाकर रहने को बाध्य हो जाता है । इस बीच महेशका ममसो नामक युवती से परिचय हुआ । उसके मन में जीवन के संकट को पार करके जीवित रहने की आशा जगती है जाती है । इसमें नायक नायिका का संयोग तात्कालिक रहता है । अज्ञेय की कहानियों में लैंगिकता बहुत कम है । ममसो और महेश का प्रेमपूर्ण रहता है । "सिग्नेचर" कहानी की नायिका और विमल, सन्ध्या और बलराज दोनों जोड़ियों में प्यार शांत वातावरण में पल्लवित होता है । लेकिन कहानीकार ने नायिका या नायक को रोगी बनाकर यह दिखाया है कि मनुष्य को केवल आशा के साथ जीवन बिताने का अधिकार मात्र है । यहाँ कहानीकार ने यौन भाव को विकसित होने का अवसर नहीं दिया है । इस कहानी की यह भी एक विशेषता है कि दोनों जोड़ियों के सामने रोग के सिवा कोई बाधाएं नहीं है । लेकिन रोग तो मारक है और उन्हें अलग करता है । "अछूते फूल" नामक कहानी एक नारी की वेदना की कहानी है । वह शिक्षित और संपन्न नारी है । पुरुष के स्वार्थ से उसे धक्का है । ऐसी एक घटना हुई जिससे वह पुरुष की वेदना समझने में समर्थ हो जाती है और स्त्री सहज स्वभाव - पुरुष की सेवा - से प्रेरित होकर अपनी विधि पर रोती है । इसमें यह दिखाया गया है कि पुरुष की सेवा-शुश्रूषा में ही नारी पूर्णता प्राप्त करती है ।

"नीली झील थी" का देवकांत और नीलिमा बचपन का मित्र और पड़ोसी है । खेल कूद और स्कूल में वे एक साथ रहते थे । वे प्रेम में आबद्ध हो जाते हैं देवकांत डिग्रलगढ में अध्यापक बन जाता है । बाढ़ के कारण नीलिमा माँ बाप के साथ गाँव छोड़ जाती है । इस प्रकार दोनों अलग हो जाते हैं । नीलिमा की भेंट एक मृग छौने की देखरेख में दिन काटता है, वह इसमें भी नायक और नायिका का भौतिक सुख अपूर्ण रहता है ।

"मनसो", "सिंगनेसर", "अछूते फूल" और "नीली झील थी" इन चार कहानियों में यह प्रकट हुआ है कि नायक नायिका का मेल कुछ समय केलिए मात्र शेष रहता है । "मनसो" में महेश को पुलिस पकड़ ले जाती है और मनसो प्रेमी से अलग हो जाती है । सिंगनेसर कहानी में बीमारी प्रेम की सफलता में बाधक हो जाती है । "अछूते फूल" में छब्बीस वर्ष की मीरा की वेदना है । वह एक पुरुष की सेवाशुश्रूषा से वंचित होकर निर्णय पर रोती है । "नीली झील थी" की निलिमा और देवकांत प्रकृति कोप से दूर हो जाते हैं । इस प्रकार इन चार कहानियों में विवाह पूर्व यौन भावना के वियोग रस का परिचय मिलता है ।

"हारिति" की हारिति और क्वानयिन साम्यवादी दल के प्रवर्तक है | युवान शिकाई के नेतृत्व में एक अन्य दल साम्राज्यवाद और व्यक्तिगत लाभ के लिए काम करता था । क्वानयिन, हारिति अन्य साथियों के साथ युवान के दल से लड़ता था । इसी बीच उनकी मृत्यु भी हुई । हारिति और क्वानयिन प्रेमबद्ध थे । इस कहानी की नायिका उपर्युक्त कहानी की तुलना में बहुत वीर और नेतृत्वगुण से संपन्न है । कहानी चीन की पृष्ठभूमि में गठित है इसलिए ऊपर कही गयी कहानी की अपेक्षा इसमें भी मिलता है । देश केलिए लड़नेवाली हारिति दूसरी नायिकाओं से आगे है । वह अपनी कर्तव्य की पूर्ति करते करते गोली से मरती है । मरते वक्त अपने

प्रियतम की भी इस प्रकार गोली से हुई मृत्यु की स्मृति उसमें जागती है । वीरता और प्रणय से गुंथकर लिखी गई यह कहानी अज्ञेय की विद्रोही प्रवृत्ति का भव्य उदाहरण है ।

"पठार का धीरज" राजकुमारी हेमा और कुंवर राजकुमार की कहानी है । राजकुमारी और कुंवर का प्रेम इतना सुदृढ है कि वह जीवन भर उसकी प्रतीक्षा में अविवाहित रहती है । देश के बीच शान्ति स्थापित करने केलिए हेमा राजकुमारी केलिए दूसरे एक राज्य से तिलक स्वीकार करती है राजकुमारी स्वयं कुंवर केलिए समर्पित कर चुकी थी । कुंवर ने उस राज्य पर चढाई की जहाँ से तिलक आया था । लेकिन कुंवर लौट आया नहीं । राज कुमारी हेमा उसकी प्रतीक्षा में जलती रहती है । यह त्याग और ईमानदारिता पर गठित कहानी है । इसमें राजकुमारी साधारण जनता के स्वातंत्र्य से दीक्षित है, यह चित्रित हुआ है ।

"वे दूसरे" कहानी आज कल के युवक और युवतियों की बात कहती है । पढे-लिखे सभ्य समाज में चलनेवाली बातों की ओर यह कहानी अंगुली उठाती है । इसमें पाश्चात्य संस्कृति का एक प्रभाव दर्शनीय है । सुधा विवाह के पहले किसी दूसरे से लगाव रखती थी । विवाह के बाद भी सुधा वह रिश्ता नहीं तोड सकी । यह जानकर हेमन्त कुपित होता है । सुधा उस प्रेमी युवा के साथ चलती है । इस केलिए तलाक करके वह स्वतंत्र हो जाती है । इसमें पौराणिक बात से बहुत स्वतंत्र नायिका का चित्र मिलता है । वह पुरुष के आगे समान अधिकार चाहती है । कभी कभी पुरुष से अधिक स्वातन्त्र्य का अनुभव करती है । इसमें कहानीकार का आधुनिक दृष्टिकोण प्रकट है ।

"मेजर चौधरी की वापसी" एक अंग्रेज़ी सैन्यिक की कहानी है । मद्य और स्त्री का सहवास उस गोरे की ज़रूरी आवश्यकताओं में है । वह स्त्री के पास पैसे के साथ जाता है । एक दिन उसने उस स्त्री से झगड़ा भी किया । इसमें सैन्यिकों का स्वभाव और उनके जीवन पर वातावरण का प्रभाव दिखाया गया है । उसकी यह विशेषता है कि वह अपने बोस के आगे यह स्वीकार करता है कि वह स्त्री और मद्य का उपयोग करता है । इसमें घरवाली और बच्चों से दूर रहने से उत्पन्न मनोदशा और उसका प्रभाव दिखाया गया है साथ ही साथ इसमें कहानीकार ने एक वेश्या का रूप भी दिखाया है ।

अज्ञेय अपने पात्रों के द्वारा यह कहते हैं कि यौन-भावना शरीर की आवश्यकता है, मन की माँग है । यौन-भावना के बिना जीवन व्यर्थ है । अज्ञेय के पात्रों यौन-भावना बिना स्वार्थ विकसित होती है ।

पाँचवाँ अध्याय

यौन-भावना के आधार पर मोहन राकेश,
राजेन्द्र यादव और कमलेश्वर की
कहानियों का अध्ययन ।

पाँचवाँ अध्याय

यौन-भावना के आधार पर मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव और कमलेश्वर की कहानियों का अध्ययन

प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में जीवन की विभिन्न समस्याओं का उल्लेख किया । उनके प्रयत्न से हिन्दी कहानी यथार्थ की भूमि पर आ गयी । साहित्य की यह विधा उपयोगितावादी दृष्टिकोण से मानव चित्तवृत्तियों का अध्ययन प्रस्तुत करने लगी । मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कमलेश्वर आदि कहानीकार की कहानियों में समकालीन युग जीवन की अभिव्यंजना मिलती है ।

मोहन राकेश समकालीन कहानीकारों में प्रमुख है । डॉ॰ सुषमा अग्रवाल के शब्दों में "मोहन राकेश की कहानियों में मनुष्य के राग विराग, आसक्ति, अनासक्ति, स्वीकार-अस्वीकार, ग्रहण और त्याग, जीवन के गुह्य और जटिल सम्बन्ध की त्रासदी और उससे उत्पन्न विभिन्न मनःस्थितियों का यथार्थ विश्वसनीय और सही अंकन हुआ है । राकेश के साहित्य का

सर्वप्रमुख गुण है : अनुभूति की ईमानदारी और अभिव्यक्ति की निश्छल प्रसन्नता और सबसे बड़ी उपलब्धि है समकालीन जीवन की समग्र पहचान, पकड़ और सूक्ष्म संवेदनात्मक अभिव्यक्ति[1]।" उनकी कहानियाँ परिवेश के सिलसिले में निहित मानवीय सम्बन्धों की बात करती है। राकेश की कहानियाँ स्थायी महत्व की कहानियाँ हैं। जीवन में प्रकट सुख-दुख, ऊब, अकेलापन, उदासीनता और मानव-मानव के बीच दीखनेवाली कटुता और तिक्तता का अंकन उनकी कहानियों का विषय है।

नारी के प्रति राकेश ने गहरी सहानुभूति प्रकट की है। राकेश ने जीवन की विविध आधुनिक परिस्थितियों और परिवेश से सम्बन्धित व्यक्ति को समस्त सामाजिक अन्तर्विरोधों सहित देखा-परखा है। नारी के प्रति लेखक की गहरी सहानुभूति है। बदलते हुए पारिवारिक और सामाजिक परिवेश में नारी के प्रति बदलते मूल्यों को राकेश ने भी भलीभाँति रेखांकित किया है[2]। भोगे हुए जीवन को उन्होंने कहानी में अभिव्यक्ति दी है। डॉ॰ शिवशंकर पाण्डेय का कथन स्मरणीय है कि "रूढ़ियों की जगह नये मूल्यों की स्वीकृति ही राकेश की कहानियों की अपनी ज़मीन है। जिन्दगी से जुड़े हुए रहना राकेश के लिए एक अनिवार्यता थी, इसलिए उनकी कहानियाँ जीवन और उसमें होनेवाली निरन्तर संघर्ष की कहानियाँ हैं[3]।"

इस अध्याय में मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव और कमलेश्वर की कहानियों का अध्ययन यौन-भावना के आधार पर किया जा रहा है।

[illegible]

1. कहानीकार मोहन राकेश - डॉ॰सुषमा अग्रवाल - पृ॰14
2. वही - पृ॰48
3. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी -स्वरूप और विकास - डॉ॰शिवशंकर पाण्डेय - पृ॰188

ब• अभिन्न जीवन

कहानी का कथ्य

मीरा सत्रह साल की युवती है । दस साल पहले उसकी आशा जीजी की शादी हुई थी । एक महीना पहले जीजी ने आँखें मूँद ली और उसके स्थान पर आज वह स्वयं वहाँ आ गयी है । दस वर्ष पहले एक अपरिचित व्यक्ति को जीजा के रूप में देखा था । आज से उसी को पति के रूप में पहचानना है । आग की साक्षी में वाग्दान करके माँ ने आँसु पोंछ लिए । उसके पिता की मृत्यु भी हुई । वह जीजा की एकमात्र लड़की कृष्णाकी मौसी थी अब तक । आज से उसकी सौतेली माता है । मीरा की आँखों के आगे श्मशान का वह दृश्य आया, जब आशा जीजी की चिता से चिनगारियाँ निकली थी । समय के संकेत ने मीरा को सौभाग्यवती बना दिया । बिना सज धज और चहल पहल के विवाह हो गया । वह अपने भाग्य के बारे में सोचने लगी । अभी रात होनेवाली है ।विचारों को उसने झटक दिया । उठकर फिर टहलने लगी । फूलदान के फूल ठीक किए । सिंगार मेज के पास जाकर शीशे में चेहरा देखा । आँखों में मांसलता है और गालों पर गुलाबीपन । आज उसकी सुहागरात है । उस पर शिथिलता छा गयी । वह पलंग पर बैठ रही फिर लेट गई । गरम साँस के स्पर्श ने मीरा की पलकों को खोल दिया । दो उत्सुक होंठ उसके होंठों के बहुत निकट आ रहे थे । मीरा सहमी और सिमटने लगी । दो हाथों ने उसकी बाँहों को पकड़ लिया । बाहर अन्धकार था । आज वह नासमझ बालिका नहीं, समझदार नवयुवती है ।

समीक्षा

इसमें एक माता अपनी बेटी की शादी असहाय अवस्था में, उस पुरुष से कर देती है जो अपनी बड़ी बेटी के पति है, अपने भविष्य के सुनहले स्वप्न को जिन्दा करने के लिए विवश होकर मीरा अपने जीजा को पति के रूप में स्वीकार करते हैं। जीजी की बेटी कृष्णा और जीजा की देखरेख करती है। यहाँ नारी की असहायता प्रकट होती है। दो हाथों द्वारा जकड़े जाने पर उसने आँखें मूंद ली और "दो मोटे मोटे होंठ, नाक के लम्बे बाल और विचित्र सी गंध। निकट और निकट। आँखों के दो गहरे गड्ढे। मीरा हिचकिचाई। बाहाओं झटक दे और जोर से तमाचा लगाये, जिससे सारा वातावरण झनझना उठे। मगर वह हाथ नहीं उठ सका।" अपनी विवशताओं को पी जानेवाली नारी की यह कहानी बहुत मर्मस्पर्शी है। मीरा की मनःस्थिति का चित्रण अत्यन्त मनोवैज्ञानिक तथा स्वाभाविक है। वैवाहिक यौन भावना का उदाहरण है। धन का अभाव भी इस अनमेल विवाह का कारण बनता है।

आ. वासना की छाया में

कहानी का कथ्य

कहानीकार ने पहले पहल कृष्णा को घर के सामने पम्प पर पानी भरते देखा था। कृष्णा की उम्र तेरह साल होगी। उसका रंग गोरा पंजाबी था। वह स्कूल नहीं जाती और अब बाप के साथ गाँव से आई है। बाप को यहाँ थोड़ा काम है। आफीस से लौटते समय कहानीकार का कृष्णा के पिता से (सफेद दाढ़ीवाला वह जाट) परिचय हुआ।

जाट ने यह जान लिया कि वह अविवाहित है । और इसकी रोटी एक गढ़वाली पकाती है और बर्तन उसकी बेटी मलती है जो बीस साल की विधवा है । पुष्पा की माता तो सालों पहले मर गयी थी । घर तो वह संभालती है । उसके पिता तो नौ एकड़ ज़मीन के मालिक है और घर में गाय और भैंसे हैं । उसे अब एक ज़मींदारनी की ज़रूरत है क्यों कि उसकी जवान लड़की की शादी कर दूं तो उसकी देख-भाल करनेवाला कोई नहीं है । कहानीकार ने यह समझ लिया कि वह बूढ़ा जाट एक स्त्री से सब प्रकार की सहायता चाहता है[1] । एक नौकर का प्रबन्ध करने के लिए वह तैयार नहीं । इस प्रकार बात करते करते वे माडल टाउन पहुँचे जहाँ वे रहते हैं । अब तो वह जाट अपने घर को जानेवाला है । उसके मन में अब भी गहरी आशा है । बराबर के रिश्ते से कोई लड़की ढूंढने की आशा में वह जाट बेटी के साथ अपने गाँव जाता है[2] ।

समीक्षा

इस कहानी का नायक बूढ़ा जाट विधुर है । उसके बाल पके हुए हैं । फिर भी उसमें बड़ी वासना है । वह नौकर से बढ़कर एक स्त्री की सहायता और सहवास चाहता है । उसकी हड्डी में बल है और पेटी में भूख है, मांस की चारा अब भी मांगता है । इसलिए कई स्थानों में वह स्त्री को ढूंढता है । अन्त में वह बराबर के रिश्ते में से अपनी बेटी के बदले में कोई लड़की की खोज में निकलता है । इस कहानी के द्वारा राकेश यह दिखाते हैं कि मनुष्य में जब तक शक्ति और संपत्ति रहेगी तब तक कामना की पूर्ति केलिए वह प्रयत्न करता रहेगा । मनुष्य बहुत हद तक वासना का गुलाम है और इसकी तृप्ति में ही उसको शक्ति मिलती है ।

---

1. वह कह रही थी - "मुझे औरत के गर्म मांस की ज़रूरत है बाबूजी । मैं चाहे बूढ़ा हूँ पर मेरे अकेले के पास नौ एकड़ ज़मीन है । घर में गाय भैंस है और सब कुछ है, सिर्फ औरत ही नहीं है । मेरी अपनी हड्डियों पर गर्म मांस नहीं रहा, पर बूढ़ी हड्डियाँ गर्म मांस का चारा अब भी मांगती है ।"
पहचान - मोहन राकेश - पृ.135
2. हमारे में यह रिवाज़ है, बाबूजी । बराबर का रिश्ता हो तो दो घर आपस में लड़कियाँ बदल लेते हैं । मैं जाकर अपने जैसा कोई घर देखूँगा"। वही-पृ.13

छ. एक और जिन्दगी

कहानी का कथ्य

प्रकाश और बीना पढ़े लिखे और एक बच्चे का माँ-बाप है । दोनों अलग अलग जगह काम करते हैं । विवाह के साथ जो सूत्र जुड़ना चाहिए था, वह जुड़ नहीं सका था । दोनों अलग अलग जगहों काम करते थे और अपना अपना स्वतंत्र ताना बाना बुनकर जी रहे थे । लोकाचार के नाते साल छः महीने में कभी एक बार मिल लिया करते थे । बच्चे की पहली वर्षगाँठ पर बीना ने लिखा था कि वह बच्चे को लेकर अपने पिता के यहाँ लखनऊ जा रही है । वहीं पर बच्चे के जन्मदिन की पार्टी होगी । बीना ने यहाँ तक कहा कि बच्चे पर प्रकाश का कोई अधिकार नहीं है । प्रकाश के जीवन में दूसरी एक लड़की निर्मला आती है । वह पागल थी । वहाँ भी उसकी पराजय हुई । कुछ महीने के बाद एक दिन पलाश अपनी माता के साथ प्रकाश के कमरे में आया । थोड़ी देर के लिए बच्चे को साथ लेकर प्रकाश बाहर गया । फोटोग्राफर के यहाँ जाकर चित्र लिया और बच्चे को आइसक्रीम आदि खिलाकर लौट आया । कुछ समय के बाद बच्चे को लेकर बीना गुमसुम चली गयी ।

समीक्षा

स्त्री पुरुष के वैवाहिक जीवन के संघर्ष से जुड़े दम्पति की कहानी है यह। प्रकाश और बीना पति पत्नी रह चुके है, किन्तु परिस्थितिवश तलाक के बिन्दु पर आ जाते है । प्रकाश फिर अपने एक मित्र की बहिन निर्मला से विवाह कर लेता है जो अर्द्ध विक्षिप्ता निकलती है । उससे ऊबकर प्रकाश घूमने पहाड़ पर जाता है जहाँ उसकी अपनी परित्यक्ता और पुत्र पलाश से अचानक भेंट हो जाती है । इस कहानी के प्रकाश और बीना अलग अलग जगह में

नौकरी करते है । उनके जीवन में आनेवाला बच्चा भी उन्हें एक सूत्र में बांध नहीं पाता । पति पत्नी का विच्छिन्न होना और अलग अलग जगहों में काम करना और प्रकाश का दूसरी एक लड़की से शादी करना इस की मुख्य घटनाएँ है । यह विछिन्न पारिवारिक जीवन की कहानी है ।

ई• गुनाहे बेलज्जात

कहानी का कथ्य

सरदार सुन्दरसिंह एक गरीब आदमी था । वह कई पहले शरबत और ष चाय की दुकान चलाता था । अब वह एक बहुत बड़े होटल का मालिक है । उसे महसूस होता था कि उसके बाहर की चीज़ ही नहीं बदली, वह अन्दर से भी पूरी तरह बदल गया है । लेकिन एक चीज नहीं बदली थी और वह थी उसकी बीवी जिसकी सूरत से उसे नफरत थी । उसके पास जाकर सुन्दरसिंह के दिल की सारी उमंगें ठंडी पड जाती थी । इस दंपती के बच्चा नहीं है । एक दिन उसने बड़ी मुश्किल से मनाकर अपनी बीवी भागवती को उसके बाप के घर भेज दिया । उस रात सुन्दरी नामक दूसरी एक लड़की से सुन्दरसिंह ने अपनी सेया बाँट दी[1] । जितना सुख उसे सुन्दरी से प्राप्त हुआ उतना सुख उसे जिन्दगी में कभी नहीं प्राप्त हुआ था । अपनी बीवी के सम्पर्क में वह हमेशा दुखी ही रहा है । वह सुन्दरी के साथ हमेशा रहना रहता चाहता है[2] । लेकिन ढाई तीन घंटे के बाद सुन्दरी उसे छोड चली जाती है ।

1• "सुन्दरी उस रात दस बजे से लेकर साढे बारह बजे तक उसके पास रही । कभी कभी उसे कन्धे से पकड़कर उसके गाल चूम लेता और कभी उसके गदराए वक्ष को हाथ से मसला देता । उसे छूते ही उसके शरीर में बिजलियाँ दौड जाती ।" एक और जिन्दगी - मोहन राकेश - पृ•44

"सोहणीओ, तुम मेरे पास रहो तो मैं तुम्हें बंगला बनवा दूं, कार रख दूं - तुम सुन्दरसिंह को ऐसा वैसा ही न समझना ।"

- एक और जिन्दगी - मोहन राकेश - पृ•45

उसे बड़ा दुख हुआ और अपनी बीवी से पहली बार उसे प्यार लगा । वह अपनी पत्नी के आगे पश्चात्ताप प्रकट कर उसके साथ सोने को जाता है[1]।

समीक्षा

मनुष्य का मन चंचल है । स्थिर मन तो बहुत कम लोगों में देख पाता है, वह भी कुछ हद तक सांसारिक परिचय प्राप्त करने के बाद । सुन्दर सिंह पन्द्रह साल से अपनी पत्नी के साथ रहता है । वह सुन्दरी नहीं और उसके कोई बच्चे भी नहीं । धीरे धीरे आर्थिक वृद्धि होने पर वह एक बड़े होटल का मालिक बनता है । उन दिनों सुन्दरी नामक एक युवती से उसे रिश्ता जोड़ने का अवसर प्राप्त हुआ । उसकी जाल में दस पन्द्रह आदमी फंस चुके थे । उसके लिए वह सब कुछ समर्पित करने को तैयार हो जाता है । लेकिन दो तीन घंटे में वह उसे छोड़ चली जाती है । उसे बड़ा दुख हुआ और पत्नी के सान्निध्य का आग्रह भी हुआ । पत्नी के स्नेहशील और निरीह व्यवहार से वह पूर्णतः प्रभावित और आकर्षित हो जाता है और अपनी गलती पर पश्चात्ताप करता है । सुन्दरी वेश्या से प्राप्त क्षणिक सुख से पत्नी का स्नेहशील व्यवहार और सान्निध्य उसे हठात् आकर्षित करता है ।

"अंतिम जीवन" में नीरा, जीजी की मृत्यु से विवश होकर उसकी बेटी के लिए जीजा से विवाह करती है । नीरा के बाप भी मर गया था इसलिए माता ने बेटी को उसे सौंप दिया । जीवन की सारी आशाएं नष्ट होकर भी वह उसे स्वीकार करती है । नीरा की असहायता और कर्तव्यनिष्ठता का नारी के प्रति सहानुभूति ही इसमें दृष्टिगत होती है । "अमना की छाया"

---

1. "उसने चिढ़ गई की सी आँखों से भागवन्ती के सोये हुए शरीर को देखा, और बत्ती बुझाकर चौके में चला गया ।"
   - एक और ज़िन्दगी - मोहन राकेश - पृ.46

"उर्मिल जीवन" में मीरा, जीजी की मृत्यु से विवश होकर उसकी बेटी के लिए जीजा से विवाह करती है । मीरा के बाप भी मर गया था । इसलिए माता ने बेटी को उसे सौंप दिया । जीवन की सारी आशाएं नष्ट होकर भी वह उसे स्वीकार करती है । मीरा की असहायता और कहानीकार का नारी के प्रति सहानुभूति भी इसमें दृष्टिगत होती है । "वासना की छाया" का बूढा जाट विधुर है । वह अपनी बेटी की शादी के साथ उसकी शादी के लिए लड़की खोजता है । खाने पीने के लिए कोई कमी नहीं । लेकिन उसे स्त्री के गरम मांस की कामना है और घर संभालने की आशा भी । बूढा जाट मनुष्य की अमिट वासना का प्रतीक है ।

"एक और जिन्दगी" का प्रकाश और बीना पढे-लिखे और अलग अलग जगह काम करनेवाले हैं । उनके एक बच्चा है । फिर भी जीवन में शान्ति और एकता नहीं दीख पड़ती । शान्ति की प्रतीक्षा में प्रकाश ने दूसरी बार शादी की । वहाँ, फिर उसे पराजित होना पड़ा । इस कहानी में समझौता चाहनेवाला प्रकाश और झगडालू बीना का चित्र मिलता है । इस कहानी में राकेश का नारीपात्र सहनशील या असहाय नहीं । वह दृढ और आधुनिक परिवेश से परिचित लगती है । "गुनाहे बेलज्जत" के सुन्दरसिंह के द्वारा मनुष्य मन की चंचलता का चित्र दिया गया है । सुन्दरसिंह धनी अपने घर अपनी पत्नी को छोड़ सुन्दरी नामक वेश्या युवती के साथ सम्बन्ध स्थापित करता है । लेकिन उस वेश्या के चंचल व्यवहार से ऊबकर उसे छोड़ लौट आता है । वह अपनी गलती पर पश्चात्ताप करता है । इसमें कहानीकार ने भारतीय वातावरण में पत्नी का महत्व और वेश्या को घृणित चित्रित किया है ।

नारी पात्र के साथ राकेश ने सहानुभूति प्रकट की है । लेकिन वेश्या और पढ़ी लिखी नारी की गलतियों पर कटुता भी व्यक्त की है । "उर्मिला" जीवन का मीरा और "गुनाहे बेलज्जत" का कामनी संयमशील है, कष्ट स्वीकार करने में हिचकती नहीं । इसके विपरीत में "एक और" जिन्दगी" की बीना पढ़ी-लिखी, पत्नी और माता है लेकिन कम संस्कृत और संयमशील दिखाई पड़ती है । वह भारतीय वातावरण में कम शोभित होती है । "वासना की छाया" का बूढ़ा जाट दमित वासना का प्रतीक है, सुन्दरी वेश्या का प्रतिनिधित्व करती आती है । इस प्रकार आधुनिक जीवन के विविध क्षेत्रों से पात्र चुनकर यथार्थ धरातल में प्रस्तुत करने में राकेश सफल हुए है

2· यादव की कहानियाँ

प्रेमचन्दोत्तर कथाकारों में यादव का महत्वपूर्ण स्थान है । वेद प्रकाश अमिताभ के शब्दों में "कहानी को यादव परिवेश के माध्यम से परिवेश को पाने की एक प्रक्रिया मानते हैं[1] ।" अपनी कहानी-यात्रा के विभिन्न पड़ावों की चर्चा करते हुए यादव ने लिखा है कि "कहानी सब से पहले रोमानी याद थी ······ जुड़े हुए सूत्रों के खोज और पुनरवलोकन थी ······· फिर सम्बोधन होने लगी, फिर क्रमश: संवाद । इन तमाम पड़ावों के दौरान वर्तमान पर उतरने अपने परिवेश को समझने और आसपास की सम्पर्क में खोजने की कोशिश बरकरार रही है[2] ।" यादव के बारे में डॉ· नामवरसिंह ने कहा है - "राजेन्द्र यादव का लेखन बहुत उलझा हुआ है । यह बात जितनी उनके शिल्प के बारे में सत्य है, उतनी ही वस्तु के बारे में भी

1· राजेन्द्र यादव : कथा यात्रा - वेदप्रकाश अमिताभ - पृ·72

2· मेरी प्रिय कहानियाँ - भूमिका - यादव

शायद इसीलिए वे प्राय: चमकदार शिल्प गढ़ने के चक्कर में रहते हैं और उनकी भाषा की पेचीदगी भी संभवत: उसी का परिणाम है । अपनी कहानियों के द्वारा वह एक अतिरिक्त तीव्रता उत्पन्न करना चाहते हैं, फलत: कहीं वह कथानक में पेंच डालते हैं तो कहीं भावनाओं के स्तर पर मानसिक गुत्थियाँ । लिहाजा उनके चरित्र विच्छिन्न हो उठते हैं और कहानी वास्तविक जिन्हें समस्याओं को धीरे धीरे सुलझाने की अपेक्षा उलझाने में ही एक सुख मिलता है, उनकी कला की यही गति होती है ।"[1]

यादव की अधिकांश कहानियाँ मध्यवर्गीय परिवार से सम्बन्धित हैं । आगे के पृष्ठों में यौन-भावना के आधार पर उनकी कहानियों का अध्ययन किया जाएगा ।

अ· <u>प्रतीक्षा</u>

<u>कहानी का कथ्य</u>

गीता बहुत बड़े अफसर बाप की बेटी है । पढ़ते समय उसके ट्यूटर से उसने प्यार किया । इसलिए एक दिन ट्यूटर को उसके पिता ने नौकर से पिटवाया था । "गीता, मैं तुम्हें लेने आऊँगा
मेरी राह देखना ·······" कहकर वह चला गया । गीता ने फिर विवाह के बारे में सोचा भी नहीं । वह अविवाहित रही है । वह एक कालेज के सफल प्रिंसिपल की प्रिंसिपल बन गयी । वह कालेज के पास एक घर में अकेली रहती आ रही थी तो उसके मित्र कुन्ती मेहरा ने नन्दा नामक एक टाइपिस्ट का परिचय कराया । पहले तो गीता ने इन्कार किया, लेकिन नन्दा की

1· हिन्दी कहानी के बदलते प्रतिमान - रघुवरदयाल वार्ष्णेय - पृ·183

असहाय अवस्था को समझकर उसके साथ रहने की अनुमति दी । कालेज में पढ़ते समय उस कालेज के एक नाटक के सिलसिले में हर्ष के साथ उसका परिचय हुआ था । कालेज में वह नन्दा से दो क्लास आगे था । फिर मित्रता गहरी होती चली गयी । अब तो वह दिल्ली में किसी बैंक में है । इसी बीच अपनी हर्ष की शादी हो चुकी थी । पत्नी बारहों महीने बीमार रहती है । उसके एक बच्चा भी है । हर्ष तो नन्दा के बिना नहीं रह सकता । अपने दफ्तर के किसी काम से वह यहाँ आता है । उसने लिखा है, वह होटल में ठहरेगा और नन्दा को याद दिलाया है कि सात को किसी भी दिन कोई प्रोग्राम मत करना ।

समीक्षा

प्रतीक्षा असफल प्रेम की कहानी है । यहाँ गीता दीदी का प्रेम पिता की हठधर्मिता के कारण अपूर्ण रहा । वह अपने ट्यूटर को पति समझकर उसकी प्रतीक्षा में रहती है । जीवन भर उस प्रतीक्षा में रहना पड़ता है । नन्दा और हर्ष भी इस प्रकार परिचित होने के बाद प्रेमी प्रेमिका की कल्पना में दिन काटते थे । नन्दा तो यह जानती थी कि हर्ष विवाहित है और एक बच्चे का पिता है । वह उसे शादी करना नहीं चाहती । फिर भी पत्नी के समान हर्ष के साथ व्यवहार करती है । उसकी सेवा शुश्रुषा करती है हर्ष की आवश्यकताओं की पूर्ति करती रहती है । हमेशा उसकी प्रतीक्षा करती है हर्ष की इच्छा के अनुसार नन्दा अपनी प्रोग्राम बदलती है । हमेशा वह हर्ष की बन बनी रहती है । इस प्रकार हर्ष की रोगिनी पत्नी उसका सान्निध्य सदा चाहती है । हर्ष को सदा साथ रखने की कल्पना करती है । इस कहानी के मुख्य पात्र अपनी इच्छाओं की पूर्ति प्रतीक्षा में पूर्ण करती है । इन व्यक्तियों की प्रतीक्षा उनकी शारीरिक और मानसिक आवश्यकताओं और प्रतीक्षा उनकी शारीरिक और मानसिक की पूर्ति से सम्बन्धित है ।

आ॰ मीराजना

कहानी का कथ्य

रविकुमार इन्दौर में लेक्चरर था । फस्ट-इयर क्लास में मीराजना नामक एक लड़की आयी । वह क्लास में लड़कों की तरह हँसती थी और बिल्कुल बेझिझक होकर सामनेवाली सीट पर बैठती थी । मीराजना के पिता ने रवि को अपनी बेटी को ट्यूशन के लिए बुलाया । वह अच्छी तरह पढ़ती थी, उसमें लिखने की क्षमता और प्रतिभा थी । वह कभी कभी कहती थी कि शादी नहीं करेगी, हमेशा पढ़ती रहूँगी । सेशन खत्म होने के बाद वह इलाहाबाद चली गयी, क्योंकि उसके फादर रिटायर हो गए । रवि देहरादून आ रही है । उसकी स्वागत के लिए वह स्टेशन गया । दोनों के बीच एक गाँठ थी, जिसे कोई नहीं छूना चाहता था । हर बात पर वे अनुभव कर रहे थे, जैसे मुख्य विषय को वे टाल रहे हैं - पहले कौन बोले । आखिर रवि ने पूछा - "मुझसे कोई काम था ?" सीधा उत्तर नहीं मिला । कुछ घंटों के बाद उसने लौटने की इच्छा प्रकट की तो रवि ने स्नेहभाव से उसे रोका । मीराजना के कहने पर कि मेरी सगाई हो गयी है और इलाहाबाद में पढ़ाई बिल्कुल खत्म हो गई, उसे आश्चर्य हुआ । और देहरादून आने का कारण उसने बताया[1] ।" इस बार मीरा ने एकदम उसकी ओर मुँह घुमाकर कहा - फिर कभी इलाहाबाद जाने के लिए मैं यहाँ नहीं आयी ।

---

1. "अब देहरादून आने का एक कारण यह भी है । आगे से मैं देहरादून में ही पढ़ूँगी । हालाँकि सुना है, यहाँ लड़कियों का हॉस्टल नहीं है । और पूरी बातें अभी पता नहीं लगा पायी हूँ ।"
   - जहाँ लक्ष्मी कैद है - राजेन्द्रयादव - पृ॰९९

समीक्षा

यह कहानी शिक्षित युवकों की कथा कहती है । आधुनिक सभ्यता का खूब प्रभाव इसमें दर्शनीय है । इस कहानी के नायक नायिका कालेज के वातावरण में परिचित होते हैं । नीरजना के ट्यूशन मास्टर के पद से उसका विकास होता है । नीरजना प्रतिभाशाली लड़की है वह क्लास के सब छात्रों से बिल्कुल भिन्न है । वह अध्यापक से खुलकर बातें करती थी कभी कभी तर्क भी करती थी । छुट्टि में नीरजना और प्रेमी रविकुमार अलग हो गये । उनका प्यार बढ़ता रहा । एक दिन नीरजना अकेली आकर रवि से मिलती है और दोनों विवाहित हो जाते हैं । इसमें आधुनिक सभ्यता का प्रभाव कैसे पढ़े लिखे युवकों पर पड़ते हैं । इसकी एक झांकी प्रस्तुत की गयी है । प्रेम और विवाह का एक सरल और सुदृढ शैली भी यहाँ दर्शनीय है । यौन-भावना का संयमित और संस्कृत रूप यहाँ व्यक्त हुआ है ।

ड• अन्धा शिल्पी और आँखोंवाली राजकुमारी

कहानी का कथ्य

नरसिंहम अन्धा था, लेकिन उसके हाथ में जादू था । वह एक राजा का बेटा था । उसकी कीर्ति चारों ओर फैलने लगी । वह केवल हाथ से टटोलकर सभी पुरुषों की विभिन्न मुद्रायें पत्थर में उतार देने में समर्थ था । इतना ही नहीं, हृदय के गंभीर भाव भी ज्यों के त्यों अंकित कर देते थे । राजकुमारी नन्दा ने उसकी कीर्ति सुनी । वह इस संसार की क्षणभंगुरता से विरक्त और वीतराग बन गयी थी । पिता के लाख बार प्रयत्न करने पर भी अविवाहित रही । जब वह उठारह वर्ष की थी तो एक दिन नरसिंहम् से नन्दा का मिलन हुआ । नन्दा की यह वाणी ने उसे बठाद

आकर्षित किया[1] । नरसिंहम् ने उसकी मूर्ति बनाने की चाह प्रकट की । उसने मन्दा के शरीर पर हाथ से टटोला और उसे बहुत सुखदायक लगा[2] । मन्दा इस जीवन में सत्य की खोज में भटकती फिरती थी । उसके चिकने रूखे और चिकनेबालों पर हाथ फिराते हुए नरसिंहम काँपते स्वर में बोला, रूप सबसे बड़ा सत्य है, सौन्दर्य उसकी सार्थकता ।

समीक्षा

प्रेम और यौनगत भावना मनुष्य की नैसर्गिक वृत्ति है । वह समय पर किसी न किसी रूप में प्रकट होती है । इस कहानी का नायक नरसिंहम् सौन्दर्य का आराधक है । उस अन्धा शिल्पी की कीर्ति से प्रभावित होकर राजकुमारी उसे देखने को आती है । वह उससे प्रभावित हो जाती है और अविवाहित रहने की उसकी इच्छा बदल जाती है । उसके स्पर्श से वह हठात आकर्षित हो गयी और लौकिक जीवन की ओर उन्मुख हो गयी है राजकुमारी केलिए सब प्रकार की सुख सुविधाएं थी लेकिन अन्धा शिल्पी नरसिंहम से जो सुख प्राप्त हुआ वह उसे अन्यत्र मिला नहीं था । इसमें यह व्यक्त हुआ है कि यौनगत भावों का दबाव छिपाव आसान नहीं है । मनुष्य के प्राकृतिक गुणों को रोकना कठिन कार्य है ।

---

1. शिल्पी नरसिंहम् तुम्हारी कला की कीर्ति मुझे बहुत दूर से खींच कर लायी है ।" ढोल - यादव - पृ.82
2. "इतना आनुपातिक, इतनी सुन्दर गठन और आप विश्वास करोगी यदि मैं यह कहूँ कि अपने हर आधार [मॉडल] को स्पर्श करते समय मेरे हाथ, मन सभी कुछ बिल्कुल निरपेक्ष रहे हैं, लेकिन ...... लेकिन इस हाथ का स्पर्श बड़ा सुखप्रद लगता है ।" वही - पृ.90

प्रेमचन्दोत्तर कहानीकारों में परंपरागत जीवन रीति से विचलित हो जाने की प्रवृत्ति पाई जाती है । राजेन्द्रयादव की कहानियों के पात्रों में भी इसका कुछ प्रभाव मिलता है । वे आधुनिक सभ्यता और परिस्थिति के अनुसार चलनेवाले हैं उनकी कहानी "प्रतीक्षा" में प्रिंसिपल गीता पढाई के अवसर अपने ट्यूशन मास्टर से प्यार करती थी । लेकिन माँ-बाप के विरुद्ध हो जाने के कारण उनकी शादी नहीं हुई । दूसरे किसी पुरुष के साथ जाना वह चाहती ही नहीं थी । इसलिए आजीवन अविवाहित रही । और जीवन में वह सफल प्रिंसिपल की पिंसिपल बन गयी । इस कहानी का दूसरा कथापात्र नन्दा गीता दीदी के साथ रहती है जो पढी लिखी और काम करनेवाली युवती है । उसका प्रेमी हर्ष विवाहित और एक बच्चे का पिता है । उसकी पत्नी जिन्दा रहती है । फिर भी नन्दा उसे प्यार करती है । साथ ही साथ पत्नी के समान उसके आगे वह सब कुछ समर्पित करती है । हर्ष भी उसको पत्नी के रूप में स्वीकार करती है । हर्ष की इच्छा के अनुसार वह अपना उत्तरदायित्व निभाती है । किसी दूसरे पुरुष के साथ शादी करती ही नहीं । इस प्रकार "मीराजना" नामक कहानी भी आजकल के पढे लिखे लोगों की कथा कहती है । इसमें मीराजना अध्यापक रविकुमार से क्लास के वातावरण में परिचित होती है । दोनों के बीच का परिचय प्रेम में बढने लगा । पढाई समाप्त करके मीराजना बाप के साथ घर जाती है । फिर भी दोनों के बीच प्यार का सम्बन्ध बना रहा । एक दिन वह रविकुमार के घर आयी और उसके साथ रहने लगी । आधुनिक सभ्यता का प्रभाव इसमें दर्शनीय है । "अन्धा शिल्पी और आँखोंवाली राजकुमारी" भी नूतन और अपने ढंग की अनुपम कहानी है । भौतिक रूप में अन्धा शिल्पी के कोमल स्पर्श से लौकिक जीवन से विरक्त राजकुमारी में एक परिवर्तन आता है । शिल्पी का स्पर्श और उसकी स्तुति से आकर्षित राजकुमारी उसके द्वारा लौकिक जीवन की ओर आती है । इसमें स्त्री पुरुष के सम्बन्ध और संयोग की ओर पाठक का ध्यान आकर्षित किया गया है ।

यादव की कहानियों में यौनगत रिश्तों का नैतिक रूप मिलता है । उनकी कहानियों के पात्र शिक्षित और सुसंस्कृत है, परंपरागत रीति से बिल्कुल अछूते रहते हैं । बौद्धिकता और शारीरिक आवश्यकताओं पर बल देकर उनके पात्र सामने आते है । वे परिस्थिति की उपज है । आधुनिकता से खुब परिचित है दैनिक जीवन की आवश्यकताओं के प्रति वे आशावान् हैं ।

3· <u>कमलेश्वर की कहानियाँ</u>

कमलेश्वर का कथन है कि "कहानी मुझे औरों से जोड़ती है या कहूँ कि, बहुतों से संयुक्त होने की सांस्कृतिक स्थिति ही कहानी की शुरुआत है ।" आधुनिक काल के कहानीकार जीए हुए जीवन को कहानी में अनूदित करते हैं । इस काल के कहानीकारों ने स्त्री-पुरुष के सर्वांगीण सम्बन्धों और परिवर्तित परिवेश को अनुभूति के धरातल पर प्रस्तुत किया है । नारी मन के बारे में कमलेश्वर का कथन विचारणीय है । स्त्री-पुरुष के सर्वांगीण सम्बन्धों को इस कहानी ने केन्द्र बनाया और बदलते सम्बन्धों की परीक्षा में उनका चित्रण किया । परिपूर्णता की ओर अग्रसर स्त्री की इकाई की भूमिका भी नयी कहानी में मौजूद है । केवल सम्बन्धों का पाप बोध या गिल्ट भी अब नहीं रह गया है । नारी और पुरुष के सम्बन्ध अब विलक्षण न रहकर बहुत सहज और वास्तविकता के धरातल पर आ गये है । अब नारी अपने में परिपूर्ण है - वह न सती है, न वेश्या - वह केवल नारी है ।[1]"

1· नयी कहानी की भूमिका - कमलेश्वर - पृ·14।

पति-पत्नी के सम्बन्ध में अब आमूल परिवर्तन हुआ है। नारी अब कानूनी तरीके से और आर्थिक रूप से भी स्वतन्त्र है। पुरुष और स्त्री के आन्तरिक जगत का विश्लेषण ही अब कहानी का कथ्य रह गया है। कमलेश्वर की कहानियों में एक ओर सामाजिक समस्याओं और दूसरी ओर यौन समस्याओं का अंकन हुआ है। उनकी कहानियों का विश्लेषण आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक विश्लेषण से ही पूर्ण रहता है। कमलेश्वर के कृतित्व की विशेषता पर मधुकर सिंह का यह कथन बहुत सार्थक लगता है कि "हिन्दी कहानी के कृतिकारों में कमलेश्वर अपनी विशिष्ट पहचान बनाने में समर्थ हुए हैं और उनका वैशिष्ट्य सामान्य जिन्दगी से जुड़े रहने की प्रवृत्ति में है[1]।"

कमलेश्वर ने हिन्दी कहानी को नया अर्थ देने का प्रयास किया है "घोर आत्मपरकता, कुंठा, घुटन एवं पलायनवादी प्रवृत्ति के घने जाल से हिन्दी कहानी को खुले वातावरण में लाकर नया अर्थ देने का श्रेय बहुत अंशों में कमलेश्वर को है[2]।" सोद्देश्यता और आधुनिकता की अभिव्यक्ति इनकी कहानी की विशेषता है। जिन्दगी से जुड़ी हुई कथावस्तु कमलेश्वर के कहानीकार को प्रोज्वलित करती है। उनकी कहानियों में स्त्री और पुरुष पात्र स्वतंत्र व्यक्तित्व लेकर आते हैं। उनकी कहानियों की स्त्रियाँ प्रतिकूल परिस्थिति में भी अपना अस्तित्व को भूलती नहीं, और पुरुष प्रगतिशील और समाजवादी दृष्टिकोण लेकर आते हैं। कमलेश्वर के पात्र के बारे में डॉ॰ सुरेश सिन्हा का कथन है कि "ये पात्र वैयक्तिक लगते हुए भी कमलेश्वर के पार्सनल नहीं है। वे हमारे जीनेवाले जीवन से ही सम्बन्धित है, इन पात्रों का सम्बन्ध कहीं समाज से कटा हुआ नहीं है, और न वे कहीं यथार्थ से मुँह मोड़ते हैं।

---

1. कमलेश्वर - मधुकर सिंह - पृ॰123
2. नयी कहानी की मूल संवेदना - डॉ॰ सुरेश सिन्हा - पृ॰107

अपनी स्थिति की वास्तविकता के प्रति सचेत होते हुए भी उनमें कहीं जिन्दगी से कतराने की प्रवृत्ति नहीं है । .... ये पात्र न तो कहीं हवेली की तरह निर्जीव है न कहीं नीलम देश की राजकन्या की खोज में है और न कहीं हीनीबोन की वस्तुओं से अपना जी बहला रहे है । वे सब इस पलायनवाद से दूर जिन्दगी की कंटीली राहों पर जूझते हुए नवीन अर्थों एवं मूल्यों की खोज में अनवरत संघर्ष कर रहे हैं[1] ।"

आगे कमलेश्वर की कहानियों का अध्ययन किया जा रहा है -

अ· तलाश

कहानी का कथ्य

ममी विधवा है । आठ वर्ष पूर्व उसके पति की मृत्यु हो गयी थी । आज उसकी बेटी सुमी बीस साल की है और ममी उन्तालीस । अपने शारीरिक सौष्ठव के कारण ममी सुमी की बड़ी बहन लगती है । ममी किसी कालेज में अध्यापिका है और सुमी टेलिफोन आफीस में । पति की मृत्यु के बाद ममी आठ वर्ष तक अपने शरीर और मन पर नियन्त्रण रख सकी है । कालेज में नौकरी करनेवाली ममी बुद्धिवादी है । वह पुरुषों के बीच जीती है । बड़े शहर का वातावरण इस संयम के अनुकूल नहीं है । इस कारण वह अपने को रोक नहीं पाती । घर में उसके साथ बीस वर्ष की उसकी बच्ची है और दूसरी ओर उफनती हुई शारीरिक इच्छाएं । बेटी को सन्देह आये बिना वह अपनी इच्छाओं की पूर्ति करने लगती है और बेटी अपनी माँ में एक अजीब सा परिवर्तन अनुभव करती है । सुमी, ममी के इस व्यवहार से पहले तो

1· नयी कहानी की मूल संवेदना - डॉ· सुरेश सिन्हा - पृ·110

उदास और निराश हो उठ जाती है । परन्तु बाद में वह भी परिस्थिति के साथ समझौता कर लेती है और ममी की हर सुविधा का ध्यान रखने लगती है । इसी कारण वह होस्टल में रहने केलिए चली जाती है । दोनों अकेलेपन की जिन्दगी जीने लगती है । ममी के जन्मदिन के अवसर पर सुमी जब फूलों का गुच्छा लेकर उनसे मिलने जाती है तो उसे यह देखकर आश्चर्य हो जाता है कि ममी बहुत उदास रहती है । सुमी को खोकर वह सुखी नहीं, बेहद अकेली हो गयी है । सुमी की भी स्थिति कुछ इसी प्रकार की है । इसी कारण इसी भेंट में औपचारिक प्रश्नों के अलावा ये दोनों किसी भी बात पर खुलकर बोलती नहीं, दोनों का हृदय भरा हुआ है ।

समीक्षा

इस संपूर्ण कहानी में ममी और सुमी का चरित्र ही महत्वपूर्ण है । इन दोनों के माध्यम से बदलते हुए नैतिक मूल्यों, पारिवारिक सम्बन्धों तथा आधुनिकता को व्यक्त किया गया है ।" यह कहानी विधवा माँ और बेटी के सम्बन्धों को उद्घाटित करती है । जिन्दगी की आवश्यकताएं एक ओर है दूसरी ओर रक्त का सम्बन्ध । बुद्धिवाद और आधुनिकता ने माँ के मन को पछाड़ दिया है । पूरी कहानी में सुमी एक अकलमन्द पर भावुक लड़की के रूप में उपस्थित हुई है । पिता को लेकर वह भावुक है और माँ को लेकर बुद्धिवादी । न वह माँ के व्यवहार का समर्थन कर सकती है न विरोध । उसमें स्पष्टता की बेहद कमी है । यह कमी ममी में भी है । श्री सविता जैन ने अपने एक निबन्ध समकालीन हिन्दी कहानी और मूल्य संकट की दिशा में प्रस्तुत कहानी पर गम्भीरता से विचार किया है । उनके अनुसार इस कहानी की नायिका ममी - "अपने खोए हुए व्यक्तित्व की तलाश में है जो विभिन्न आरोपित सम्बन्धों" में लुप्त हो गया है । वह माँ होने के साथ ही

एक नारी भी है जो अपने पति की मृत्यु के साथ ही अपनी नारी सुलभ भावनाओं को दफना नहीं देती अपितु उन्हें जीवित रखना चाहती है ।"

आ• राजा निरबंसिया

कहानी का कथ्य

जगपती लेखक का बचपन का दोस्त था । मैट्रिक की पढ़ाई के बाद वह कस्बे के वकील के यहाँ मुहर्रिर बन गया । चन्दा नामक एक सुन्दर देहाती युवती के साथ उसकी शादी हुई । शादी के चार वर्ष बाद भी जगपती के सन्तान नहीं हुई । इसी बीच जगपती को रिश्तेदार की एक शादी में जाना पड़ा । परन्तु जहाँ शादी थी वहाँ डाका पड़ गया और बन्दूक की गोली लगने से उसको अस्पताल जाना पड़ा । बचनसिंह कंपाउण्डर ही यहाँ सब कुछ था । वह हर बात की कीमत वसूल करनेवाला व्यवहारी व्यक्ति था । इसी कारण चन्दा को उसके सम्मुख पूर्ण रूप से समर्पित होना पड़ा । जगपती तन्दुरुस्त होकर अपने कस्बे की ओर चन्दा के साथ लौटा । वह बहुत उदास दिखाई दिया । एक तो बेकारी, फिर निस्सन्तान होने का दुख । बचनसिंह का चन्दा के घर आना जाना आरंभ हो गया । जगपती जानता है कि बचनसिंह क्यों आता है, फिर भी वह अनजान बने रहता है । चन्दा अब माता बननेवाली है । दूसरे ही दिन चन्दा घर छोड़कर अपने मायके चली गयी । वह लड़के की माता बन गयी । चन्दा का इस तरह के घर जा बैठना और बच्चे को दीवार समझना जगपती के लिए असह्य हो उठा । उसे लगा कि चंदा की इस दुर्गति के लिए वही जिम्मेदार है । इस पश्चात्ताप और आत्मग्लानी के कारण जगपती ने उसी रात अपना सारा कारोबार त्याग कर अफीम और तेल पीकर आत्महत्या की ।

समीक्षा

आधुनिक युग के टूटते जीवन मूल्यों, आस्थाओं, विश्वासों तथा मजबूरियों को स्पष्ट करने केलिए कमलेश्वर ने दो भिन्न युगों की कहानियों को समानान्तर रूप से इस कहानी में रख दिया है। राजा निरबंसिया और जगपती दोनों शादी के कुछ वर्ष बाद ही पिता बनते हैं। जगपती की पत्नी चन्दा का कम्पाउण्डर से संपर्क परिस्थितिवश होता है। स्वार्थी कम्पाउण्डर अपनी इच्छा की पूर्ति केलिए चन्दा का उपयोग करता है। उस संपर्क से चन्दा माता बनती है, जगपती बेकारी से मुक्ति भी पाता है। सब कुछ जानकर भी कुछ समय केलिए जगपती चुप रहता है। धीरे धीरे उसके मन में पश्चाताप का भार बढ़ता है और आत्महत्या करता है। चन्दा अपने पति केलिए अपने शरीर को बेचती है। पत्नी और बच्चे को अपने घर भेजने से जगपती उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करता है। लेकिन पश्चात्ताप की अग्नि में वह अपनी आहुति करता है। जगपती अपनी गलती से इस प्रकार मुक्ति कम्पाउण्डर जैसे लोग जिस प्रकार समाज को दूषित करते हैं, कहानीकार इस ओर पाठकों का ध्यान भी आकर्षित करता है।

ड॰ मांस का दरिया

कहानी का कथ्य

जुगनू एक वेश्या है। कई वर्षों से वह इस व्यवसाय में लगी रही है। इस व्यवसाय का और उम्र का अधिक सम्बन्ध होने के कारण जैसे जैसे उसकी उम्र बढ़ती जाती है, वह अधिक रोगी होती नहीं। इतना ही नहीं वह तपेदिक से पीड़ित हो जाती है। एक दिन मदनलाल नामक किसी पार्टी का मजदूर नेता उसके पास आता है। उसके व्यवहार में तथा अन्य ग्राहकों में

जुगनू अन्तर अनुभव करती है । वह केवल उसके मांस को नहीं चाहता अपितु उसके प्रति कहीं मानवीयता के स्तर पर बातचीत भी करना चाह रहा है । मदनलाल को मज़दूरों में काम करनेवाला जानकर उससे कुछ सहायता की मांग करती है । जुगनू की तबियत ठीक नहीं यह जानने पर वह लौट जाते तो उसको आश्चर्य हो जाता है । जुगनू इधर अस्पताल में भरती पाती है । वह अपने ग्राहकों से पैसे उधार ले जाती है । उसे रुपये देने में कोई हमदर्दी नहीं दिखाता । जिन लोगों ने इसकी जवानी चाहे जिस तरह उपभोग किया था, आज वे ही मुँह मोड़ते हैं । जब वह अस्पताल से लौटती है तब सब पुलिसवाले भी उसे परेशान करना शुरू करते हैं । फिर भी वह ग्राहकों को खुश करने का प्रयत्न करती है । उसकी जाँघ की जोड़े पर एक फोड़ भी निकल आता है जो धीरे धीरे बढ़ा जाता है और वह उससे परेशान होती है । लोगों को न उसकी कमज़ोरी का ध्यान है, न उस फोड़े का । वह किसी को भी खुश करने की स्थिति में नहीं है । ऐसे ही समय में मदनलाल आता है । जुगनू को असुविधा में देखकर वह लौट जाता है । तभी कंवरजीत आता है । उसके लाख मना करने पर भी वह उसे परेशान करता रहता है उस पर वह ज़बरदस्ती ही करता है । उसकी ज़्यादती में, दर्द के कारण पूरी आवाज़ में वह चीखती है । फोड़ फट जाता है । मवाद जाँघों पर फैल जाता है । अब वह एक विचित्र सुख का अनुभव करती है । उसे लगता है कि थोड़ी सी प्यार और सहानुभूति दिखानेवाले मदनलाल को लौटाकर उसने गलती की ।

समीक्षा

जुगनू का चरित्र प्रतिनिधिक है । जुगनू के बहाने लेखक ने वेश्या जीवन का बड़ा ही यथार्थ, जीवन्त और भयावह चित्र हमारे सामने रखा है । यहाँ किसी भी प्रकार का जीवन मूल्य नहीं है । मांस ही मूल्य है, ज़िन्दगी जीने केलिए वही एकमात्र माध्यम है । यहाँ प्यार, ममता, स्नेह कुछ भी नहीं । यहाँ है तो मात्र भूख । नारी को पेट की भूख के लिए किसी दूसरे की,

दूसरी भूख शांत करनी पड़ती है । आज जुगनू एक ऐसे बिन्दु पर खड़ी है जहाँ से वह न पीछे लौट सकती है न आगे जाने के लिए कोई रास्ता है । मांस के दरिये में वह फंस गयी है । इसी में उसको जीना है और शायद मौत भी यहीं है । मदनलाल की सहानुभूति, आत्मीयता और अपनत्व से जुगनू कहीं न कहीं छुआ है । जुगनू खुद को मजदूर समझती है । एक सहज संवेदनशील नारी के रूप में जुगनू हमारे सम्मुख आई है । वह ईमानदार वेश्या है । जुगनू के बहाने लेखक ने प्रस्थापित समाज व्यवस्था को लेकर कई प्रश्न उठाये है । वेश्याओं के भविष्य के सम्बन्ध में किसी न किसी प्रकार की व्यवस्था करें । परन्तु यहाँ ऐसा नहीं है । इस कारण इनकी स्थिति और भी भयावह हो जाती है ।

ई. बयान

कहानी का कथ्य

इस कहानी की नायिका शादी से पहले विमल को प्यार करती थी । वह तो बाईस साल पहले की बात है । विमल बहुत समझदार गंभीर और जहीन था । शादी के पहले विमल उससे मिलता था । इसके बाद इस नायिका की शादी एक फोटोग्राफर से हुई । दोनों परस्पर प्यार Pxa/. करते थे । वे दोनों एक दूसरे को समझ लेते थे । उस फोटोग्राफर केलिए दुनियाँ में सबसे सुन्दर औरत, पत्नी, लड़की जो कुछ थी । वह यह नायिका थी । कैमरा उसकी पत्नी और उसकी एकमात्र बच्ची ही उस फोटोग्राफर का संसार था । सरकारी पत्रिका में फोटोग्राफर के पद पर आने के पहले वह पाँच साल तक प्रेस इन्फरमेशन ब्यूरो में था । छह साल सरकारी पत्रिका में रहा । और चार साढे चार साल एक विज्ञापन कम्पनी में ।

उन्होंने हारकर सरकारी नौकरी छोड दी थी । पति की नौकरी से छूट जाने पर वह एक स्कूल में काम करने लगी । उसकी उम्र उस वक्त बत्तीस थी । पति को कुछ रुपये की जरूरत थी । इसलिए उसने अपनी पत्नी की कुछ अश्लील चित्र लिया[1] । एक पत्रिका के संपादक ने उसकी अश्लील तस्वीरें छापी थी । ये अश्लील तस्वीरें स्कूल के मैनेजर तक भी पहुँची थी । उसको नौकरी से हस्तीफा देना पडा । घर चलाना मुश्किल हो गया था । रुपये आने का कोई रास्ता नहीं था । बच्ची पढने को स्कूल गयी थी । और उसकी माता दूसरी एक जगह काम खोजने के सिलसिले में गयी हुई थी । वे घर पर अकेले थे । उन्होंने छत के कडे से लटककर फाँसी लगायी थी । वह चार बजे के करीब वापस आयी । तब तक सब हो चुका था ।

समीक्षा

इस कहानी का नायक सरकारी फोटोग्राफर है । वह ईमानदारी से काम करता था । एक दिन उससे लिया गया एक फोटोग्राफ देखकर मंत्री महोदय को नाराज़ हुआ और उसे काम से हटा दिया । कुछ समय, वैसे लेकिए उसने दूसरी एक जगह काम किया । पत्नी को स्कूल में नौकरी मिलने के कारण धीरे धीरे परिवार चलता रहा । लेकिन एक टेलिविजन खरीदने लेकिए कुछ पैसा इकट्ठा करने लेकिए दूसरा चारा न रहने के कारण उसने अपनी की अश्लील तस्वीरें लेकर एक पत्रिका में छापी थी । यह प्रकाशित होने पर स्कूल की नौकरी भी नष्ट हो गयी । दोनों अब बेकार रहे । निराशा ग्रस्त फोटोग्राफर ने आत्महत्या की । आर्थिक अभाव इस कहानीकार मुख्य मुद्दा है । यह कहानी फोटोग्राफर की स्त्री का न्यायाधीश और वकील के सामने दिया गया बयान के अंश में निहित है ।

---

1. उन्होंने मुझे कैमरा उतारने को कहा था । मैं थोडा सकुचायी थी । दिन का वक्त था । वे कैमरा लिये बैठे थे । फिर उन्होंने मुझे बाथरूम की झीनी साडी पहनने को कहा था । मुझे तरह तरह से बैठाया और लिटाया था और तस्वीरें ली थी ।
मेरी प्रिय कहानियाँ - कमलेश्वर - पृ॰।।9

उ॰ रातें

कहानी का कथ्य

शारदाबाई उसी तरह मशहूर थी, जैसी कि कभी मथुरा की दासवदत्ता रही थी । शारदाबाई के रूप और सौन्दर्य की कहानियाँ चारों तरफ फैल रही थी । शारदाबाई की पहली रात की बोलणा सोलह साल की अवस्था में हुई । नवाबों, राजाओं, महाराजाओं, राजकुमारों और जमीन्दारों को पराजित करके सेठ मगनलाल छगनलाल दारुवाला नामक बड़े करोड़पति के दार्जिलिंग के एक बड़े बंगले में पहली रात का त्यौहार धूमधाम से मनाया गया । उस समय शारदाबाई सोलह साल की थी और मगनलाल छगनलाल दारुवाला अठारह साल का । इस प्रकार शारदाबाई अपने धन्धे में लग गई । शारदाबाई की सबसे सुन्दरी बाई ने अपनी माँ को ही सुन्दरता में इस कदम पीछे छोड़ दिया । अभी सुन्दरी बाई सत्रह साल की थी कि सुन्दरीबाई ने बेटी की पहली रात की बोलणा की । इस बार सुन्दरी बाई की पहली रात मगनलाल छगनलाल दारुवाला की ऊटी बंगले में किया गया । सेठ एम॰सी॰ दारुवाला पैंतीस साल का था । सेठ की संपत्ति और नाम चारों तरफ बढ़ने लगा । सुन्दरी बाई की सबसे ताराबाई सोलह वर्ष की हुई और उसकी यौवन की कहानियाँ चारों तरफ फैलने लगी । इस बार ताराबाई ने श्रीनगर की कोठी में सेठ एम॰सी॰ दारुवाला के साथ पहली रात गुजार दी । सेठजी इस बार इकावन वर्ष का था । ताराबाई ने अपनी सबसे गीताबाई को भी मुसज्जित करके अपने मार्ग पर लाने का निश्चय किया, सेठ महोदय के संपर्क से ।

समीक्षा

इसमें कुछ वेश्याओं की कहानी है । शारदाबाई की पहली रात बड़े धनिक सेठ एम॰सी॰ दारूवाला से मनायी गयी । उसके बाद उसने वेश्यावृत्ति में प्रवेश किया । इस प्रकार उसकी बेटी सुन्दरी बाई और सुन्दरी बाई की बेटी ताराबाई और ताराबाई की लड़की गीताबाई भी अपनी अपनी पहली रात का त्योहार एम॰सी॰ दारूवाला से मनाती है । और वेश्यावृत्ति की ओर का रास्ता साफ करती है । एक ही आदमी से उस परिवार की चार स्त्रियाँ (पीढ़ियाँ) अपनी पहली रात मानती है । धनिक सेठजी मधुप के समान है जिसमें धनिक आदमी के व्यवहार का प्रतिनिधित्व उभर आता है । यह कहानी हमारी आर्थिक व्यवस्था की ओर प्रकाश डालती है ।

"तमाशा" में यौन बुभुक्षावाली विधवा जवान माँ और जवान बेटी के संवेदनात्मक सम्बन्धों का बड़ा मार्मिक आकलन हुआ है । यह विधवा माता की शारीरिक आवश्यकताओं और बेटी के साथ रक्त के सम्बन्ध की बात कहती है । पति की मृत्यु से आठ वर्ष तक दम संयम के साथ वह रहती है । लेकिन उसकी परिस्थिति उसके संयम को तोड़ देती है । माता के अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति का बेटी अवसर प्रदान करके होस्टल चलती है । दोनों के बीच अदम्य वेदना है जो प्रकट करने में असफल निकलती है ।

"राजा निरबंसिया" में साधारण आदमी की आर्थिक और दाम्पत्य सम्बन्ध से उठनेवाली तकलीफों का गहरा चित्रण है । स्त्री-पुरुष के यौन सम्बन्धों या प्रेम-सम्बन्धों पर आर्थिकता का कितना गहरा दबाव है इसका एहसास यह कहानी कराती है । इस कहानी की चन्दा पति के लिए शरीर बेचती है साथ ही साथ माता बनने की इच्छा पूर्ण करती है ।

कथ्याउण्डर के द्वारा यह दिखाया है कि स्वार्थी लोगों के सम्पर्क में आने से ही स्त्रियाँ दूषित हो जाती हैं । दूषित अर्थ-व्यवस्था इस कहानी का मूलाधार है ।

"माँस का दरिया" की वेश्या जुगुनू ईमानदार है । वह खुद को मज़दूर समझती है । वह अपने पेट की भूख मिटाने के लिए दूसरों के माँस की भूख को शान्त करने को प्रेरित हो जाती है । उसके समक्ष सामने वेश्यावृत्ति के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं । उसकी वेश्यावृत्ति हमारी आर्थिक व्यवस्था की ओर एक प्रश्नचिह्न है ।

"बयान" ईमानदार फोटोग्राफर से क्रुद्ध मंत्री की कारवाई का परिणाम है । फोटोग्राफर जीवन की सारे रास्ते बन्द हो जाने पर अपनी पत्नी के अधनंगी चित्र से कुछ धन इकट्ठा करना चाहता है । इसमें असफल और पत्नी की नौकरी से तिरस्कृत होने की निराशा से फोटोग्राफर आत्महत्या करता है । आर्थिक समस्या ही इस कहानी का आधार है । यह कहानी न्यायतन्त्र के खोखलेपन को उद्घाटित करती है ।

"रात्रे" चार युवतियों की कहानी है जो एक बड़े सेठ जी के द्वारा वेश्यावृत्ति में प्रवेश करती है । धन के बल जीवन की सारी सुख सुविधाओं को हड़प लेकर समाज के आगे अपने को प्रतिष्ठित प्रदर्शित करनेवाले उच्च वर्ग की कथा है ।

तलाश की ममी तो केवल शारीरिक आवश्यकताओं के लिए दूसरे सभ्य पुरुष से मिलती है । वह धन के लिए यह स्वीकार करती नहीं । राजा निरबंसिया की चंदा तो पति की रक्षा के लिए वेश्या बनती है ।

लेकिन पति जब उसे वेश्यावृत्ति में लगाने देता तो कुपित होकर माता के घर जाती है । मासि का दरिया का जुगुनु ईमानदार वेश्या है । वह स्वयं मजदूर समझती है । बयान की नायिका तो वेश्या नहीं लेकिन समाज उसे अन्य समझते हैं और रातें के चार वेश्यायें हमारे समाज की बुराई की प्रतीक है । उनका अलग अस्तित्व रहने पर भी वे समाज के प्रतिनिधि है ।

जीवन में प्रकट सुख दुख उदासीनता, अकेलापन और मानव के बीच दीखनेवाली कटुता और तिक्तता का अंकन मोहन राकेश की कहानियों में दर्शनीय है । उनमें नारी के प्रति सहानुभूति दिखाई पड़ती है । अधिकांश नारी पात्र संयमशील है । वेश्या और दमित वासना वृत्तिवाले भी वर्तमान है । यादव के पात्रों में यौनगत विषय का नैतिक रूप मिलता है । उनका पात्र सुशिक्षित और परंपरा का विरोधी है और आधुनिक वातावरण से परिचित है । पात्र आशावान् और परिस्थिति का उपज है । कमलेश्वर का नारी पात्र न सती है, न वेश्या वह केवल नारी है । वे अपनी कहानियों में यौनगत बातों को पापबोध से देखते ही नहीं । उनकी कहानियों में सामाजिक समस्याओं और यौन समस्याओं का अंकन हुआ है । उनकी कहानियों की एक विशेषता यह है कि उनमें स्त्री पात्र और पुरुष पात्र स्वतंत्र व्यक्तित्व के प्रतीक बनकर आते हैं ।

उपसंहार

उपसंहार

काम सृष्टि का मूल मन्त्र है । काम की प्रवृत्ति सब जीवों के मूल में काम करती है । इसका मैतिक और सांस्कृतिक विवेचन वेदों, पुराणों, उपनिषदों और स्मृति ग्रन्थों में दर्शनीय है । "कामसूत्र" में इसका सांगोपांग वर्णन मिलता है ।

आधुनिक परिस्थिति में कामतृप्ति की पांच रीतियां दृष्टिगत होती हैं - हस्तमैथुन, स्वप्नदोष, विषमलैंगिक संपर्क, समलैंगिक संपर्क और पशुसंपर्क । विषमलैंगिक संपर्क को तीन उपवर्गों में विभाजित कर सकते हैं - विवाहपूर्व काम सम्बन्ध, वैवाहिक काम सम्बन्ध और विवाहेतर कामसम्बन्ध - इस प्रकार । इन तीन उपवर्गों के अन्तर्गत ही हमारी कहानियों का अध्ययन प्रस्तुत है ।

पूर्व-प्रेमचन्दकाल के कहानीकार तिलस्मी जासूसी कहानियों की रचना करते थे । प्रेमचन्दकाल में मैतिक बातों पर दृष्टि रखकर ग्रामीण जीवन की पृष्ठभूमि में कहानियों की रचना होती रही । प्रेमचन्दोत्तर युग के कहानीकार मध्यवर्ग से आनेवाले और शिक्षित थे । पश्चिम साहित्य का परिचय और मार्क्स, डार्विन, फ्रायड जैसे चिन्तकों का सूक्ष्म प्रभाव उन पर पड़ा

पढ़े-लिखे मध्यवर्ग के लोग नौकरी की खोज में शहर आने लगे, उनको सामाजिक प्रतिष्ठा मिली । धीरे-धीरे समाज में उनका स्थान ऊँचा उठने लगा, परंपरागत विचारों का परिवर्तन हुआ । वैज्ञानिक अनुसंधान ने संभोग को केवल आनन्द के स्तर पर ला रखा । यौन-सम्बन्ध पति-पत्नी से बढ़कर व्यापक धरातल पर पहुँचने लगा । प्रेमचन्दोत्तर कहानीकारों ने जीवन के यथार्थ धरातल में प्रवेश करके गहराई से मानसिक, पारिवारिक, सामाजिक सभी पहलुओं का विश्लेषण और जीवन के यथार्थ समस्याओं का उद्घाटन कहीं व्यंग्य रूप में और कहीं खुले तौर पर किया ।

इस शोध-प्रबन्ध में भगवतीचरणवर्मा, भगवतीप्रसाद वाजपेय, चन्द्रगुप्तविद्यालंकार, इलाचन्द्र जोशी, उपेन्द्रनाथ अश्क, यशपाल, अज्ञेय, मोहन राकेश, राजेन्द्रयादव और कमलेश्वर जैसे प्रमुख प्रेमचन्दोत्तर कहानीकारों की कहानियों का अध्ययन यौन-भावना के आधार पर प्रस्तुत किया गया है ।

द्वितीय अध्याय में वर्णित कहानियों की संख्या, यौन भावना के आधार पर बाईसमिलती है । दृष्टिदोष, नीलम्देश, एक रात, अविज्ञान, ग्रामफोन का रिकार्ड आदि कहानियाँ जैनेन्द्र की है । "दृष्टिदोष" का केदारऔर सुभद्रा सहपाठी है । वे परस्पर प्यार करते थे । लेकिन सुभद्रा की शादी दूसरे एक पुरुष के साथ हुई । केदार इसी बीच आँखों का स्पेशलिस्ट बनकर लौट आया एक दिन दृष्टिदोष का बहाना करके सुभद्रा डा॰ केदार के पास आयी । वास्तव में उसकी दृष्टि में कोई दोष नहीं था । बचपन में प्रस्फुटित प्रेम का विकास इनकी मुलाकात में प्रकट होता है । यह कहानी विवाहेतर यौनभावना का उदाहरण है । "नीलम्देश" में रोगी कैप्टन रघु नर्स नीलम्देश के स्नेहशील व्यवहार से प्रभावित होता है । नीलम्देश रघु को चाहती भी लेकिन उस कर्तव्य के सामने प्यार को दबा देती है ।

यह कहानी विवाह पूर्व यौन का उदाहरण प्रस्तुत करती है । "एक रात" की सुदर्शनादेवी विवाहिता और गर्भिणी है । वह कांग्रेस दल के सजीव संचालक जयराज से प्रभावित होकर उसके पीछे चली । जयराज उसके प्यार को समझता था, उसे स्वीकार करना गलत न समझता था । अन्त में सुदर्शना अपनी मर्यादा का उल्लंघन किये बिना जयराज से विदा लेती है । यह कहानी भी विवाहेतर यौन-भावना का प्रमाण है । "अविकाम" में पन्द्रह साल से परिचित आदित्य और मालती का अविच्छ प्रेम है । दोनों अपने अपने परिवार चलाते है । वे समय समय पर परस्पर मिलते थे । उनमें कोई पापबोध का प्रभाव भी नहीं । यह भी विवाहेतर यौन का उदाहरण है । "ग्रामफोन का रिकार्ड" में कम्पनी सेक्रटरी कपूर की सुशिक्षित पत्नी विजया व्यस्त पति से ऊब कर दूसरे पुरुष के संपर्क में आती है । लेकिन पाप-बोध से वह उस पुरुष की पकड़ से मुक्त हो जाती है । जैनेन्द्र के पात्र मध्यवर्ग से आनेवाले और सुशिक्षित है । उनकी कहानियों में "एक रात", "अविराम", "ग्रामफोन का रिकार्ड" आदि में प्यार तो आकस्मिक और विवाहेतर यौन-भावना का उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है ।

मैं ने भगवतीचरणवर्मा की पांच कहानियों को छिलावन का नरक, एक विचित्र चक्कर, दो रातें, एक अनुभव, राख और चिन्गारी - अध्ययन केलिए लिया है । "छिलावन का नरक" में छिलावन की पत्नी सुखिया दरिद्र परिवार की रक्षा के लिए विवश होकर पाँच रुपये केलिए शरीर बेचती है । "एक विचित्र चक्कर" बचपन का मित्र कमल और देवेन्द्र की कहानी है । कमला दूसरे एक पुरुष की पत्नी बनी और विधवा होकर घर, लौट आयी । वह घंच घंच होकर जल मरती है । "दो रातें" विवाहपूर्व यौन-भावना का उदाहरण है । इसमें एक शिक्षित वेश्या युवती की आदर्शशील युवा की कामना का चित्रण है । "एक अनुभव" नामक कहानी में एक होटल का मैनेजर गर्म बालि का

विक्रय करके धनोपार्जन करता है । इसकेलिए कुछ दरिद्र स्त्रियों को किराये पर लेता है । शोषण का शिकार बननेवाली नारी की दुखद कहानी है, इसमें । "राख और चिनगारी" में एक ही आफीस में नोकरी करनेवाली गीता और रमेश का प्रेम ही कथ्य है । गीता अपने दरिद्र परिवार के पालन पोषणकेलिए रमेश से विदा लेती है । भगवतीबाबू के अधिकांश पात्र गरीब और अपढ है । पेट पालने केलिए शरीर बेचनेवाली नारियों का चित्रण उनमें विरल नहीं है । "विज्ञापन का नरक", एक विचित्र चक्कर, और "एक अनुभव" कहानी में विवाहेतर यौन-भावना का उदाहरण दर्शनीय है । "दो रातें", राख और चिनगारी नामक कहानियाँ विवाहपूर्व यौन-भावना का उदाहरण प्रस्तुत करती है ।

भगवती प्रसाद वाजपेयी की कहानियाँ उच्च और मध्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है । शिक्षित और अशिक्षित पात्र भी उनकी कहानियों में मिलते हैं । लाइसेंस की मुर्गी, जहाँ सभ्यता सांस लेती है, दुग्धपान, उतार चढाव, बधाई आदि उनकी प्रमुख कहानियाँ है । "लाइसेंस की मुर्गी" का विश्वनाथ दर और माया के एक बच्चा है । उनके घर में मित्र दिलीप रहता है । दर की पत्नी दिलीप से गर्भिणी बन जाती है । "जहाँ सभ्यता सांस लेती है" का मर्यादा और किशोरीलाल आधुनिक जीवन से कुछ परिचित शिक्षित नौजवान है । वे आकस्मिक रूप में परिचित हुए और पति-पत्नी बने । "दुग्धपान" में अनमेल विवाह से ऊबकर पति के मित्र से सम्बन्ध स्थापित करनेवाली पानवाली की कथा है । पति, पत्नी के सुखद भविष्य का प्रबन्ध करके आत्महत्या करता है । "उतार-चढाव" में केशव और दीपा नामक युवा जोडी का प्रेम और शादी है तो "बधाई" नामक कहानी में गिरिधारी की पत्नी पुष्पा के पति के मित्र से माता बनने की कथा है । यह जानकर पति उसे बधाई देता है । "दुग्ध पान" और "बधाई" में पति से अतृप्त होकर पत्नी उनके मित्र से गर्भिणी बनती है जो विवाहेतर यौन का उदाहरण है । "लाईसेंस की मुर्गी" की माया पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित नारी का प्रतिनिधि है तो "जहाँ सभ्यता सांस लेती है" "उतार-चढाव" आदि कहानियाँ दृढ भारतीयता का प्रमाण प्रस्तुत करती है ।

चन्द्रगुप्त विद्यालंकार की दो कहानियाँ - "मद्य का राज्य" और "चोट" वैवाहिक यौन-भावना का उदाहरण प्रस्तुत करती है । "मद्य का राज्य" में नायक अजित और नायिका मालिनी झगड़ों के विकट मझले दिखाई पड़ते हैं । "चोट" पढ़े-लिखे और संपन्न परिवार में चलती एक कहानी है ।

इलाचन्द्र जोशी की तीन कहानियाँ - क्रय-विक्रय, पतिव्रता या पिशाची, चरणों की दासी - विचारणीय है । "क्रय-विक्रय" में राजेन्द्र अपनी पत्नी मालिनी को बड़े अफसरों के आगे समर्पित करके पदोन्नति और धनोपार्जन करता है । अंत में मालिनी राजेन्द्र को छोड़कर अपने इच्छानुकूल पुरुष के साथ चली जाती है । "पतिव्रता या पिशाची" का सुरज की पत्नी शान्ती निस्सन्तान रहने से ऊबकर दूसरे एक पुरुष से माता बनती है । ये दोनों कहानियाँ विवाहेतर यौन-भावना का स्पष्ट उदाहरण देती है तो चरणों की दासी" कामिनी और ज्योतिचन्द्र त्रिपाठी के सुखद वैवाहिक जीवन की कथा है ।

इस अध्याय के अन्त में अज्ञेय जी की कहानियों को जोड़ दिया है । उनकी कहानियों में नैतिकता का खूब प्रभाव दर्शनीय है । उनकी कहानियों में "चट्टान" नामक कहानी रोगी भाभी की सेवा में निहित रहकर की कथा है । "वह मेरी मंगेतर थी" की नायिका मृदु परपुरुष के स्पर्श से अपने को अपवित्र समझकर प्रेमी से दूसरी स्त्री से शादी करने की प्रार्थना करके अविवाहित रहती है । "नज़िया" में गान और नृत्य में कुशल नज़िया हसरत से प्यार करती थी लेकिन जब नज़िया यह जानती कि हसरत मात्र उसे सुन्दर शरीर में चाहता है तो उसे छोड़ देती है । "पाप का आरंभ" में विवाहेतर यौन-भावना का उदाहरण मिलता है । यहाँ मास्टरजी अपनी पत्नी को छोड़कर एक हेडमिस्ट्रस के साथ चले जाते हैं और मास्टरजी की पत्नी उसके एक छात्र के साथ भाग जाती है । "बेबसी" में एक विधवा आया अपने

युवा मालिक मान से शारीरिक सम्बन्ध स्थापित करना चाहती है । इसमें पराजित होकर वह घर छोड चली जाती है । "जुदाई की शाम का गीत" मिन्नी और माधो की प्रेम कहानी है । दोनों आत्महत्या करके लौकिक जीवन समाप्त करते हैं ।

तीसरे अध्याय में यशपाल की पन्द्रह कहानियों का अध्ययन किया गया है । यह सुविदित है कि यशपाल भौतिकवादी हैं और उनकी रचनाओं में इसका खूब प्रभाव दर्शनीय है । तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ, प्रतिष्ठा का बोझ, धर्मरक्षा, पराई, दर्पण, मोटरवाली कोयलेवाली, शाम पराया सुख, जहाँ इसद नहीं, पाँव तले की डाल, जादू का चाबुक, काका, निर्वासिता, अपनी चीज़, दूसरी नाक आदि उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं । अस्पताल के वातावरण में क्षयरोगी माया और निगम का परिचय हुआ । निगम, माया से प्यार करता था लेकिन रोग से डरकर यह प्रकट करता नहीं । मध्यवर्गीय परिवार से आनेवाली माया किसी की पत्नी है फिर भी वह अस्पताल में निगम की उपस्थिति से सजग और सन्तुष्ट दिखाई पड़ती है । लेकिन निगम से तिरस्कृत होने पर वह अस्पताल से लौट आयी । यह कहानी विवाहेतर यौन-भावना का उदाहरण है । "प्रतिष्ठा का बोझ" का केवलचन्द विधवा भवानी की सुन्दरी बहू छब्बी से संपर्क करनेवाला था कि उस कमरे में भवानी आयी । केवलचन्द्र ने उस विधवा पर अपने पुरुषत्व का प्रयोग किया और विधवा को वासना की अग्नि में प्रोज्वलित किया । "धर्मरक्षा" का प्रोफसर ब्रह्मदत्त की ब्रह्मचारिणी बेटी भाग्यवती, नौकर युवक से गर्भधारण मन्न पड़ती है । यह कहानी विवाहपूर्व यौन भावना का उदाहरण प्रस्तुत करती है । "पराई" पूरन और रती की प्रेम कहानी है । ये साधारण परिवार से आनेवाले हैं । "दर्पण कहानी अन्तर्जातीय विवाह और उससे

उत्पन्न करने पर पाठक का ध्यान आकृष्ट करती है । बिम्मा और रतन अपने माँ-बाप से तिरस्कृत हो जाते हैं । पति की अकाल मृत्यु से पीड़ित बिम्मा एक दिन कुएँ में मर जाती है । यह वैवाहिक यौन-भावना का उदाहरण है ।

"मोटरवाली कोयलेवाली" में कहानीकार यह कहता है कि मोटरवाली और कोयलेवाली दोनों धन की गुलाम हैं । कोयलेवाली युवावस्था अपना शरीर बेचकर बुढ़ापे में संरक्षण का मार्ग तैय करती है तो मोटरवाली के पिता धनिक है फिर भी वह अपनी बेटी के लिए खूब धनिक पुरुष की कामना करता है । मोटरवाली और कोयलेवाली एक सिक्के के दो रूप है । "आग" नामक कहानी के द्वारा कहानीकार यह सिद्ध करता है कि लैंगिकता मनुष्यका मूल स्वभाव है और उस पर रुकावट डालने की ज़रूरत नहीं है । सिद्ध और नीरज दोनों ब्रह्मचारिणी एक दिन परस्पर मिला और विवाहित हो गए । भारतीय चिंतन के अनुसार कथा चलती और वैवाहिक यौन-भावना का उदाहरण प्रस्तुत करता है । "पराए सुख" का मिसेज़ मदन से सेठी नामक ठेकेदार आकर्षित हो जाता है । मिसेज़ मदन, उसके पति और बच्चा, सेठी को अधीन हो जाते हैं । धन के बल पर सेठी उन्हें खरीदता है ।"जहाँ हमद नहीं" का नुरहसन की पत्नी सआदत पड़ोसी हसन से आकर्षित हो जाती है । पति प्रेमी को छोड़ना मुश्किल समझकर वह आत्महत्या करती है । "पाँव तले की डाल" का मिस राबल और मिसेज़ सक्सेना नामक पढ़ी लिखी युवतियाँ होटल में आनेवाले बड़े बड़े लोगों केलिए शरीर बेचती है । वे धन केलिए न होकर शारीरिक आवश्यकता केलिए यह करती है ।"जादू का चावल" अमीन और जिमि नामक युवा जोड़ी की प्रेम कहानी है । मेहर नामक दूसरी युवती अमीन से कुपित होकर उसको जिमि से अलग कर लेने केलिए मंत्र फूंकती है ।

"भाषा" एक पंजाबी युवक नाम और बंगाली युवती प्रमीला के प्यार की कहानी है। भाषा दोनों के बीच एक प्रश्नचिन्ह बनकर आती है। उनका प्यार अपूर्ण निकलता है। "निर्वासिता" कहानी पढ़ी-लिखी और संभ्रान्त युवती इन्दु की जीवन-गाथा है। इन्दु कालेज की अध्यापिका है। वह, नैतिक रीति से एक पुरुष की कामना करती है, पर पराजित होकर अनैतिक मार्ग स्वीकारती है। "अपनी चीज़" में मेजर चौहान की पत्नी आलोक मेजर के मित्र कर्नल कौशिक से प्यार करती है। कर्नल मारा जाता है और यह जानने पर आलोक मूर्छित हो जाती है। "दूसरी नाक" में जब्बार ने अपनी पत्नी की सुन्दरता से मुग्ध लोगों का ध्यान हटाने केलिए उसकी सुन्दर नाक को काटकर उसे कुरूप कर दिया। और उस स्थान पर रबड़ का नाक लगा दिया। यह कहानी पुरुष के स्वार्थ का ज्वलंत उदाहरण है।

यशपाल की कहानियाँ मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्व करती है। "धर्मरक्षा" और "प्रतिष्ठा का बोझ" नामक कहानी में आंचलिकता की मात्रा अधिक मिलती है। "पराई" और "भाषा" शुद्ध प्रेम कहानी निकलती है। "दर्पण" में मनोवैज्ञानिकता का प्रभाव कुछ मिलता है। "मोटरवाली कोयलेवाली" की मोटरवाली और कोयलेवाली पैसे का गुलाम है तो "चाँद तलेकी शाम" की युवतियाँ शारीरिक सुख के लिए पुरुष की खोज करती निकलती है। "पराया सुख" का सेठी पैसे के बल पर परिवार सहित एक सुन्दर स्त्री को खरीदता है। जहाँ हसद नहीं, निर्वासिता, अपनी चीज तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ, पराया सुख आदि कहानियाँ विवाहेतर यौन-भावना का स्पष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

चौथा अध्याय अज्ञेय की कहानियों का अध्ययन है। यह तर्कातीत है कि अज्ञेय मनोवैज्ञानिक कहानीकार है। उन्होंने मनुष्य के आन्तरिक भावों का अध्ययन किया है। सेक्स और रोमान्स का विश्लेषण भी उनकी

विशेषता है । ममतो, सिलमेलर, अछूते फूल, नीली हंसी, हारिति, पठार का धीरज वे दूसरे, मेजर चौधरी की वापसी, आदि कहानियाँ विरचित हुई है ।

"ममतो" नामक कहानी में मछेश का पहाड़ी प्रदेश में ममतो के साथ मिलना और उनके प्यार की कहानी चलती है । किसी न किसी कारण से उनका प्यार अपूर्ण रहा । "सिलमेलर" का नायक विमल का मैं नामक नायिका से प्यार अपूर्ण निकला । नायिका तो चिररोगिणी बनी फिर भी वह रोमांस की कल्पना में रही । "अछूते फूल" में मीरा नामक एक पढ़ी लिखी युवती पुरुष के स्वार्थ से ऊबकर अछूती रहती है । लेकिन एक पुरुष की वेदना देखकर उसे दुख हुआ और वह अपने को कोसती है और पश्चात्ताप करती है । "नीली हंसी" देवकान्त और नीलिमा के प्यार की कहानी है । "हारिति" कर्तव्य और प्रेम की कहानी है । जीवन में दुख को वरण करने केलिए उन्की हारिति चीन की आज़ादी केलिए और प्रजातन्त्र की स्थापना केलिए प्राणार्पण करती है । दिन रात शत्रु के विरुद्ध लड़ती हारिति और उसके प्रेमी वहामयिन दोनों मृत्यु का वरण करते हैं ।

"पठार का धीरज" राजकुमारी हेमा और कुंवर की अधूरी प्रेम कहानी है । "वे दूसरे" सुशिक्षित हेमन्त और सुधा की वैवाहिक कहानी है । सभ्य समाज के सदस्य रहने के कारण दोनों शादी के कुछ दिन बाद अलग हो जाते हैं । सुधा अपने दूसरे मित्र के पीछे चल जाती है । "मेजर चौधरी की वापसी" में परस्त्रीगामी एक गोरा सैनिक की कहानी है । वह घर से दूर रहने के कारण वह परस्त्रीगामी बना और मद्यपान भी करता है । सैनिकों का घर से दूर रहने से उत्पन्न विवशता और कुंठा इसकी विशेषता है

मनसो, मीनी इंसी, पठार का धीरज, हारिति आदि कहानियाँ विवाहपूर्व यौन भावना का उदाहरण है । तो दूसरे, मेजर चौधरी की वापसी आदि विवाहेतर यौन भावना का उदाहरण देता है । "हारिति" क्रान्तिकारी विचारधारा की कहानी है तो "अकेले फूल" में एक विशेष मनोवृत्ति वाली युवती की कथा है ।

पाँचवाँ अध्याय मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव और कमलेश्वर की कहानियों का अध्ययन है । ये कहानीकार मानव के अन्तर्मन का अध्ययन और विश्लेषण आधुनिक सामाजिक वातावरण की पृष्ठभूमि में करते हैं । यहाँ राकेश यादव और कमलेश्वर की बारह प्रमुख कहानियों का अध्ययन किया गया है । राकेश की कहानी "उर्मिल जीवन" पिता के अकालमरण के कारण असहाय अवस्था में, मीरा नामक युवती, माता का भार कम करने के लिए जीजा का अनुगमन करती ~~युवती की कथा~~ है । मीरा जीजा के मातृहीन बच्चे का पालन पोषण करती है और उसके पत्नी पद को स्वीकार करती है । 'वासना की छाया में" बूढे जाट के द्वारा कहानीकार कहता है कि उम्र ढलने पर भी मनुष्य की आशा छूटती नहीं और वह बड़ी हद तक यौन भावना का गुलाम है । "एक और जिन्दगी" में सुशिक्षित प्रकाश और बीना का वैवाहिक जीवन और कुछ गलतफहमी के कारण तलाक और प्रकाश के फिर दूसरे एक वैवाहिक जीवन की कथा भी कही गयी है । "गुनाहे बेलज्जत" का नायक सरदार अपनी पत्नी को छोड़कर सुन्दरी नामक एक वेश्या के पीछे पड़ता है । वह वेश्या से ऊबकर पत्नी से दुबारा प्यार करने जाता है ।

उपर्युक्त चार कहानियों में उर्मिल जीवन और एक और जिन्दगी वैवाहिक यौन भावना का उदाहरण प्रस्तुत करता है । "वासना की छाया" में "दमित वासना की कथा है तो "गुनाहे बेलज्जत के द्वारा वेश्या की चंचलता पर प्रकाश डाली गयी है ।

राजेन्द्रयादव के पात्र शिक्षित और मध्यवर्ग से आनेवाले हैं। वे कहानियों के द्वारा नैतिक बातों पर प्रकाश डालते हैं। प्रतीक्षा, मीराजमा और अन्धा शिल्पी और आँखोंवाली राजकुमारी उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं। "प्रतीक्षा" कहानी प्रतीक्षा में जीवन बितानेवाली गीतादीदी, नन्दा और हर्ष की रोगिणी पत्नी की कथा है। "मीराजमा" में मीराजमा और और मेंबदार रविकुमार का सफल प्रेम कहानी है। "अन्धा शिल्पी और आँखोंवाली राजकुमारी" की राजकुमारी एक अन्धा शिल्पी के कारस्पर्श से प्रभावित होकर भौतिक जीवन बिताने लगती है। यादव प्रकृतिसहज गुणों का समर्थक है।

जिन्दगी से जुडी हुई घटनाओं पर प्रकाश डालना कमलेश्वर की विशेषता है। यहाँ कमलेश्वर की पाँच कहानियों पर प्रकाश डाला गया है। तलाश, राजा निरबंसिया, माँस का दरिया बयान, रातें आदि प्रमुख कहानियाँ है। "तलाश" में सुशिक्षित विधवा ममी और बेटी सुमा की कहानी है। बेटी सुमा ममी की सुविधा के लिए एकमात्र माता को घर में छोड़कर होस्टल जा रहती है। कहानीकार ने इन पात्रों के द्वारा बदलते हुए नैतिक मूल्यों, पारिवारिक सम्बन्धों तथा आधुनिकता को व्यक्त किया। एक ओर रक्त के सम्बन्ध और दूसरी ओर जिन्दगी की आवश्यकताएँ हैं। "राजनिरबंसिया" का राजा निरबंसिया और जगपति दोनों शादी के कुछ वर्ष बाद ही पिता बनते हैं। जगपति अपनी पत्नी का दूसरे पुरुष से गर्भधारण की बात जानकर आत्महत्या करता है। "माँस का दरिया" में एक वेश्या पेट की भूख मिटाने केलिए दूसरों की दूसरी भूख शान्त करती है। "बयान" में एक फोटोग्राफर अपनी पत्नी के कुछ अश्लील चित्र एक पत्रिका में छपवाकर कुछ धन इकट्ठा करता है। इससे उसकी पत्नी की नौकरी छूट गयी और निराश ग्रस्त फोटोग्राफर आत्महत्या करता है। "रातें" कुछ वेश्याओं की कहानी कहती है। शारदाबाई की पहली रात सेठ एम•सी• दारूवाला से मनायी गयी।

उसके बाद उसने वेश्यावृत्ति में प्रवेश किया । इस प्रकार उसकी बेटी सुन्दरी बाई, उसकी बेटी ताराबाई और उसकी बेटी गीताबाई अपनी अपनी पहली रात एम॰सी॰ दारूवाला से मनाती है ।

इस शोध प्रबन्ध में कुल मिलाकर अठावन कहानियों का अध्ययन किया गया है । इनमें यशपालजी की कहानियाँ सबसे अधिक है । अज्ञेय जी दूसरे स्थान पर आते हैं । इन कहानियों के अध्ययन से ऐसा नहीं लगता कि भारतीय आदर्श की चोट पहुँचानेवाला कोई उद्देश्य इसमें निहित रहता है । सेक्स या योनभाव सारे जीवों का मूल है और सर्वत्र यह समानगति से चलती है । हमारे साहित्यकारों में विशेषकर कहानीकारों में भारतीय और पाश्चात्य चिन्तकों का प्रभाव दर्शनीय है । शिक्षित लेखक या साहित्यकार को इस दुनिया को सीमाबद्ध करके देखना असंभव होगा । अध्ययन केलिए यहाँ स्वीकृत कहानियों में भारतीय और अन्य देशों में चलती घटना तथ्य के रूप में अपनायी गयी है । चिरपरिचित, ग्रामफोन का रिकार्ड, लाइसेंस की सुर्खी, जहाँ सभ्यता सांस लेती है, पांच तले की डाल, वे दूसरे, तमाशा आदि कहानियों में पश्चिमी सभ्यता का प्रभाव दर्शनीय है ।
इस शोध-प्रबन्ध में चर्चित कहानियों में सेक्स के विविध अंगों में विषमलैंगिक संपर्क के तीन उपविभाग - विवाह पूर्व, वैवाहिक और विवाहेतर - कामसंबन्धों का उदाहरण ही मिलते हैं । काम सम्बन्ध के अन्य अंग —हस्तमैथुन, पशुसंपर्क, स्वप्नरति और समलैंगिक संपर्क - का कोई उदाहरण यहाँ उपलब्ध नहीं है । सन् 1935-60 के काल में आनेवाले कहानीकारों की रचनाओं में रतिवैकृत्य का प्रभाव नहीं मिलता । इस काल के कहानीकार और अन्य साहित्यकार मध्यवर्ग से आनेवाले है । वे शिक्षित और स्वतंत्रता की हवा श्वास लेनेवाले हैं ।

सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में आये परिवर्तनों के फलस्वरूप उनके दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आया और उनकी रचनाओं में इसका प्रभाव परिलक्षित होता है ।

इस शोध - प्रबन्ध के द्वारा सन् 1935-60 की कालावधि में मुख्य कहानीकारों की कहानियों में दृष्टिगत यौन-भावना पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है । हिन्दी की कहानी विधा अत्यन्त सहज है । शोध-प्रबन्ध के कलेवर को स्थूलता से बचाने केलिए मैं ने प्रतिनिधि कहानियों के आधार पर अपने शोध-कार्य को पूरा किया है ।

संदर्भ ग्रन्थों की सूची

सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची

संस्कृत-हिन्दी

1. ऋग्वेद — श्रीरामशर्मा आचार्य
   प्रकाशक - संस्कृति संस्थान, ख्वाजाकुतुब
   (वेदनगर) बरेली, उत्तर प्रदेश, चतुर्थ
   संस्करण, 1967

2. अथर्ववेद — श्रीरामशर्मा आचार्य
   संस्कृति संस्थान, बरेली, उत्तर प्रदेश,
   चतुर्थ संस्करण 1967

3. मनुस्मृति — पण्डित हरगोविन्दशास्त्री टीकाकार
   चौखम्बा संस्कृत सीरीज़ आफिस, वाराणसी,
   सं॰ 1965

4. श्री वात्स्यायनमुनिप्रणीतं कामसूत्रम् - हिन्दी व्याख्याकार श्री देवदत्त शा
   चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी, 1964

5. हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास - डॉ॰ सुरेश सिन्हा
   अशोक प्रकाशन, नई सड़क, दिल्ली-6,
   प्रथम संस्करण 1977

6. कथा साहित्य के मनोवैज्ञानिक समीक्षा सिद्धान्त - डॉ॰ देवराज उपाध्याय
   सौभाग्य प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम
   संस्करण 1977

7. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और चरित्र विकास - डॉ॰बेचन
सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1965

8. नई कहानी : दशा, दिशा, संभावना - श्री सुरेन्द्र
आलोक पब्लिकेशन्स, जयपुर, प्रथम संस्करण, 1966

9. हिन्दी कहानी : पहचान और परख - डॉ॰ इन्द्रनाथ मदान, लिपि प्रकाशन, 10/4 कृष्णनगर, दिल्ली
प्रथम संस्करण 1975

10. हिन्दी कहानी - बदलते प्रतिमान - रघुवरदयाल वार्ष्णेय, पांडुलिपि
प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1975

11. कहानी अनुभव और शिल्प   जैनेन्द्रकुमार
पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1967

12. आधुनिक हिन्दी कहानी (जैनेन्द्र से नई कहानी तक) डॉ॰लक्ष्मीनारायणलाल
हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर, हीराबाग,
बम्बई, प्र॰सं॰1962

13. कहानी नयी कहानी   डॉ॰ नामवरसिंह
लोकभारती प्रकाशन, 15 ए, महात्मागांधी
मार्ग, इलाहाबाद, प्र॰सं॰1966

14. कहानियों में कौतूहल का अनुसरण - रमेश बक्षी, सरस्वती पुस्तक सदन,
मोती कटरा, आगरा, प्रथम संस्करण, 1966

15. कथा साहित्य : मेरी मान्यताएं - डॉ॰देवराज उपाध्याय
सौभाग्य प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1975

16· प्रेमचन्दोत्तर कहानी साहित्य सन् 1937-67 तक - डॉ॰राधेश्याम गुप्त
हिन्दी साहित्य संस्थान, शिवसदन,
बाबू मोहल्ला, आजमेर

17· पाश्चात्य और भारतीय साहित्य में मनोवैज्ञानिक आलोचना और
उनके निदर्शन सौभाग्य प्रकाशन, 151, कश्माधोसिंह लेन,
इलाहाबाद, प्र॰सं॰1974

18· नयी कहानी की भूमिका कमलेश्वर
अक्षर प्रकाशन, 2/36, अन्सारी रोड,
दरियागंज, दिल्ली-6 प्र॰सं॰1966

19· हिन्दी कहानी की रचना प्रक्रि या - डॉ॰ परमानन्द श्रीवास्तव
ग्रन्थम, रामबाग, कानपुर, प्र॰सं॰1965

20· कहानी स्वरूप और संवेदना राजेन्द्र यादव
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, 2/35, अन्सारी रो
दरियागंज, दिल्ली-6, प्र॰सं॰1968

21· कहानीकार कमलेश्वर-संदर्भ और प्रकृति - सूर्यनारायण मा॰रणसुभे,
पंचशील प्र काशन, जयपुर, 1977

22, राजेन्द्र यादव कथायात्रा वेदप्रकाश अमिताभ
गिरिनार प्रकाशन, पिलाजीगंज, मेहसाना ।

23· एक दुनिया समानान्तर राजेन्द्रयादव
अक्षर प्रकाशन, अनसारी रोड, दरियागंज,
दिल्ली ।

24• हिन्दी कहानी बदलते प्रतिमान-रघुवरदयाल वार्ष्णेय
पांडुलिपि प्रकाशन, ई•11/5, कृष्णनगर
दिल्ली ।

25• नयी कहानी : सन्दर्भ और प्रकृति - डॉ• देवी शंकर अवस्थी
अक्षर प्रकाशन, दिल्ली ।

26• यौन-जीवन मन्मथनाथ गुप्त
सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, वाराणसी

27• समकालीन कहानी, समान्तर कहानी - डॉ• विनय
प्रथम संस्करण 1977, मैकमिलन कम्पनी

29• कहानीकार मोहन राकेश डॉ• सुषमा अग्रवाल
पंचशील प्रकाशन, जयपुर

29• यशपाल और हिन्दी कथा साहित्य - सुरेशचन्द्र तिवारी
सरस्वती प्रेस, बनारस, प्रथम संस्करण, 1956

30• काठ का सपना मुक्तिबोध
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1967

31• अज्ञेय-कथाकार और विचारक विजयमोहन सिंह, पारिजात प्रकाशन,
पटना ।

32• मुक्तिबोध विचारक, कवि और कथाकार - डॉ• सुरेन्द्र प्रताप
नाशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली ।

33• आधुनिक हिन्दी कहानी गंगाप्रसाद विमल
मैकमिलन एण्ड कम्पनी

34· आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में प्रगति चेतना - लक्ष्मणदत्त गौतम
कोणार्क प्रकाशन, दिल्ली-6

35· कहानीकार भगवती प्रसाद वाजपेयी - संवेदना और शिल्प - आदर्श
गोविन्दलाल छाबड़ा और लक्ष्मण दत्त गौतम,
साहित्य प्रकाशन, दिल्ली-31।

36· यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण - डॉ॰ मधुरेन
अभिनव प्रकाशन, कानपुर

37· हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास - डॉ॰ धनराज मानधाने
ग्रन्थम, कानपुर

38· आज का कथा साहित्य डॉ॰ अम्बिकाप्रसाद सिंह
कल्पना प्रकाशन, सदरीबाजार, मेरठ,
प्रथम संस्करण 1974

39· आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान - डॉ॰देवराज उपाध्याय
साहित्य भवन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण
1963

40· साहित्यकार भगवतीप्रसाद वाजपेयी - नन्ददुलारे वाजपेयी

41· भगवतीचरणवर्मा के उपन्यासों में युगचेतना - डॉ॰कैलाशनाथ प्रसाद शुक्ल
प्रेमप्रकाश मन्दिर, दिल्ली, प्रथम संस्करण 1977

42· भगवती चरण वर्मा : चित्रलेखा से सीधी सच्ची बातें तक - डॉ॰कुसुमवार्ष्णेय
साहित्य भवन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 196

43· व्यक्तिवादी एवं नियतिवादी चेतना के सन्दर्भ में उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा डॉ· रमाकान्त श्रीवास्तव
वाणी प्रकाशन 53 एफ - कमलानगरी,दिल्ली-
प्रथम संस्करण 1977

44· जैनेन्द्र की प्रतिनिधि कहानियाँ - शिवनन्दन प्रसाद,पूर्वोदय प्रकाशन,
दिल्ली - 6, प्रथम संस्करण 1967

45· हिन्दी कहानियों की शिल्पविधि का विकास - डॉ· लक्ष्मीनारायण लाल,
साहित्य भवन, इलाहाबाद, चतुर्थ संस्करण
1974

46· सिंहावलोकन - यशपाल यशपाल
विप्लव कार्यालय, लखनऊ

47· यशपाल : व्यक्ति और कृतित्व - कृतित्व डॉ· सरोजगुप्त
अनुराग प्रकाशन ।

48· अज्ञेय : कथाकार और विचारक- प्रो· विजयमोहन सिंह
पारिजात प्रकाशन, डाक बंगला रोड, पटना

49· अज्ञेय गद्य में डॉ· ओमप्रकाश अवस्थी
1982

50· आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना - विजयमोहन सिंह
रचना प्रकाशन, इलाहाबाद,1972

51· अज्ञेय साहित्य : प्रयोग और मूल्यांकन - डॉ· केदार शर्मा, अ
अनुपम प्रकाशन, जयपुर ।

52• अज्ञेय का कथा साहित्य — ओम प्रभाकर
नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली-7

53• महाभारत कालीन समाज — सुखमय भट्टाचार्य
अनुवादिका पुष्पा जैन
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद प्र•सं•1966

54• बीसवीं शताब्दी हिन्दी साहित्य : नये सन्दर्भ - डॉ•लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय

55• हिन्दी की नयी कहानी का मनोवैज्ञानिक अध्ययन - मिथिलेश रोहतगी
शमिम बुक हाउस, मेरठ, 1979

56• कामसम्बन्धों का यथार्थ और समकालीन हिन्दी कहानी - डॉ•वीरेन्द्र सक्सेना
साहित्य भारती प्रकाशन, दिल्ली-51

57• जैनेन्द्र के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन - डॉ• देवराज उपाध्याय
पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली, प्र•सं•1968

58• मनोविज्ञान — नारमन एल• मन अनुवादक - आत्मारामशाह
राजकमल प्रकाशन, दिल्ली ।

59• हिन्दी उपन्यास और प्रेमजीवन - डॉ• शान्ती भरद्वाज
सुशील प्रकाशन, पुरानी मण्डी, अजमेर
प्रथम संस्करण 1969

60• मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल - डॉ• पारसनाथ मिश्र

61• नयी कहानी : उपलब्धी और सीमाएं - डॉ• गोरधनसिंह शेखावत,
रामा पब्लिशिंग हाउस, जयपुर-3

62· यशपाल व्यक्ति और कृतित्व - डॉ·सरोजगुप्त
अनुराग प्रकाशन, आगरा, प्रथम संस्करण

63· कहानी की संवेदनशीलता : सिद्धान्त और प्रयोग - डॉ· श्यामदास शर्मा
ग्रन्थम, रामबाग, कानपुर, प्रथम संस्करण, 1972

64· कथा साहित्य - मेरी मान्यताएं - डॉ· देवराज उपाध्याय
लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद ।

65· प्रेमचन्द पूर्व कथाकार और उनका युग - डॉ· लक्ष्मणसिंह बिष्ट
रचना प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, 197

66· फ्रायड मनोविश्लेषण अनुवादक देवेन्द्रकुमार देवालंकार
राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, द्वितीय
संस्करण 1960

67· जैनेन्द्र की कहानियां - प्रथम भाग - जैनेन्द्रकुमार
68· जैनेन्द्र की कहानियां - दूसरा भाग
69· जैनेन्द्र की कहानियां - तीसरा भाग
70· जैनेन्द्र की कहानियां - चौथा भाग
71· जैनेन्द्र की कहानियां - पांचवां भाग
72· जैनेन्द्र की कहानियां - छठा भाग
73· जैनेन्द्र की कहानियां - सातवां भाग
74· जैनेन्द्र की कहानियां - आठवां भाग
75· जैनेन्द्र की कहानियां - नवां भाग
76· जैनेन्द्र की कहानियां - दसवां भाग
77· तापसी चन्द्रगुप्त विद्यालंकार
78· पहला नास्तिक चन्द्रगुप्तविद्यालंकार
79· राख और चिनगारी भगवती चरणवर्मा
80· हमारी उलझन भगवतीचरण वर्मा

81.	दो बाँके	भगवतीचरण वर्मा
82.	इन्स्टालमेंट	भगवतीचरण वर्मा
83.	मोर्चाबन्दी	भगवतीचरण वर्मा
84.	मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ	भगवती प्रसाद वाजपेयी
85.	कबाड़ी का ताजमहल	भगवतीप्रसाद वाजपेयी
86.	आदान-प्रदान	भगवतीप्रसाद वाजपेयी
87.	मेरी प्रियकहानियाँ	भगवतीप्रसाद वाजपेयी
88.	दीवाली और होली	इलाचन्द्र जोशी
89.	दो धारा	उपेन्द्र नाथ अश्क
90.	मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ	उपेन्द्रनाथ अश्क
91.	पलंग	उपेन्द्र नाथ अश्क
92.	कहानी लेखिका और जेहलम के सात पुल	
93.	काले साहब	
94.	बैंगन का पौधा	
95.	जुदाई की शाम का गीत	
96.	पिंजरा	
97.	ज्ञानदान	यशपाल
98.	तुमने क्यों कहा था मैं सुन्दर हूँ-यशपाल	
99.	वो दुनिया	
100.	पिंजरे की उड़ान	
101.	भूख के तीन दिन	
102.	खच्चर और आदमी	
103.	चित्र का शीर्षक	
104.	ओ भैरवी	
105.	सच बोलने की भूल	
106.	फूलों का कुर्ता	
107.	उत्तराधिकारी	
108.	धर्मयुद्ध	

109· उत्तमी की माँ
110· तर्क का तूफान
111· भस्मावृत चिनगारी
112· जयदोल — अज्ञेय, भारती ज्ञानपीठ,काशी
113· अमरवल्लरी और अन्य कहानियाँ - अज्ञेय, सरस्वती प्रेस, बनारस
114· कोठरियाँ और अन्य कहानियाँ - अज्ञेय, सरस्वती प्रेस, बनारस
115· अछूते फूल और अन्य कहानियाँ - अज्ञेय, सरस्वती प्रेस, बनारस
116· जिज्ञासा और अन्य कहानियाँ - अज्ञेय, सरस्वती प्रेस, बनारस
117· ये तेरे प्रति रूप — अज्ञेय, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली
118· छोड़ा हुआ रास्ता — अज्ञेय, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
119· एक और जिन्दगी — मोहन राकेश
120· नाखिन
121· पहचान
122· क्वार्टर — कमलेश्वर
123· मोई हुई दिशाएं
124· मांस का दरिया
125· बयान
126· ढोल — राजेन्द्रयादव
127· किनारे से किनारे तक — वही
128· अपने पार
129· छोटे छोटे ताजमहल
130· जहाँ लक्ष्मी कैद है
131· टूटना
132· हिन्दी कथा कोश
133· हिन्दी साहित्य कोश

अंग्रेज़ी

1. An Introduction to the study of Literature
   William Henry Hudson
   George G. Harrap & Co. Ltd. London, Toronto, Sydney

2. Principles of Literary Criticism
   I.A. Richards, Routledge & Kegan Paul Ltd. Broadway House, 68-74 Carter Lane, E.C.4, London, Reprinted, 1963

3. The Basic writings of C.G. Jung
   Violet Staub De Laszlo
   The Modern Library, New York

4. Man and Woman — Havelock Ellis
   London, Walter Scott, Limited Paternoster square, 1899

5. The twentieth Century Novel - Joseph Warren Beach

6. The Novel and Authors — Somerset Maugham

7. Women and the new Race — Margarette Seiger, London

8. Aspects of the Novel — E.M. Forster, London, Edward Arnold and Co. 7th impression, August, 1945

9. Of Love and Lust — Theodor Reik

10. Encyclopaedia of Sexual Knowledge - A. Costler, M.D.
    A Willy, M.D., under the general Editorship of Norman Haire Ch.M. MB., Newyork COWARI- MC. CANN, INC 1934

11. The Erotic Motive in Literature - Albert Mordell - Collier Book New York, NY

12. Sex and Character — Ottoweininger - London - William Heinmann, New York G.P. Putman's Sons, U

13. An autobiographical study - S. Freud, Fifth Impression

14. Psychopatia Sexualis — Contrary sexual Instinct - A Medicolega study - Dr. Von KRAFT- EBING
    Translation of German edition
    Philadelphia - F.A. Davis Company, published in 1920

15. Sex/ literature and censorship - D.H. Lawrence, Edited by Harri T. Moore, William Heinmann Ltd. Melbourne, London, Toronto, First published in 1955

16. Study of psychology of sex - Havelock Ellis, Printed in USA Prof. F.A. Davis company, Philadelphia

17. My confessional Questions of our day - Havelock Ellis London, John Lane the Bodley Head Ltd. 1934

18. Love and Marriage - Ellen Key - G.P. Putnam's, New York an London, The knickerbocker press

19. The Holy Bible Knox version, school edition, London, Burns & Oats Ltd. Macmillan and Co. Ltd. 1964

20. Love, Marriage and sex - Dr. Premilla Kaur Vikas publicati ns, Delhi 1973

21. The Psychology of Dreams process - The Interpretation of Dreams - S. Freud

22. The Dreams as wishfulfilment - The Interpretation - S. Freud

23. Sexual behaviour in human male - A.C. Kinsey and others W.B. Saunders Co., Philadelphia. 1953

24. Seven psychologies Edna Heidbreder

पत्रिकाएं

भाषा - त्रैमासिक

आलोचना - त्रैमासिक

संचेतना

परिशोध

सम्मेलन पत्रिका

समीक्षा

वाजकम

सारिका

ज्योत्स्ना

धर्मयुग